१

मुझे मार्ग दो !

मुझे ज्योति दो !!

मुझे रास्ता दिखाओ !!!

मन्दिर के फिसलते संगमरमर के फर्शपर साष्टांग दण्डवत की मुद्रा में लेटकर वह कुछ देर तक उपर के मन्त्र को दुहराता परमात्मा के चरणों में लेटा रहा । आ‘‘खों से अविरल अश्रुधारा कुछ देर तक वहती रही, परमात्मा के चरणों के रुप में फिसलती संगमरमर के फर्श को धोती रही । फिर वह सबकी तरह अन्त में पुजारी के चरणों में लेटकर साष्टांग दण्डवत किया और चरणामृत पाकर, बच्चों के लिए प्रसाद लेकर घर की ओर चल दिया । तीन महीनों से संजय यह मार्ग, यह ज्योति यह रास्ता खोज रहा है । पर उसे समझ में नहीं आता कि वह क्या करें, क्या नहीं करे । परमात्मा का प्रसाद ले जाकर वह एक एक कर अपने सभी बच्चों के मु‘‘ह में उसी तरह रखता है जैसे चिडिया अपने छोटे छोटे बच्चों को उनके उडने से पहले खिलाती है । यही बच्चें हैं जो उसके पैरों में बेडिया‘‘ डाल दिये हैं । वह चाहकर भी इसलिए कहीं भाग नहीं जाता, जबकि कई वार वह कहीं भाग जाना चाहता है ।

परन्तु उसने आज ऐसा कर ही दिया । खूब भरपेट खाकर वह घर से इसलिए निकला कि कुछ दिनों तक भूखों रहने पर भी वह सह लेगा । जाते वक्त वह किसी से नहीं मिला, किसी से कुछ नहीं कहा परन्तु मन ही मन वह मा‘‘ के चरणों में लेट गया, पत्नी के

DO NOT COPY

ह‘‘सते चेहरे को देखा जिसको यह पता नहीं था कि उसके जाते ही यह चेहरा मुरझायेगा । उसने बच्चे के मासूम चेहरे को पुचकारा । घर से निकलकर वह पगडण्डी के रास्ते चलते हुए अपने गा‘‘व के चप्पे चप्पे को देखा, मसोसा और तरल नेत्रों से अभिवादन किया । उस वृक्ष से उसे ज्यादा ही लगाव था जो उसके भव्य वगीचे के कटने के वाद, वही केवल वच गया था । इतने दिनों के वाद जबकि सबकी भव्यता वढती जा रही थी, सारे संसार में जबकि चा‘‘द और मंगल पर जाने की प्रतिस्पर्धा वढती जा रही थी, वह अपने घर, अपने गा‘‘व, एवं अपने वागीचे को वर्वाद होते हुए देखा है । वह उस वृक्ष के पास गया, उसके चारों तरफ परिक्रमा किया और फिर न मिलने के अपराध के लिए क्षमा मा‘‘गते हुए अपनी राह पकड ली । इस तरह वह अपने गा‘‘व के लोगों से नहीं, अपने एक मात्र बगीचे एवं खेतों तथा खलिहानों से विदा लेकर, गा‘‘व छोड रहा था । उसे लगा जैसे आदमी कहलाने वाले जीव अब निर्जीव हो चुके हैं और इन्हीं खेतों, खलिहानों एवं वृक्षों में सजीवता समा गयी है । ये ही वे लोग हैं जो संजय को अपने गा‘‘व में बा‘‘धे रखते हैं अन्यथा कुछ भी नहीं है गा‘‘व में अब । पत्नी की वेवफाई को वह इसलिए सह गया, पिता के अन्याय को वह इसलिए सह गया, भाई की वेइमानी को वह इसलिए सह गया, गा‘‘ववालों की क्रूरता को वह इसलिए सह गया । अपने बच्चों की मासूम आ‘‘खों में वह उन्ही खेतों, खलिहानों, एवं पेडों की उदारता सहृदयता, कोमलता एवं भगवत्ता को वसा देने के

DO NOT COPY

लिए वह अब तक गा‘‘व में टिका रहा है। पर आज वह उसका मोह छोडकर, परमात्मा से मार्ग, ज्योति एवं रास्ता खोजता, निकल जाना चाहता है, निकल चुका है। धीमे धीमे कदमों से वह आगे बढता गया । वह

DO NOT COPY

कहां जायेगा, क्या होगा उसे कुछ पता नहीं ।

अटैची हाथ में लिए वह सडक पर गया, वस पर चढा और दो रुपये दिया जो उसके पास थे । फिर वह रक्सौल स्टेशन पर चला गया । यह स्टेशन ही जिस पर सैकडो रेल गाडिया चलती हैं , उसे कहीं पहु‘‘चायेगी । टिकट लिया गोरखपुर का और वगहा में रात गुजार कर, नारायणी मैया का रास्ता ना‘‘व से पार कर , शाम को गोरखपुर पहु‘‘च गया । उसके वाद उसे कही जाने के लिए पैसे नहीं थे । स्टेशन के वेंच पर बैठा वह अपने सम्पूर्ण जीवन का आकलन करने लगा जिसमें वह कभी ठीक से सो नहीं सका, जिसमें वह कभी ठीक से खा नहीं सका, जिसमें वह कभी ठीक से ह‘‘स नहीं सका । फिर भी वह चलता रहा, फिर भी वह परिश्रम करता रहा फिर भी मंजिल तय करता रहा, फिर भी सफलता को खींचकर लाता रहा । पर वह सफलता कहा‘‘ से वह लाये जो आने के वाद लोग उससे छीन लेते हैं । सारे परिश्रम, सारे पसीने को वह फलदायी तो वनाता रहा , पर फल को कौन खा जाता है, यह समझ कर भी वह अपनों को समझा नहीं सका, या वे अपने समझ नहीं सके । संजय की इस पींडा को कौन समझ सकता है । जिनको संजय के इस इमान्दार जीवन को ही गलत कहने की आदत पड गयी है वे कैसे समझ सकते हैं कि संजय की पींडा क्या है ?

भूखा पेट स्टेशन की कुर्सी पर बैठा वह क्या क्या नहीं सोच डालना चाहता था । इसी बीच रेलगाडी आयी और वह टिकट नहीं होने पर भी उस पर सवार हो गया । डिब्बे में कुछ लोगों से वह

DO NOT COPY

सुना कि अयोध्या इधर ही पडता है । वह जा तो कही रहा नहीं था इसलिए वह उनलोगों के साथ अयोध्या ही जाने का विचार कर लिया । क्या पता वही से उसे कोई राह मिले । उस पुरुषोत्तम की नगरी से जो सभी दुखों, विपत्तियों एवं आपदाओं को झेलकर भी जन जन के मानस में समाये हुए हैं । एक वार उसने इस विचार को झटक दिया क्योंकि इन राजे-रजवाडों का इतिहास ही गलत होता है । उसको विश्वास था कि इन राजे-रजवाडों का इतिहास विल्कुल एकतरफा होता है और इनको पढने वाले लोग वास्तविक इतिहास, जनता की वास्तविक सिसकियों से परिचित नहीं होते । उसका विचार है कि असली इतिहास को अगर फिर से लिखा जाय तो ये सारे राजे रजवाडे मुजरिम के कटघरे में खडें पाये जायेंगे । परन्तु पुरुषोत्तम राम के सम्बन्ध में संजय ने अपने इस विचार को झटक कर दूर कर दिया । स्टेशन से उतर कर उसके पा‘‘व अनायास अन्य लोगों के साथ सरयू तट की ओर मुड गये ।

कुछ देर के वाद साकेत नगरी तो आयी पर वह उसे कहीं से भी साकेत की तरह नजर नहीं आयी । वह सरयू तट पर वने पुल पर खडा होकर साकेत की कल्पनाओं में डूब गया । यही वह सरयू तट है जिसके वारे में वह कितना कुछ लिख चुका है, कितना कुछ सुन चुका है । उस सरयू तट को वह आज पहली वार देख रहा है । श्रवण के सीने में चूभता हुआ तीर, अपने हाथों में जलपात्र लेकर पछताता हुआ वह राजपुरुष और पुत्रशोक में छटपटा कर मरते हुए श्रवण के मा‘‘-वाप, सबको उसने देखा । मन्दिरों ही मन्दिरों वाली

साधारण अयोध्या नगरी को देखा और उसमें राम, लक्ष्मण, भरत, और सीता की महानता को याद कर खो गया । वही नगरी, वही सरयू के तट, वही धरती, सब कुछ वही । पेड, पौधे, नदी, नाले, खेत, खलिहान, गाय, वैल, इनमें से कोई नहीं बदला है । ये सब उस पुरुषोत्तम के समय में भी ऐसे ही थे, आज भी ऐसे ही हैं । पर आदमी को क्या हो गया ? वह भी वही, वैसा ही क्यों नहीं रहा ? उन्नति का मार्ग नहीं पकडा मनुष्य भी कम से कम उन्ही जानवरों की तरह वैसे का वैसा ही रहता । क्या चाहिए ? अगर आदमी पुरुषोत्तम के जमाने के अनुसार ही रहते तो आदमी के लिए और क्या चाहिए ? उसे किस उन्नति की जरुरत होगी ? अवनति की कितनी सिढियां तय कर चुका है मनुष्य तब से, इसका लेखा जोखा कौन लेगा ? कहा‘‘ है वह श्रवण, कहा‘‘ हैं वे मा‘‘-वाप, कहा‘‘ हैं वे दशरथ, राम, लक्ष्मण, भरत, सीता ? सिर्फ कौशल्या और कैकेयी के रुप को ही संजय आजतक अक्षुण, देखता रहा है । वा‘‘की सबकुछ समाप्त हो गया है, राख हो गया है जलकर सबकुछ ।

न जाने कबतक वह ऐसे ही सोचता रहा । फिर वह आहिस्ते से चल हरकी पौडी में स्नान कर नगर में प्रवेश किया । अनजान होने के कारण वह कुछ साधुओं के साथ हो लिया । जहा‘‘-जहा‘‘ वे साधु लोग गये, वहा‘‘-वहा‘‘ वह उनके साथ चलता रहा । सर्व प्रथम भोले शंकर का दर्शन कर वह हनुमान गढी की ओर चला । वहा‘‘ हनुमान भक्तों की लाठी खाकर भी वह उस अद्धितिय वीर राम भक्त का दर्शन किया । सभी जगह वह , यही मन्त्र दोहराता रहा ।

मुझे मार्ग दो !

मुझे ज्योति दो !!

मुझे रास्ता दिखाओ !!!

साधुओं से ही उसे पता चला कि यहा“ जगह जगह मुफ्त में खाना खिलाया जाता है जो वडे-वडे मारवाडियों एवं अमीरों के द्वारा आयोजित किये जाते हैं । संजय जानबुझ कर ऐसी जगहों का खाना खाना नहीं चाहा और वह उसने किसी साधु के पास ही खाना पसन्द किया । हनुमान गढी में एक ऐसा ही साधु मिल गया अथवा उस अद्‌वितिय वीर हनुमान की कृपा हुई । उस साधु ने उसे भरपेट पुडी ही नहीं खिलाई वल्कि उसके दुख को सुना एवं ३०।- उसे लौट जाने के लिए भी दिया । संजय की करुण कहानी से वह इसलिए विगलित हो गया था कि उसकी भी कहानी कुछ ऐसी ही थी जिसके चलते वह दुनिया“ से भागकर साधु हो गया था । संजय भागकर इन साधुओं की नगरी में आया तो था पर वह साधु होना नहीं चाहता था । वह क्या करना चाहता है, वह क्या करेगा इसके बारे में उसने कुछ सोचा नहीं था । वस वह चल चुका था, भटक रहा था, भटकना चाहता था । इसी भटकाव में उसे कही न कहीं कुछ ज्योति मिलेगी उसे ऐसा विश्वास था ।

पर उसका वह विश्वास टूटता हुआ नजर आया जब वह स्टेशन पर आकर गाडी की प्रतिक्षा करने लगा । वहा“ वह जाना नहीं चाहता था , जहा“ लोग उसे भेजना चाहते थे । हा“लाकि पैसा मिलने के वाद एक वार वह वहा“ चले जाने के वारे में भी सोचा था

DO NOT COPY

पर तुरत ही उसका स्वाभिमान जाग उठा और उसने एक झटके में वहा‘‘ जाने का विचार छोड दिया । इसी बीच एक साधु भी आकर वहा‘‘ वैठ गया और वात करते करते उसके मर्म एवं कहानी को जान गया । फिर तो वह साधु वहुत सी वातों को समझाते हुए संजय को घर लौट जाने को ही नहीं कह गया वल्कि वह उसे छितौनी घाट तक पहु‘‘चाने भी चला आया । उस साधु के तेज एवं आज्ञा के सामने वह नतमस्तक हो गया । जब तक वह साधु उसके साथ रहा किसी ने उससे कुछ नहीं पूछा । पर छितौनी घाट से वह साधु लौट गया । नारायणी पार कर वगहा स्टेशन पर गाडी पर वैठते ही टिकट कलेक्टर के रुप में मानो हनुमान गढी के संकट मोचन उसके साथ साथ चलते रहे और वह इसी को नियति मानकर घर का रास्ता पकड लिया ।

जब वह घर पहु‘‘चा किसी ने उसका स्वागत नहीं किया, किसी ने उससे कुछ नहीं पूछा मानों सभी इस वात को जानते थे कि घर से निकलने के वाद वह जायेगा कहा‘‘ और दश दिनों के वाद इधर उधर से भटक कर उसे घर आना ही पडेगा । यह वात उसको अन्दर से छलनी कर गयी, पर उसी समय कहीं से खेल कर आते हुए बच्चे गले से लिपट कर हंसने लगे एवं विभिन्न प्रकार के उलाहने सुनाने लगे । उसी समय मा‘‘ अपनी आ‘‘खों में आ‘‘सु भरकर उसके जिश्म को टटोल कर यही देखने लगी कि वह इस बीच कितना दुवला हो गया है । वस मा‘‘ की यही करु‘‘णा एवं अपने बच्चों के

प्रति अपनी इसी करुणा ने उसे व्याकुल कर दिया घर वापस लौटने को । इसलिए जव वह घर लौट रहा था उसके पा‘‘व खुशी से उठ रहे थे, पर यहा‘‘ रोज-रोज की तरह वह फिर उदास होने लगा । पत्नी जब रात को पा‘‘व दवाने आयी तो वह इसलिए उसको मना नहीं किया कि इसकी कृत्रिमता को उसने माफ कर दिया और उसके पीछे की वेवफाई को उसने एक ग्रामीण नादानी समझकर भूल जाना चाहता था । नागरिक सभ्यता की वेशर्मी एवं वेहयाई से उसकी वीवी की वेवफाई वहुत कम पडती थी । उसमें शहरी गन्दगी के मिश्रण का आभास मिला नहीं था ।

दिन गुजरते रहे, कलह वढता रहा । सम्बन्धों का फैसला अधिक होता रहा । व्यंगों एवं तानों से उवकर वह आखिर एक दिन हार मान गया और अपना वही अटैची उठाकर अपने काम पर चल पडा । माना कि सरकार वहा‘‘ भेजकर उसको सजा ही नहीं दे रही है वल्कि एक जूनियर के अन्तरगत रखकर काम करने की जहालत भी दे रही है । फिर भी इन व्यंगवाणों एवं तानों से मुक्ति के लिए दूसरा क्या रास्ता है ? माना कि उसके सारे सपने चकनाचूर हो गये, माना कि वह जिन्दगी के जिस शिखर पर पहु‘‘चने के लिए उडना चाहता था वहा‘‘ उसके पंख कुतर दिए गये, वह नहीं पहु‘‘चा वहा‘‘, पर समझौता तो कहीं न कहीं करना ही पडता है । समझौता का नाम सुनकर एक वार उसका मन खट्टा हो गया फिर भी वह मा‘‘ एवं बच्चों से विदा लेकर चल दिया । इस वार बच्चें उसे पहु‘‘चाने

DO NOT COPY

गये तो छोटका उसके साथ ही जाने के लिए मचलने लगा । वस छूटते समय उसकी आ‘‘खें वरसने लगी । इतने सुन्दर, विल्कुल कृष्ण की तरह बच्चे को छोडकर कहा‘‘-कहा‘‘ की खाक छाननी पडती है यहा‘‘ । खाक छानता रहा वह । अपने घर की समस्याओं को छोडकर वह इस देश ही समस्या को सुझलाने नहीं वल्कि व्यक्तिगत एवं राजनीतिक ईर्ष्या एवं द्वेष के कारण, राजशाही के कारण दर-दर ही खाक छानने के लिए अन्यन्त्र भेजा जाता है । कहा‘‘ जायेगा वह ? वही जहा‘‘ वह अपने किसी जूनियर के मातहत काम करेगा, जहा‘‘ सभी पपलू में वसे उसका मजाक उडायेंगे, जहा‘‘ शराव का कुल्ला करते हुए कर्मचारी उसके पूजा पाठ एवं सात्विक प्रवृति पर फव्तिया‘‘ कसेंगे । जब भी वह अपने अफिस में होता है या अफिसवालों के साथ होता है उसे लगता है, यह देश मुर्दा हो गया है जहा‘‘ सभी लोग किस रास्ते पर ढकेल दिये गये हैं कोई समझ नहीं सकता । नहीं वह वहा‘‘ नहीं जायेगा जहा‘‘ उसे काम करने के लिए सजा भोगने के लिए भेजा गया है । घर एवं गा‘‘व के व्यवहारों से विरक्त सरकार एवं नेताओं की क्रूरता तथा साथियों एवं हमउम्रों की दिशाहीनता से वह किंकर्तव्य विमूढ हो गया था । वह क्या करे, क्या नहीं करे यही सोचता, उधेडता वह गाडी पर बैठा ।

गोंडा स्टेशन पर उसे उतर जाना चाहिए था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया । उसी तरह वैठा वह लखनउ की ओर चला जाना चाहता था जहा‘‘ से वह अपने का‘‘लेज की सहपाठी से भेंट करने

जाने की उत्कट आकांक्षा से भर उठा था । लखनउ पहु‘‘चकर उसने गाडी का पता लगाया । ८ बजे सुवह दून एक्सप्रेस से वह अपने दोस्त के यहा‘‘ जाने के लिए सवार हो गया । जिस डिब्बे में वह चढा और जहा‘‘ वैठना चाहा वहा‘‘ एक अप्रतिम युवती को देखकर वह सकपका गया , पर युवती के मुख मण्डल पर झलकते भोलेपन एवं उसके साथ ही वैठे युवक के चेहरे के भाव को देखकर उसे किसी भय की आशंका नहीं हुई । वह सकुचाते हुए एक किनारे पर वैठ गया और कभी उस युवक एवं उस युवती की ओर टटोलती निगाहों से देखते हुए वहा‘‘ अपना आना अनुचित न समझते हुए वह वाहर के दृश्यों को देखने लगा ।

दून एक्सप्रेस तीर की तरह वढी चली जा रही थी । वाहर के पेड-पौधे, खेत खलिहान, नदी-नाले सभी अपनी जगह पर तीव्र गति से नाचती हुई चक्कर खा रही थी । संजय को लगा जैसे उसके अपने जीवन का भी वही हाल है । उसकी सब चीजे वही की वही चक्कर खा रही है पर उम्र गुजरती जा रही है, आगे वढती रही है । ट्रेन अपनी मंजिल पर पहु‘‘च जायेगी, चीजें वही की वही रह कर विदा हो जायेगी । संजय की उम्र गुजर जायेगी, वह मृत्यु की मंजिल पर पहु‘‘च जायेगी पर उसके अरमान, उसकी आकांक्षायें, उसके सपने सब चक्कर खाकर वही के वही समाप्त हो जायेंगे । क्या-क्या नहीं सोचा था उसने, पर कुछ भी पूरा नहीं हुआ था । उसने सोंचा था कि ....खैर अब, अपने बच्चों के सपने सजायेंगे पर उसके बच्चे भी उसी

की तरह सपने लेकर समाप्त हो जायेंगे , ऐसा लगा था उसे । बच्चे समाप्त हो जायेंगे, यह सोचते ही वह का‘‘प गया और हडवडाकर वाहर के दृश्यों से नजर हटाकर भीतर की ओर देखा । वीच में बैठी युवती की आ‘‘खें गीली हो चुकी थीं । एक वार ध्यान से उसने उसे देखा, उसकी वगल में बैठे युवक को देखा । युवती एक टक वाहर की ओर देखती हुई आ‘‘खें गीली करती जा रही थी । युवक कुछ भी नहीं कहता । तो क्या इस युवती से उस युवक का कोई सम्बन्ध नहीं ? उसकी गीली आ‘‘खें तो यही कह रही है ,वह अकेली है । दोनों युवक उसे दूसरे के सम्बन्धी समझ रहे हैं और किसी युवक का ऐसे अज्ञात साथ ने उसे वचाते हुए यहा‘‘ तक लाया था । संजय समझता रहा कि वह वगल वाले युवक के साथ है और वह उसकी वीवी या वहन होगी । दूसरा युवक यह समझ रहा था कि वह संजय के साथ है । इस तरह वह युवती एक दूसरे की निगाहों से वचती चली जा रही थी ।

अब संजय को समझ में आ गया कि वह लडकी अकेली है । वह कभी वाहर देखता और कभी युवती के चेहरे की ओर देखता । हर वार उस अप्रतिम सुन्दरता के बीच में पडे मुरझाये चेहरे एवं सागर सी गहरी आ‘‘खों में एक छटपटाहट, एक रहस्य नजर आया । उसने सोच लिया कि इस रहस्य को वह पता लगायेगा पर व्यक्त रुप में उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया । ट्रेन सरपट भागती जा रही थी । एक स्टेशन से दूसरे स्टेसन को छोडती सुवह से शाम

DO NOT COPY

हो गयी पर हिन्दुस्तान की विशाल भूमि नापने में नहीं आयी । इस बीच उसने देखा कि युवती ने कुछ भी नहीं खाया, कुछ भी नहीं पिया । जगह-जगह पर फलवाले, वादामवाले, चायवाले आते, सबलोग सबकुछ लेते, खाते ह‘‘सते पर उसने कुछ भी नहीं लिया । शाम होते ही संजय ने सोच लिया कि उसको क्या करना है । ज्योही एक जगह पर चायवाला आया, संजय के “प्लीज” शब्द ने एवं उसकी आ‘‘खों की निष्कपटता ने युवती को चाय लेने के लिए मजबूर कर दिया । दिन भर के दौरान उसने यही एक कप चाय का प्याला अपने हाथों में थामा था । वगल में बैठे हुए युवक को अब पक्का यकीन हो गया कि युवती संजय के ही साथ है । अब वह अपना चेहरा इत्मिनान से वाहर के दृश्यों की ओर घूमा दिया । आस-पास वैठे हुए लोगों को भी ऐसा ही लगा । अब चाय पीते हुए चुपचाप संजय एवं युवती की आ‘‘खें एक दूसरे को देखते एवं घूरते रहे । होठो ने कुछ नहीं किया, वस आ‘‘खें ही एक दूसरे के भेद, एक दूसरे की गहराई, एक दूसरे की सौम्यता, एक दूसरे की इन्सानियत, एक दूसरे के वहसीपन, एक दूसरे की जवानी एवं एक दूसरे की उलझनों को नापती रहीं । इस तरह अ‘‘धेरा होता गया पर अंधेरे में भी आ‘‘खें चमकती रहीं । आखिर इन आ‘‘खों ने एक दूसरे को समझ कर निश्चिन्तता की ओर अग्रसर हुई और झपकिया‘‘ लेने लगीं । जब गया स्टेशन आया तब रात के नौ बजे थे । हिचकोले लेकर ट्रेन रुकी और उसी हिचकोले के साथ संजय एवं युवती का

DO NOT COPY

वदन भी एक दूसरे से टकराया । पलभर के लिए दोनों ओर रोंमांस फैल गया और दोनों ने अपने अपने शरीर को दूर खिच लिया । लोग उतरने चढने लगे । वह दूसरा युवक भी वही उतर गया । वहा“ ट्रेन को १५ मिनट रुकना था जहा“ खाना खाकर फिर यात्री आगे वढते हैं । अब संजय ने युवती से कुछ पूछना उचित समझा और वोला

“कहा“ जायेंगी आप ?”

“युवती कोई जवाव न देकर चौंक पडी । मानो इस अप्रत्यासित प्रश्न के लिए वह तैयार नहीं थी । फिर मानों बुझती हुई आ“खों से वह अनायास बोल उठी ।

“कही भी ।”

“कहा“ से आ रही है आप ?”

“नेपाल से ।”

“नेपाल से ?” संजय ने इस प्रश्न को ऐसे दुहराया जैसे उसे उस युवती के उत्तर से घोर आश्चर्य हुआ हो । वह उस अप्रतिम युवती की ओर अधिक गौर से देखने लगा जो इस हिन्दुस्तान के ट्रेन में उसे कहीं से भी नेपाली युवती की तरह नहीं लगी थी । सुन्दर साडी में लिपटी हुई, गौरवर्ण, उच्च ललाट, लम्बी नाक एवं मछलियों जैसी वडी बडी आ“खें । अब कोई प्रश्न न करके वह उस युवती को पढने लगा पर वह कहीं से भी उसे गलत नहीं पढ सका । युवती भी तनिक भयभीत होने को हुई पर उसे भी वह युवक कही से गलत जैसा नहीं लगा । फिर भी उसने सकुचाते हुए पूछा :

DO NOT COPY

“क्यों आपको आश्चर्य हुआ ?”

“नहीं उत्तर से नहीं वल्कि संयोग से आश्चर्य हुआ ।”

“कैसा संयोग ?”

“यही कि .... कि..... कि..... मैं भी नेपाल से ही ...... ।”

युवती की आ‘‘खें एक वार घोर वादल में घीरी विजली की तरह चमकी जैसे अपने देश का नाम सुनकर वह कौंध गयी हो , पर फिर तुरत बुझ सी गयी । उसने संजय के चेहरे को देखा और उसकी आ‘‘खें फिर चमक उठी । उसका मन कह उठा कि वह युवक उसी की तरह नसीव का मारा हुआ एक युवक है । यह वहसी नहीं हो सकता । अब उसे आश्चर्य हो रहा था क्योंकि युवक भी उसे कही से नेपाली युवक की तरह नहीं लगा । लम्बा कद, सूट-टाई में सजे उसके लम्बे वदन पर एक सौम्य चेहरा दपदपा रहा था । उसे कहीं से भी वह घटिया स्तर का इन्सान नहीं लगा । इस विचार के आते ही उसकी आ‘‘खें एक वार फिर चमकी और चेहरे पर सौम्यता एवं होठों में तनिक मुस्कुराहट विखेर कर बोली :

“अजीव इत्तिफाक है !”

“क्या यह इत्तिफाक आपको अच्छा लगा ?”

अब दोनों की आ‘‘खें एक दूसरे की आ‘‘खों से मिली और वे एक टक एक दूसरे की आ‘‘खों में देखने लगे । वहुत देर तक दोनों एक दूसरे को एक दूसरे की आ‘‘खों में देखते रहे । थोडी देर के वाद

DO NOT COPY

युवती की आ‘‘खों से दो दो वू‘‘द आंसु टपक पडे । युवक ने अपनी आ‘‘खें नीचे भ्रुकाकर जैसे अपनी भूल के लिए क्षमा मा‘‘गने लगा ।
“लगता है जैसे मैंने आपके मन को दुखित किया, मुभ्रे क्षमा करें ।”
“सच तो यह है जैसे किसी ने आज तक मेरे मन को इस तरह नहीं दुखाया । कहा‘‘ जाना है आपको ?”
“मैं ? यही उतरु‘‘गा ।”

इसी बीच गाडी ने सीटी दी । ९-१५ वजे रात्रि में अब फिर गाडी उसी रफ्तार से चल पडेगी जिस तरह वह लखनउ से भागती हुई यहा‘‘ तक पहु‘‘ची है । संजय ने हाथ जोड कर नमस्ते किया और उठ खडा हुआ । युवती की आ‘‘खों से फिर आ‘‘सुओं की बू‘‘दे लुढक गयीं । जैसे वह किसी साथी से विछुरी जा रही हो । युवक के उठते ही उसके पीछे-पीछे वह भी चल पडी । सभी लोगों ने उसकी ओर देखा । गेट के पास जाकर युवक मुडा और अपने पास ही युवती को पाकर जैसे उसे पहले ही मालूम दास्तान की तरह लगा । वह स्टेशन पर नीचे उतरा और हाथ बढाकर उस युवती को नीचे उतारा । दोनों के हाथों के छुअन से दोनों के अन्दर विजली सी कौंध गयी । युवक आगे-आगे, युवती पीछे-पीछे चल पडी । स्टेशन के वेंच पर दोनों जाकर बैठ गये । अब दोनों वहुत पास पास बैठे थे । दोनों चुप-चुप कभी गहराई रात को, कभी अपने आप को, कभी एक दूसरे को और कभी स्टेशन के भव्य ट्यूवलाइट को देखते रहे । इतने में कोई पैंकिग का खाना लेकर आया और संजय ने दो पकैट खाना ले

लिया । एक को वह युवती की ओर वढाया । युवती ने विना हिचक उसे अपने हाथों में थाम लिया । दोनों ने खाना खाकर पानी पीया और रात वही गुजारने लगे । थोडी ही देर के वाद दोनों को निन्द आने लगी । दोनों उसी वेंच पर सो गये । जब निन्द टूटी तो तीन वजे भोर हो गया था । युवक उठा, युवती उठी । संजय आगे-आगे, युवती पीछे-पीछे । एक रात के छोटे से परिचय ने दोनों के अजनवीपन को अब मिटा दिया था । इसलिए स्टेशन से वाहर आकर जब संजय रिक्से पर बैठा तब युवती भी बेहिचक उस पर वैठ गयी । दोनों रिक्से पर विल्कुल सट कर बैठे थे । आसमान पर तारे जगमगा रहे थे , चा‘‘दनी चारों तरफ छिटकी हुई थी ।

“कहा‘‘ चलोगे साहव ?” रिक्से वाले ने पूछा ।

“वोध गया ।”

“बोध गया ? इसी समय ?”

“हा‘‘ इसी समय, जल्दी लौटना है ।”

थोडी देर के वाद वे बोध गया पहु‘‘च गये । युवक आगे आगे और युवती पीछे पीछे चल रही थी । सुनसान अकेले में वह थोडी हिचकी तो थी पर तुरत उसने मन को मजबूत कर लिया था । भविष्य के सभी हादसों के लिए वह तैयार थी । परन्तु इस युवक को छोडने के लिए वह तैयार नहीं थी ।

“तुम मुझे कहा‘‘ लिए जा रहे हो ?” युवती ने अब मौन तोडा

“मैं नहीं , तुम खुद मेरे साथ आ रही हो क्यों ?”

“तो क्या मैं लौट जाउ‘‘ ?”

DO NOT COPY

“तो फिर मुझे भी लौट जाना होगा । मैंने यह कदम तेरे साथ होने के वाद उठाया है ।”

“इसका मतलब तुम मुझे कहीं लिए जा रहे हो ।”

“हा“ ।”

“पर कहा“ ?मुझे तो डर लगता है ।”

“अब तुम मतलब की वात पर आने लगी हो ।”

“क्या मतलव ?”

“यही कि यह डर, यह भय इसी को मैं तुम्हारे मन से हटाने जा रहा हू“ ।”

“तो क्या आप जानते हो कि मैं डरी हुई हू“ ?”

“कह सकता हू“, पर जानती तो आप ही हो ।”

इतने ही में वह विशाल वृक्ष आ गया । उसके चवूतरे पर दोनों वैठ गये ।

“क्या अब तुमको कोई डर लगता है ?”

“अजीव वात है, यहा“ आते ही मैं विल्कुल तृप्त जैसे लगने लगी हू“ । रास्ते में मैं कभी कभी डरती रही हू“, पर यहा“ आते ही एक अजीव शान्ति, एक मोहक विश्राम मन में महसूस होने लगा है । ऐसा

क्यों ?”

“वस इसी के लिए मैं तुम्हें यहा“ लाया था । मैं जानता था कि तुम भयभीत हो । मैं जानता था कि तुम क्लान्त हो चुकी हो । मैं जानता

था कि तुम दुखी हो और मैं तुमको बतला दू“ कि मैं भी यही सब हू“ । इसलिए मैं अपने आप को और तुमको, यहा“ तक खींच लाया हू“ । यह दुख, यह क्लान्ती यह भय सवको हटाने के लिए । यहा“ आकर सभी अभय, शान्ति और विश्राम प्राप्त करते हैं ,दुश्चितांओं से दुर हो जाते हैं । जानती हो इस वृक्ष को ?”

“नही”

“यह वही बोधी वृक्ष है जहा“ भगवान बुद्ध हम दोनों की तरह नेपाल से आये थे । इसी बोधि वृक्ष के नीचे उस युवती ने उन्हें खीर खिलाया था और भगवान बुद्ध की तपस्या सफल हुई थी । सारा ज्ञान, सारी शान्ति को उसने यही महसूस किया था ।”

अब जाकर युवती को, इस युवक के उ“चेपन का एहसास हुआ । हमारे साथ को पक्का करने के लिए कैसी विचित्र, कैसी उ“ची, कैसी पवित्र जगह को चूना है इसने ? उसने एक वार उस वोधि वृक्ष को देखा जो चा“दनी रात में हजारों वर्ष से अपनी छटा विखेर रहा था । फिर उसने हिरनी की तरह चारों ओर से नजर हटाकर युवक की आ“खों में आ“खें डाल दी । अब वह विल्कुल निश्चिन्त हो गयी थी । एक पल दोनों एक दूसरे को देखते रहे । युवती की आ“खों से फिर उसी तरह आ“सू के दो वू“द लुढके, युवक की आ“खों से भी इसवार आ“सू छलछला आये । दोनों के हाथ एक दूसरे के आ“सू पोंछने के लिए वढे , पोंछे और फिर अचानक एक दूसरे के सीने से ऐसे लिपट गये जैसे वर्षो का बाध

DO NOT COPY

तोडकर उमड पडे हों । दोनों इसी तरह कितनी देर तक लिपटे रहे जैसे दोनों एक दूसरे से कभी जुदा होना ही नहीं चाहते हों ।

“तुम्हारे उ‘‘चेपन को मैं क्या कहू‘‘ ? ऐसा उ‘‘चापन मैंने कही नहीं देखा ।”

“शर्मिन्दा कर रही हो ?”

“भगवान बुद्ध को तो उस युवती ने खिर खिलाया था । पर मैं तुमको क्या खिला सकती हू‘‘ ।”

“क्यों, खिला तो रही हो ।”

“मैं संमभ्की नहीं ।”

“यह आ‘‘लिगन, यह प्रेम, यह शान्ति तुम ही तो खिला रही हो ।”

“क्या नाम है तुम्हारा ।” अब युवती भ्केंप गयी थी ।

“संजय । और तुम्हारा ?”

“रचना ।”

“संजय । ”

“रचना ।”

“संजय ।”

“रचना ।”

“संजय ।”

“रचना । ”

“नहीं ।”

“ तो ?”

“संरचना ।”

DO NOT COPY

“संरचना ।”

“संरचना ।”

एक दूसरे की वाहों में लिपटे वे उसी तरह वडी देर तक संरचना, संरचना कहते रहे । घूमते रहे, चूमते रहे । उस वोधि वृक्ष की सारी शान्ति सारा मोक्ष, सारा विश्राम, सारी भगवत्ता उनके अन्दर उतर चुकी थी । दोनों वेवस, दोनों मजवूर एक दूसरे को मदहोस करते हुए । न जाने दोनों ने कव उस गहनतम क्षण को महसूस किया कब उस गहनतम अमृत को पान कर एक दूसरे की वाहों में समाये हुए , लूढक गये, सो गये, कुछ पता नहीं चला । जब आ“खें खुली, भोर हो चुका था, सूरज की पहली किरण दोनों के चेहरे को चुम रही थी । कैसा विचित्र ! कैसा पावक !! कैसा पावन !!! रचना ने धीरे से संजय को जगाया ।

DO NOT COPY

२

मेरा दूसरा नाम यशोधरा भी है । इस धरा का यश, इस भूमि की इज्जत । मैं रचना श्रेष्ठ । विश्व की सवसे उपजाउ“ भूमि की पैदावार ! कव पूर्वजों ने आकर उस विशालतम झील से कृष्ण के द्वारा वनायी गयी भूमि पर वास किया, इसका कोई पता मुझे नहीं दिया गया । पर कीर्तिपुर में हमारे हजारों वर्षो की पीढीया“ चलती आ रही हैं जहा“ के लिए मैं अजनवी हू“ । कई सौ वर्ष पहले एक भयानक युद्ध ने हमारी सारी शान्ति, हमारे सारे उत्सव हमारे सारे कलरब वन्द कर दिये । हमारी सारी चहचहाहट छीन ली गयी हमसे । तब से आज तक हमारे पूर्वजों ने कभी चैन की सा“स नहीं ली । यहा“ से वहा“, वहा“ से यहा“ हम भटकते रहे । कही कोई पनाह हमारी उस धरती की माफिक नहीं बैठा जो हमसे छीन ली गयी , जहा“ से हम उजाड दिये गये । एक अज्ञात आकर्षण, एक अज्ञात प्रेम, एक अज्ञात तरस से भरे रहे हम, उस धरती के लिए । पर वह धरती .... । आक्रमणकारियों की याद सहेजे आज भी हमारे सामने हमारे घाव लिए पडी हुई है ।

भयंकर रक्तपात के वाद हमारी धरती हमसे छीन ली गयी । हमारे नाक, कान, छातिया“ इसलिए का“ट ली गयीं कि हम वीरतापूर्वक लडे थे । हमने केवल सैनिकों और राजाओं पर ही भरोसा नहीं किया था । सारी जनता सडक पर आकर अपनी आजादी, अपनी स्वतन्त्रता, अपने प्रजातन्त्र के लिए लडा था । परन्तु बैशाली के अपूर्व

DO NOT COPY

प्रजातन्त्र पर क्रूरता एवं तानाशाही हावी हो गया और हम हमेशा हमेशा के लिए गुलाम हो गये । वह गुलामी आजतक वदस्तूर कायम है ।

इस भय, इस आतंक, इस मजवूर गुलामी से वचने के लिए हमारे पूर्वजों ने कीर्तिपुर छोड दिया ।कोई कटी नाक, कोई कटी छातिया“ लेकर लूटी हुई अवस्था में । पैदल निकले लोगों का काफिला इधर उधर विखरते गये । कोई खाये वगैर रास्ते में, कोई पीडा से छटपटाकर जंगलों में, कोई उनके सिपाहियों के भय एवं दहशत से नदियों एवं गुफाओं में प्राण त्याग दिए ।

कहा“-कहा“ भटके उनलोगों ने, न हम जानते हैं न तुम जानते हो । परन्तु उस भटकाव को हमारी पीढी भूलकर अब मर चुकी है, ऐसा लगता है । भटकते, छुपते, छुपाते पर प्रकृति से अपने वंशजों की कामना करते, भूख में भी किलकारियों के बीच खुशी की बू“दे समेटते हमारे पूर्वज यहा“ से वहा“ भटकते रहे । कही स्थायी पनाह नहीं मिला । हमारी यह खडी नाक जिस पर तुम फिदा हो गये हो, कटी नाक के इतिहास से शुरु हुई है ।

इसी तरह भटकते - भटकते हमारे पूर्वज गोरखा पहु“चे । जिन लोगों ने हमारी स्वतन्त्रता छीन कर हमारी भूमि पर वस गये थे, हमारे पूर्वज उन्हीं की जमीन पर पहु“चे । तब तक आग शान्त हो चुकी थी, बाघ को मनचाहा शिकार मिल चुका था, अब वह अपने भरे पेट, भरी कामनाओं के साथ सारे जंगलों को अपनी रैयत समझने लगा था । फिर भी भूखे भेडियों से वचने के लिए हमारे

DO NOT COPY

पूर्वज गा‘‘व को चुना, शहर को नहीं । एक छोटे से गा‘‘व में बसकर हमारे पूर्वज अपनी आजिविका कमाने लगे । कौन सा गा‘‘व है वह, इसे जानकर क्या करोगे ? उसका कुछ भी नाम हो सकता है । वही पर वे खेतों में काम करते, जीवन के संघर्षों में आकंठ डूबकर हमारे नाना अपने वंशजों का पालन पोषण करते रहे । कई वहनों के चले जाने के वाद वची थी मेरी मा‘‘ और कई भाइयों को छोडकर एक भाई बचा था । मा‘‘ की मा‘‘ गोरखा आने से पहले ही चल वसी थी ।

जीवन का नियम, प्रकृति की पुकार एक दूसरे रास्ते से चलती है । जिस रास्ते से हम चलते हैं, प्रकृति उसी रास्ते से नहीं चलती । प्रकृति अपने रास्ते चलती रही है, उसके रास्ते में कोई व्यवधान नहीं डाल सकता । जिसने भी उसके रास्ते में व्यवधान डालने की कोशिश की उसे वह वडी वेरहमी से कुचल डालती है । जिसने भी उसे सजाया, सवा‘‘रा, उसे वह अपना अप्रतिम प्रेम लुटाती चलती है । गोरखा में आकर भी हमारे पूर्वजों ने देखा कि प्रकृति का प्रेम रोज यहा‘‘ भी फूल खिलाती है, धरती यहा‘‘ भी प्यारी है, जंगल पेड यहा‘‘ भी सुहावने हैं, आसमान यहा‘‘ भी विशाल है । अब वे यही पर रचने, वसने लगे, इसे ही अपना मानने लगे फिर भी इस कसक को आजतक हम कभी नहीं भूल सके कि हमारे पूर्वजों की मिट्टी कीर्तिपुर से आयी है । गोरखा के ब्राहमणों के झुण्ड के झुण्ड अब हमारे यहा‘‘ वसने जाने लगे और उनके अधिकारों,

अत्याचारों से निजात पाने के लिए हम कान्तिपुर छोड छोड कर पूरे देश में विखरते गये । हमारे पूर्वजों के हिस्से में गोरखा आया ।

धीरे-धीरे जब खेत खलिहानों की कमाई से पेट भरना मुश्किल होता गया तब हमारे नाना ने व्यापार का रास्ता अपनाया । पहले एक छोटी सी दुकान से शुरुआत हुई और व्यापार के इस वरदान ने पिता जी को विभिन्न जगहों से जोडा । गोरखपुर, पोखरा, लखनउ आदि विभिन्न जगहों को देखने का सौभाग्य मिला । इसी सिलसिले में वे अपनी मातृभूमि काठमाण्डू से भी जुडे । पर तबतक वहा‘‘ उनका कोई भाई वन्धु नहीं होने के कारण, गोरखा में ही अपना संसार वसा लेने के कारण एवं सबसे बढकर गोरखाओं के भय एवं आतंक के कारण उन्होंने अपनी मातृभूमि में वसने का मोह छोड दिया । और जगह हो न हो पर काठमाण्डू में गोरखाओं का आतंक यथावत था । परन्तु नाना जी को अपने व्यापार के फैलाव के लिए गा‘‘व छोटा पड रहा था । वे गोरखा में आकर वसने और वही से किसी प्रकार अपने लडकियों की शादी काठमाण्डू में करने की ठान ली । तबतक हमारी मा‘‘ एवं मामा जी जवान हो गये थे ।

पर यह प्रकृति एवं पुरुष की आदिम चाह कहू‘‘ या प्रेम का नैसर्गिक आकर्षण कहू‘‘, नाना जी की यह लालसा पूर्ण नहीं हुई । नाना जी को केवल अपने पुत्र को लेकर ही गोरखा आना पडा । मा‘‘ जी को लेकर वहुत ही हंगामा हुआ । वह उसी गा‘‘व के एक व्राहमण युवक पर आशक्त हो चुकी थी । उसे क्या पता था कि इन्ही व्राहमणों

DO NOT COPY

एवं गोरखाओं ने उसकी अपनी नगरी पर कितने जुल्म ढाये थे । मा‘‘ ने पिता जी के साथ काठमान्ड जाने से साफ इन्कार कर दिया पर उसे क्या पता कि पिता उसके इन्कार से नाराज नहीं हुए थे । वह तो मा‘‘ को असलियत वताकर मना ही लेते पर वे तो उस व्राहम्ण युवक के आतंक से डरकर अपने प्राणों से प्यारी पुत्री का मोह त्यागकर गोरखा की ओर कूच कर दिये थे । यह वात तो मा‘‘ को तब पता चला जब उस गोरखा की हवस का शिकार होकर हमारी मा‘‘ गर्भवती हो चुकी थी और अब न वह उस व्राहमण युवक के भान्से की शोभा थी और न सेज की । उसके घरवालों ने नेवार जैसे विजातिय ही नहीं वल्कि वीजित जाती को अपने भान्से में घुसना मना कर दिया तथा अपने पुत्र की शादी एक दूसरी व्राहम्णी से कर पतिगृह एवं सेज गृह से निष्कासित कर दिया । इस तरह मेरी मां का स्थान उस गा‘‘व की एक टूटी भ्फोपडी में हुआ जिसमें वह उस व्राहमण गोरखा की रखैल पद पर आसीन हुई । उस पद की मर्यादा को निभाती हुई मेरी मा‘‘ ने ठीक समय पर मेरा जन्म दिया और अपना ध्यान मेरे पालन पोषण पर खर्चना शुरु किया । समय वीतता गया और पुरुष एवं प्रकृति का प्रेम नहीं वल्कि आदमी की आदिम प्यास ने मेरी और दो वहनों को जन्म दिया । मा‘‘ बूढी हो गयी । पिता ने तबतक उसे क्षमा कर दिया था परन्तु उसकी अपनी उम्र उसकी अपनी भटकाव उसके अपने समय ने उसे क्षमा नहीं किया था । इसी बीच मेरा मामा कहीं लापता हो गया और इस हादसे को

सह न सकने के कारण नाना जी चल वसे । सारे व्यापार, सारी गृहस्थी उसी तरह उजड गयी जिस तरह कीर्तिपुर के लोगों के सपने उजड गये थे ।

समय वीतता गया । दृश्य वदलते गये । सब कुछ विस्मृत होकर भी विस्मृत न हो सका । मैं अपनी पिता की लम्बी नाक लेकर खडी हो गयी । कलिया फूटने लगी, मन मचलने लगा । यह हरजाई जवानी और खून पता नहीं क्यों उबलने लगता है । कहा‘‘ से पतन के कीडे समा जाते हैं इसमें , क्यों समा जाते हैं इसमें, कौन सा प्रयोजन होता है, कुछ कह नहीं सकती । एक चिथडा सुख के लिए चातक की तरह तकती जवानी को पता नहीं कि जमाने के चा‘‘द से चा‘‘दनी नहीं आग वरसते हैं । इस आग को अपने मुख में रखकर चातक को सुख नहीं मिलता वल्कि उसका जीवन स्वाहा हो जाता है ।

यौन की उद्याम लालसा मेरे अन्दर भी लहराने लगी, यौन की उद्याम लालसा मेरे अन्दर भी लहराती है, यौन की उद्याम लालसा मेरे अन्दर भी लहरा रही है पर उस लालसा का अर्थ मैंने उस रुप में नहीं लगाया था जिस रुप में जीवन में मुझे मिला अथवा मेरे जीवन को दिया गया । मेरे चारों तरफ म‘‘डराते हुए नवयुवकों में से एक गम्भीर एवं मुख से मौन रहने वाले की लालसा को मेरा मन धीरे धीरे स्वीकार करने को राजी होने लगा । उस युवक ने कभी अपने मुख से मुझसे कुछ इजहार नहीं किया और मुझे लगा कि मेरे अन्दर की लालसाओं के इजहार का यही सर्वोत्तम तरीका है । परन्तु

मेरे अन्दर के पंक्षी को उडने से पहले ही उसका पर कुतर दिया गया । मैं समझ भी नहीं सकी कि आदमी के अन्दर के प्रेम का, आदमी के अन्दर की लालसाओं का, इस कदर खून कर दिया जाता है । इस लम्बी नाक को मेरे स्तन को कीर्तिपुर की निष्कपट युवतियों की छातियों की तरह फिर काट दिया गया ।

गजब तो यह है कि यह नाक यह स्तन फिर वही पर ले जाकर काटे गये जहा“ पर हमारे पूर्वजों के काटे गये थे । उसी कान्तिपुर उसी काठमाण्डू नगरी में जहा“ जाकर एक वार तो मैं ऐसी चहकी थी मानों अपनी उस मातृभूमि को सदियों से अपने खून में वहाती चली आ रही हू“ । मातृभूमि की इस पुकार पर कब “ये क्या जगह है दोस्तों, ये कौन सी दयार है ” ! गुनगुनाने लगी मुझे कुछ पता नहीं ।

कव मेरी आ“खें वरसना शुरु हुई और कब तक वरसती रही, मुझे कुछ पता नहीं चला । मैंने उस नगरी में लोट लोट कर उसकी मिट्टी से अपने वक्षस्थल को रंग डाला । मेरे वक्षस्थल में लिपट कर मेरी मिट्टी कितनी महान हो चुकी थी अथवा उस मिट्टी को पाकर मेरा वक्षस्थल कितने महान हो गये थे इसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकती । वस वडी देर तक मैं अपने वक्षस्थल को निहारती रही थी । अपने रुप, अपनी नाक, अपने वक्षस्थल देख कर निहाल हो गयी थी मैं मानों मेरे अन्दर को उसका वास्तविक गौरव आज प्राप्त हुआ है । परन्तु शीघ्र ही मेरा यह गौरव चूर हो गया था, मेरा वक्षस्थल काट

लिया गया था और उसके साथ ही उस मिट्टी की क्या दुर्दशा हुई थी इसको कौन इतिहासकार लिख सकता है ?

गोरखा की एक गली में एक रात दोहरी गीत का आयोजन हुआ था । इस लोक नृत्य और इस लोक गीत में शामिल होने का यह मेरा अन्तिम दिन था । उसके वाद से फिर कभी मैं अपनी इस संस्कृति से नहीं जूट सकी । वह युवक उसमें खडा नहीं हुआ था, पर दूर खडा वह मुझे देखे जा रहा था । मैंने भी उसे देखा कि वह मुझे लक्ष्य कर रहा है । मेरी आ‘‘खें भी उसे लक्ष्य करने लगी । धीरे धीरे गीत से मेरा मन उखडता गया और मैं केवल रात गहरा जाने का इन्तजार करती रही । अचानक मन एकदम उचट गया और मैं उस लोक नृत्य से उठ पडी । वह युवक जो मुझे लक्ष्य करके चल पडा था, भी आगे आगे हो लिया । किसी एकान्त में जाने की वात विन कहे, विन बोले ही उसको भी पता चल गया था और मुझे थोडी देर के वाद वह क्षण भी आ गया । पर ज्योंही हम एक दूसरे की ओर मुखातिव हुए एक टार्च की तेज रोशनी ने हम पर वज्रपात कर दिया । हमारा प्रेम जो अंधेरे की रोशनी में अपनी कहानी लिखने जा रहा था, टार्च की रोशनी के अंधेरे में हवा हो गया । हमने न एक शब्द बोला था, न मिला था पर हम दोनों को अलग हो जाना पडा । टार्च की रोशनी भी, लम्बी नाक वाले मेरे वाप ने जलायी थी ।

जिसने मेरा कभी कोई फिकर नहीं किया, जिसको मैंने कभी अपना वाप कहकर नहीं बुलाया, जिसकी अंधेरी गली में मेरी मा‘‘ एक असहाय रखैल वनकर दम घोंट रही थी, वह अचानक मेरा वाप

वन गया था। टार्च की रोशनी में ही उसने हम दोनों की पीटाई की, फिर गा‘‘व के पंचायत में हमें जलील किया गया। उस युवक ने जव मुझे स्वीकार करने की वात कही तब मेरे वाप ने ऐसा थप्पड जमाया कि वह फिर कुछ नहीं कह सका। उसकी आ‘‘खें उसे ऐसे घूरने लगी मानों, मानों मगरमच्छ की तरह उसके सम्पूर्ण अस्तित्व को निगल जायेगी। हमारे अन्दर उस व्राहम्ण का रक्त वह रहा था जिसका सम्बन्ध अब केवल गोरखा में ही नहीं वल्कि नेपाल के राजमहल तक पहु‘‘च चुका था। इस व्यक्ति की लडकी पर भला गा‘‘व का एक अदना नवयुवक कैसे नजर उठा सकता था। और सचमुच उसने नजर नहीं उठाई वल्कि अपना सम्पूर्ण सामान उठाकर एक दिन गा‘‘व से चला गया। मेरे वाप के द्वारा अपने परिवार के शोषण, जहालत एवं अपमान को वह वर्दास्त नहीं कर सका। वह तो मैंने वाद में सुना जवकि उस पंचायत के दूसरे ही दिन मुझे काठमाण्डू ला दिया गया। उस रात मुझे कीर्तिपुर में रखा गया जहा‘‘ की मिट्टी मैंने अपनी छातियों में लगायी थी। दो रातें मैंने वहा‘‘ गुजारी पर न दिन मेरे थे न रात मेरी थी। मैं यहा‘‘ क्यों लायी गयी हू‘‘, किस लिए लायी गयी हू मुझे कुछ पता नहीं चला था। चलते वक्त मैंने अपनी मा‘‘ की आ‘‘खों में आ‘‘सुओं के सैलाव के साथ ही दहशत का मिलावट भी देखा था। पर यह दहशत मेरी समझ में नहीं आया था। उसके वाद मेरा वाप मुझको लेकर चला था। गोरखा से पैदल काठमाण्डू, कई रात, कई दिन। उन सभी रातों

पर वाप ने अपना अधिकार जमाना चाहा था पर हर वार मैं यह देखकर अचम्भित होती रही कि वाप कहलाने वाले इस नरपिशाच को कौन रोक देता है । पर कुछ था कि उसे रोक देता था । यह वात मुझे तब पता चला जब मुझे कीर्तिपुर में अपनी दो राते गुजारने के वाद मुझे वहा‘‘ पहु‘‘चा दिया गया था जहा‘‘ मुझे पहु‘‘चना था । ऐसी नीच स्वामीभक्ति को देखकर मेरा जमीर का‘‘प गया था ।

मेरा वाप मुझे वहा‘‘ पहु‘‘चा कर गोरखा लौट गया । उसने मेरे जिस्म से खेलना चाहकर भी नहीं खेला । वहा‘‘ पहु‘‘च कर मेरा हर दिन, मेरी हर रात मेरी अपनी न रही । वहा‘‘ पर मेरे अस्तित्व को छलनी कर दिया गया । वही पर मेरी लम्बी नाक एवं मातृभूमि की मिट्टी से तर मेरी छातियों को फिर से काट लिया गया । कुछ दिनों तक तो यह सिलसिला वडे उग्र रुप में चलता रहा । फिर उसके वाद ढीला होता गया । अब न वह जोश न वह उच्च्च कामना ही रहा । मैं अकेली छुटती गयी , निपट अकेली । गहराता गया मेरा अकेलापन, गहराती गई मेरी अंधेरी रातें । मैं कहा‘‘ हू‘‘, क्यों हू‘‘ यह तो मैं पहले ही दिन जान गयी थी और सहम कर अपने आप को नियति के हाथों छोड दिया था पर यह मुझे एक चहार दिवारी एवं अटूट कैद खाने के सिवा कुछ नहीं लगा था । जब मुझे कुछ ढीला छोडा गया, जब मुझ पर पहरे कम होने लगे मैं एक सिपाही की ओर झुकी और उसने जो वताया उससे मैं उस सम्पूर्ण वैभव सम्पूर्ण चहार दिवारी को अपनी घृणा के अधिकतम रफ्तार से देखा । उसने

DO NOT COPY

मुझे यही वताया कि रचना यह वह कैद खाना है जहा“ पर सारे देश से केवल युवतियों को लाकर कैद किया जाता है । वह भी विना अपराध । सारे देश में एक खुफिया विभाग है सिर्फ यह देखने के लिए कि किस शहर, किस गा“व में सबसे सुन्दर एवं जवान लडकी तैयार है । वस उसे खिंचकर इस कैद खाने में डाल दिया जाता है । तुम्हारा वाप भी उन्हीं युवतियों की टोह लेने वाले एक खुफिया विभाग का सरगना है । हो सकता है तुम अपने वाप से वच गयी होगी क्योंकि वह इतना स्वामी भक्त है कि अपनी स्वामी के लिए वह तुम्हें जूठा नहीं करना चाहता था । .... सुनकर मैं उपर से नीचे तक का“प गयी थी । तो मेरे वाप ने इसलिए मुझपर हाथ नहीं लगाया था । घृणा से मैं अपना सिर झटककर अपने वाप की नीचता को भुलाना चाहा था ।

.... फिर मैंने उस सिपाही से मुझे उस कैद खाने से निकालने की विनती की थी । और उसने मुझे ऐसा करने से मना किया क्योंकि यह वात मेरे लिए ही नहीं उसके लिए भी खतरनाक थी । मेरे जिद एवं मेरी दयनियता पर तरस खाकर वह राजी तो हो गया पर इसी बीच मेरे पेट के गर्भ ने मुझे रोक दिया । अब मैं अपने गर्भ के साथ विल्कुल अकेली थी जिस पर दया एवं दहशत मेरी इन्सानियत की थोडी सी छाया उस सिपाही के द्वारा मिली । वार वार मन करता रहा कि मैं उस गर्भ को खतम कर उस कैद खाने से छुटकारा पाउ“ पर अब मेरी औरत को एक दूसरे अन्याय से भी लडना था । मातृत्व का अन्याय जो हर औरत को प्रकृति की ओर से

DO NOT COPY

मिली होती है। हा“ मातृत्व का अन्याय। यही एक ऐसी चीज है जो औरत को हरा देती है अैर हर औरत इस वेदी पर खुशी खुशी प्राण न्योछावर कर देती है। परन्तु मैंने इस पर अपने प्राण न्योछावर नहीं किये। मैं मन ही मन घुटती रही, लडती रही और वडी निर्ममता से इस औरत ने अपने मातृत्व पर विजय पाई। मैंने एक लडकी नहीं एक लडके को जन्म दिया था जिसने मेरा कदम तीन सालो तक वांध लिया। मैं भी उस वन्धन में इसलिए व“ध गयी कि चलो सवका कर्ज मैंने इतना चुकाया है तो इस मातृत्व एवं वात्सल्य रुपी कर्ज को भी कुछ चुका ही दू“। ठीक तीन साल तक मैं अपने अन्दर रोज जीती एवं मरती रही। अन्त में कलेजा पत्थर करके मैं निकल पडी।

“तुम मेरे बच्चे का खयाल रखना। अगर परमात्मा निष्ठुरी नहीं होगा तो ...... ।” जब मैंने कहा तब उस सिपाही ने कहा :-

“पर तुम जाओगी कहा“ ? तुम्हे मालूम नहीं कि तुम भगवान बुद्ध नहीं जो अपने बच्चे को छोडकर कही भी निकल सकता है। तुम एक औरत .... ”

“वस करो भाई, मुझे इस नरक से वाहर निकालो। वस इतना जानती हू“। जिसको मैंने जन्म दिया है वह एक मर्द है, औरत नहीं है। अगर वह वच गया तो समाज उसका होगा। मैं तो केवल इस नरक से वाहर निकलना चाहती हू“।

"तुमने मुझे भाई कहा ?" वह एक टक मेरी ओर देखता रह गया । उसकी आ''खों से आ''सू फूट पडे और फिर अपने भाई को अपने बच्चे को सौप कर उस महल से उस नरक से उस चहारदिवारी से, उस दरवार से वाहर निकल आयी । उस सिपाही ने ही एक आदमी को मेरी मंजिल तय करने के लिए निश्चित कर दिया था । अपने भाई द्वारा तय किये गये उस आदमी पर मैंने विश्वास किया । पर मेरा विशवास कहा'' कहा'' नहीं छला गया है यस सोच कर भी आज मैंने कैसे तुम पर विश्वास कर लिया यह मेरी समझ से वाहर है । शायद इन्सान जब हार जाता है तथा विश्वास और अविश्वास की वात को छोडकर अपने आप को वहने के लिए छोड देता है तब ही उसके भाग्य का दरवाजा खुलता है ।

उस आदमी ने मुझे अपने घर ले जाकर मेरे साथ अपना मु''ह काला करना चाहा तो मैंने अपनी पूरी जमीर के साथ उसका प्रतिकार किया । तब उसने अपना तेवर बदला । मैं भी उस आदमी को खोना नहीं चाहती थी । जब कई महीनों तक उसके यहा'' रह कर मैं मेहनत करके खाती रही और उसकी अतृप्त लालसाओं को पूरा नहीं किया तब उसने कुछ और ही विचार कर डाला । इस बीच मेरे बच्चे की खबर वह लाता रहा । उस सिपाही ने उसे सम्भाल लिया था । दरवार में यह खबर कर दिया गया था कि मैं भाग गयी हू'' और मेरी खोज खबर लेने वाला कोई नहीं रहा । कोई रहे भी क्यों, मेरी हैसियत भी क्या थी ? निचोडने के लिए मेरी जैसी कितनी ही लडकिया'' वहा'' मौजूद थी पर मेरी जैसी भाग जाने वाली किसी

DO NOT COPY

को उनलोगों ने देखा नहीं था । इसलिए सबको थोडा आश्चर्य हुआ था । मैं सबके सामने इस आश्चर्य को पेश करके निकल आयी थी ।

एक दिन उस आदमी ने मुझसे यह कहा कि वह अपने घर अपने मा“ वाप के पास जाना चाहता है और अकेले तुम्हें यहा“ नहीं रहना चाहिए । अगर तुम चाहो तो मेरे साथ चल सकती हो । उसका घर वही डडेलधुरा में पडता है और हिन्दुस्तान से होकर जाना पडता है । चलो इसी वहाने थोडा घुम फिर हो जायेगा तथा पहाड के गा“वों के दृश्य भी थोडा देख लिया जायेगा , यह सोच कर मैं उसके साथ चल दी । फिर वह आदमी तबतक विल्कुल ठीक हो गया था और मेरे साथ कोई शरारत करने से डरने लगा था । मेरे अन्दर की प्यास अब मर चुकी थी औरे मेरे सामने इस प्रकार की हरकत मुझे सिर्फ बुझा ही नहीं दिया करता था वल्कि मेरे मन में एक आक्रोश भरकर मुझे पागल बना देता था । मेरा यह आक्रोश दरवार के अन्दर जबतक रही, मुझे ही खाता रहा, मुझे ही तोडता रहा पर वाहर आकर मैं इस आक्रोश को रोक पाने में असमर्थ रही । मैं सिंहनी वन जाती थी और मेरे इसी रुप से वह व्यक्ति डर गया था पर इस सिंहनी औरत के भी दा“त मर्द कैसे तोड सकता है उसका जिता जागता उदाहरण वह उस अदना सा इन्सान के रुप में मैंने देखा ।

हिन्तुस्तान का सफर करते हुए हम डडेलधुरा पहु“चे । प्रकृति की नैसर्गिक छटा देखकर मंत्रमुग्ध हुई मैं आनन्द विभोर हो गयी । नवदुर्गा गा“व में उसका घर था । मानों दुर्गा मा“ की छत्रछाया में प्रकृति की अद्भूत छटा बटोरे वह गा“व । पर प्रकृति की

यह छटा जितनी अद्भुत थी, वहा‘‘ के लोगों की गरीबी भी उतनी ही अद्भूत थी । मैं उसके घर पहु‘‘ची । उसका अच्छा, खासा घर परिवार था फिर भी उसने मुझ पर दा‘‘त गडाया था, यह सोचकर मुझे अति घृणा हुई । पर वह आदमी इतना मक्कार नहीं था, कि मैं उससे घृणा कर सकू‘‘ । उसने मुझे पनाह दी थी । उस घर, उस गा‘‘व की गरीबी के बीच में एक बोझ बनकर रह गयी थी । फिर भी मैं जिन सात दिनों तक वहा रही उन सात दिनों में मैंने सात जन्मों के आनन्द को महसूस किया । रोज पहाडों की वादियों में निकल जाती, जंगलों में हिरणी की तरह भटकती रहती और इसी भटकन में मैं एकाएक उदास हो जाती । गोधूलि के समय डूबते सूरज के साथ मेरा गा‘‘व मुझपर सवार हो जाता । कैसा होगा वह गा‘‘व अब, कैसा होगा वह युवक जो मेरे जीवन में एक मूक पैगाम भर ला सका था, कैसी होगी मा‘‘ मेरी । मा‘‘ की याद आते ही मैं तडप उठती । उस मा‘‘ ने पता नहीं सदियों से कितना जहर पिया है । मेरे पिता जैसे इन्सानों की जहर, मेरे पिता जैसे राजे महराजे का जहर । हम और हमारी मा‘‘ के साथ हमारी मिट्टी कितनी जलील हुई है, इसका इतिहास कौन लिखेगा ? ये रोज रोज गाये जाने वाले लोक गीत जो नेपाल को उठाने की वात करता है पता नहीं हमारी मिट्टी को रसातल की किस अतल गहराई में दफन कर दिया है । इन सभी खोखले गीतों के उदाहरण हम और हमारी मा‘‘ हमारी धरती, हमारी गरीबी सबके सामने खडी होकर उत्तर खोजती है ।मां‘‘ की

याद आते ही मैं उससें मिलने के लिए तडप उठी । यह उतकंठा उस समय और गहरी हो जाती जब मैं उस युवक की श्वेत धवल केश वाली मा“ को देखती । एक दिन मैंने उससे इस वात को कह दिया । मेरी उदास गहरी आ“खों में उसने झा“का था । मैंने कोई प्रतिवाद नहीं किया था । पर पता नहीं क्यों उसने खुद डर कर आ“खें हमारे सामने से हटा लिया था । उसने वापस जाने की वात कही । वापस जाते वक्त उसने मुझे गोरखा होकर ले चलने की वात कही । मैं काफी खुश हुई, आश्वस्त हुई और मन ही मन उस युवक को धन्यवाद दिया ।

एक दिन मैने उसके श्वेत धवल केशौंवाली मा“ के चरणों में गिरकर अपनी मा“ के चरणों में गिरने के लिए उस युवक के साथ चली । वस से धनगढी और वहा“ से मैलानी पहु“च कर हम लोग लखनउ के रास्ते डाक मेल पकड कर जाना तय किया । गौरीफन्टा से होकर गोंडा का रास्ता हम लोगों ने छोड दिया क्योंकि उस युवक का कहना था कि दुदवा के सम्पूर्ण जंगलों से होकर गुजरना हमारे लिए काफी खतरनाक था । उन जंगलों में वाघ, भालू जैसे कुछ जानवर और भी रहते हैं जो ट्रेनों को लूटकर औरतों को भी उठा ले जाते हैं । इस खतरनाक जानवर का नाम सुनकर मैं दहशत से भर गयी और चुप-चाप उस युवक के साथ लखनउ से होकर जाना ही मंजूर किया । तीन घंटे के सफर के वाद सुवह ६ बजे ही हम लोग लखनउ के भव्य स्टेशन पर उतरे । चारों ओर

रोशनी विखरी हुई, चारों ओर भगदड मची हुई थी वहा“ ,मानों सभी लोग अजनवी वने किसी अपनो की तलाश में भाग रहे हों पर उन्हें कोई अपना नहीं मिल पा रहा हो । पर ट्रेन पर चढते ही वे लोग निश्चितता की सा“स लेते मानो यह रेलगाडी उन्हें अपनों से मिलाने की जिम्मेवारी ले ली हो ।

हम लोग वहा“ उतरे । हमारी दूसरी गाडी रात को दश बजे जाने वाली थी । तब तक हमलोग उस नगरी में घूमने का निर्णय लिया । एक तांगापर जिसने ५०।- में सारे नगर में घुमाने का काम स्वीकारा था, हमलोग चढें ,उस महानगरी को आ“खें फाड कर हम लोगों ने देखा । अपने छोटे से गा“व एवं चहारदिवारी से वाहर निकल कर मैं पहली वार इतने वडे कैनवास पर फैली थी । इसलिए उस युवक का कोई फिकर नहीं कर मैं चारों ओर देखती रही । मोतीवाग, ऐशवाग, शहीदपार्क, स्यूजियम, चिडियाघर सबको मैंने बच्चों की तरह किलकारिया“ भर भर कर देखा । कभी कभी तो मैं अकेली हो जाती और वह युवक मेरा साथ छोड देता । भूल भूलैया में जाकर एक वार तो मैं भय से आतंकित हो गयी थी जब कि एघ घंटे तक वह युवक मेरा साथ छोड चुका पर हमारा गाइड एवं हमारे अन्य साथी हमारे साथ रहे ।

शाम हुई और हम स्टेशन वापस आये । वह युवक मेरे साथ कितने भलमनसाहत से पेश आ रहा था यह देखकर मैं दंग रह गयी थी और इसके साथ ही मुझे उस युवक के प्रति थोडा लगाव होने

लगा । कितना भला, कितना नेक, उसने हमे एक होटल में खाना लगा । हमलोग स्टेशन पर आये, ठीक समय पर गाडी पर बैठे । वह आदमी गाडी से उतरा कि वह पानी पीकर आयेगा । मैं वही बैठी रही । १० मिनट, १५ मिनट, २० मिनट, आधा घण्टा । आधा घंटा के वाद भी जब वह नहीं आया तो मैं घवरायी । मैंने नजर उठाकर देखा । मेरे चारों ओर दिल दहला देने वाले कई युवक बैठे मुस्कुराते हुए मुझे घूर रहे थे । मैंने उन लोगों से पूछा कि यह गाडी किधर जायेगी, मेरा साथी मुझसे विछड गया लगता है । उन युवकों ने कुछ ऐसे कुटिल नजरों से मुझे देखा जिससे मेरी पुरानी पहचान थी । मेरा गला सूखने लगा । उनलोगों ने जब कुटिलता पूर्वक यह कहा कि यह गाडी वम्बई वी.टी. जायेगी और वहा“ तक वह नहीं तो हम आपके साथ होंगे तब मेरे पा“व तले की जमीन खिसक गयी । जिस युवक के प्रति अब मैं आकर्षित होने लगी थी उसकी मक्कारी मेरी समझ में आ गयी थी । मेरे अगल बगल बैठे भेडियों को मैंने पहचान लिया था । बम्बाई भी.टी की कई कहानिया“ मैं सुन चुकी थी । इन भेडियों के चंगुल से छूटना इतना आसान नहीं है, यह मैं सोच चुकी थी । मेरा दिमाग अपना गम भूलकर अब अपने को वचाने में लग गया था । अपनी सम्पूर्ण तर्क शक्ति एवं रक्षा शक्ति के साथ मैं तैयार हो गयी । गाडी ने सीटी दिया, झझक, झझक कर खुल गयी । गाडी के प्रथम वर्ग के डिब्बे में हम बैठे थे, भीड कम थी, विजली की तरह मैं उठी और चीते की फूर्ती से दरवाजे पर आकर वाहर कूद गयी ।

DO NOT COPY

वे युवक कुछ समझे समझे तबतक मैं कुदकर भागने लगी थी । उन युवको में से दो युवक कूदकर मेरे पीछे भागे और वाकी लोगों को लेकर गाडी अपनी रफ्तार पकड चुकी थी । वदहवास भागती हुई मैं कहा“-कहा“ गयी, किस किस नें मुझे देखा मैं कुछ नहीं कह सकती । वे युवक कहा छूट गये मुझे कुछ नहीं मालूल । पर उतनी वडी नगरी में मुझे किसी ने नहीं बचाया , किसी ने मेरे घाव पर मरहम नहीं लगाया । मुझे जब होश आया, मैं जहा“ पर रुकी तो देखा वह वही शहीद पार्क था जहा“ मैं दिन में घूम चुकी थी । उसके विशाल शहीद स्तम्भ ने जो सैकडों अनजान शहीद भाइयों की कहानी लेकर खडा है, मुझे अपने आलिंगन में ले लिया, अपने पनाह में ले लिया । उस स्तम्भ से लिपटकर मैं वडी देर तक रोती रही । कोई वहा“ नहीं आया, कोई वहा“ नहीं आयेगा । मैं कुछ आश्वस्त हुई और गोमती के किनारे उन शहिदों के विशाल स्तम्भ के सहारे, अपना सिर टिकाकर मेरी आ“खों को निंद आ गयी । जिन शहीदों ने अपने वल पर मातृभूमि की इज्जत, अस्मत बच्चा रखी है उन शहिदों ने अपनी इस वहन की भी अस्मत बचायी ।

आखें खुली तो सवेरा हो चुका था । धीरे से उठकर मैंने उस शहीद स्तम्भ को अपना नमन चढाया, गोमती की धारा में अपना मुखडा धोया और ऐसे सहज हो गयी जैसे रात कुछ हुआ ही नहीं हो । दिन हो चुका था और मैं इस दिन के उजाले में किसी के हाथ नहीं आउ“गी , इसका संकल्प कर मैं सावधान होकर उसी स्टेशन

DO NOT COPY

की ओर चली । हादसों से डरती तो थी पर हादसों की आदत हो चुकी थी मेरे जीवन को ।

सावधान निगाहों से इधर उधर देखती , चेहरे से डर भय एवं विवशता एवं आतंक का छाप मिटाकर मैं इस ट्रेन पर सवार हो गयी जो वहा‘‘ पहु‘‘चते ही सवसे पहले खुल रही थी । मेरे लिए अब यह सवाल नहीं था कि यह गाडी कहा‘‘ जायेगी वल्कि यह सवाल था कि वम्बई भी.टी. के रास्ते को छोडकर जहा‘‘ हजारों नेपाली लडकिया‘‘ वेश्यावृति के विलविलाते नरक में झोंक दी जाती है, कही भी निकल चलना चाहिए जहा‘‘ पता नहीं कहा‘‘ से उन भेडियों की आ‘‘खें मुझे खोजते खोजते दवोच ले ।

उस गाडी में आप आये, आप दोनों के बीच मैंने अपने आप को ऐसा अभिनय किया ताकि आप दोनों इस वहम में पडे रहें कि मैं वगल वाले के साथ हू‘‘ और .... अब परमात्मा को क्या मंजूर है यह मुझे साफ नजर आ रहा है । क्या आप मुझे ठुकरा देंगे ?

एक नहीं चार आ‘‘खें उस विशाल वटवृक्ष की ओर एक टक देखती हुई आ‘‘सुओं की कुछ बू‘‘दों को वहा‘‘ पर टपका दिया जहा‘‘ पर भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था ।

DO NOT COPY

३

मैं संजय !

क्या बताउ‘‘ , क्या नहीं बताउ‘‘ ! हमारा सम्पूर्ण इतिहास विस्मृत हो गया है और जो कुछ भी वचा है उसे विस्मृत कर देने की कोशिश होती रही है । अपने पूर्वजों के द्वारा सुनकर मुझे मेरे इतिहास के वारे में कुछ भी मालूम नहीं । पर आज जब हमारे खेतों में सोने, चा‘‘दी और पुराने चावल के दाने मिलते हैं तो ऐसा लगता है कि हमारे वैभव पूर्ण इतिहास को हलाक करने के वाद भी वह हमसे कुछ कह रहा है । आज भी जब हम अपने इलाके के उ‘‘चे-उ‘‘चे टीले को देखते हैं तो लगता है कि उसके अन्दर हमारा गौरवपूर्ण इतिहास गौरवान्वित है और अपना सर अभी भी उ‘‘चा करके हमसे कुछ कह रहा है । आज भी हमारे गा‘‘वों में गढ, गढी ,टीले और भीड़ूक का महत्व ऐसा है कि हम उन्हें देवी देवताओं की तरह पूजते हैं । ऐसा लगता है उनमें हमारे पूर्वजों के पार्थिव शरीर किसी के जुल्म का शिकार होकर दफन हो गया है जो हमारे अन्दर अब देवी, देवताओं के रुप धारण कर चुके हैं । राजा जनक का यह देश किस-किस रुप में करवटे वदलते हुए कव कैसे मधेश कहलाने लगा यह काफी खोजपूर्ण विषय है । मैं न तो इसके वारे में अधिक जानता हू‘‘ न मुझे अधिक जानने दिया गया है और न अधिक मैं जानना ही चाहता हू‘‘ । मेरे अन्दर राजा जनक एवं माता सिता का इतिहास वह रहा है यही मेरे लिए गौरवान्वित होने का सवसे प्रवल

DO NOT COPY

प्रमाण है । हम संसार के सवसे उच्चतम सभ्यता के मालिक हैं इस विचार से ही मैं रोमांचित हो जाता हू“ । वोलों राजा जनक से अधिक, ज्ञानी, विवेकी एवं तपस्वी राजा का प्रमाण है इस संसार में कोई ? बोलो सिता से वडी नारी इस सभ्यता ने दूसरी कोई दी है मनुष्य को ? सारी मनुष्यता की, सारी सभ्यता की पराकाष्ठा मानता हू“ मैं जगत जननी सीता को । ऐसा गौरवपूर्ण इतिहास कब कैसे दलित हो गया, समभ्क में नहीं आता । निश्चय ही इसे दलित करना किसी मनुष्य के वस में नहीं । अवश्य ही प्रकृति का कोई महाविनाश हुआ होगा, अवश्य ही पृथ्वी ने स्वयं करवट लिया होगा, अन्यथा इस सभ्यता को नष्ट करना और किसी के वस में नहीं ।

उसके वाद की परम्पराओं में भी हम इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि वह कितना महान रहा होगा । जिसने महाकवि विद्यापति जैसे युग पुरुष को दिया । वह परम्परा आज भी कायम है और विश्वकवि रविन्द्र आदि को मैं उन्हीं परम्पराओं के अन्तर्गत मानता हू“ । इतिहास हमें छिन्न भिन्न कर सकता है , देश को टूकडे कर सकता है, मिथिला, भोजपुर, वंगाल विहार वना सकता हे, पर हमारी चेतनाओं को छिन्न भिन्न नहीं कर सकता ! हमारी चेतनाए“ आज भी सक्रिय हैं , हमारे कर्मो को, हमारे वदन को दलित कर दिया गया है, पर हमें हमारी वास्तविकताओं से अलग रखने का खडयन्त्र होता रहा है । गयासुदिन तुगलक के द्वारा वर्वाद हुए हमारे इतिहास को उठाने का किसी ने कोशिश नहीं किया । हमें हमारे स्वत्व से अलग करके रखा गया है और यह काम आज तक वदस्तुर जारी है । अब

DO NOT COPY

जब कि सभ्यता ने एक नयी करवट ली है तब भी हमें हमारे अंधेरे से निकालने की कोशिश नहीं की जा रही है । इसका कारण ? इसका कारण विल्कुल वही है जो कारण तुम्हारे स्तनों की मिट्टी को चाटकर सभ्यता के इतिहास में अन्याय का हस्ताक्षर करता है । वह हस्ताक्षर आज तक वदस्तूर जारी है और हमें अव इस हस्ताक्षर को मिटाना चाहिए । अगर हम इस हस्ताक्षर को मिटाने का वीडा नहीं उठाते तो पता नहीं हमारी कितनी पीढियों के स्तनों पर यह हस्ताक्षर होता रहेगा । अपने पूर्वजों की तडप की हमने कल्पना की, अपनी तडप को हमने भोगा, भोग रहें हैं और आनेवाली पीढियों की तडप की भी कल्पना कर सकते हैं । वह मिट्टी जिसके लोथडों से हम वने हुए हैं हमसे अपने उपर के इस हस्ताक्षर को मिटा देने का कर्तव्य मा‘‘ग रही है, अधिकार मा‘‘ग रही है ।

प्रकृति से जुझते हुए पूर्वज कब, कहा‘‘ से कैसे आकर वहा‘‘ वसे मैं कुछ नहीं जानता और कोई जान भी कैसे सकता है ? वस इतना सुनता हू‘‘ कि उस समय जब हैजा फैलता था तब लोग गा‘‘व के गा‘‘व छोडकर अन्यन्त्र चले जाते थे । जिजिविषा की चाह में उन्हें अपना गा‘‘व, अपनी मिट्टी, अपनी धरती का मोह त्यागना ही पडता था । घर का घर, गा‘‘व का गा‘‘व सखाप हो जाता था । जब प्लेग फैलता था तब लोग इलाका का इलाका छोडकर भाग जाते थे जैसे किसी महासमर में शरणार्थी की तरह लोग पलायन कर रहे हों । इलाका का इलाका तब जनशुन्य हो जाता था । ऐसे में कब, कैसे

हमारे पूर्वज खतम होते रहे और कैसे विजरुप में हमें सुरक्षित रखा किये इसके वारे में कुछ पता नहीं । इतनी वडी प्राकृतिक विपदाओं को झेलते हुए लोगों को जब हमारे अन्यायी एवं अत्याचारी राजाओं के कहर को भी कैसे सहना पडता होगा यह सोचकर ही मैं का‘‘प जाता हू‘‘ । कैसे वर्वर होंगे ये राजे, रजवाडे, जब हैजा या प्लेग में अपने सभी लोगों को ग‘‘वा चुकने के वाद जब किसी युवती को उनके वलात्कार से होकर गुजरना पडता होगा । इस वर्वरता की हम केवल कल्पना भर कर सकते हैं और ऐसे वर्वर लोगों को हम अपना अगुआ, अपना राजा अपना मालिक मानना तो दूर मनुष्य मानने से भी इन्कार करते हैं । ये वर्वर लोग जो आज भी हमारे मालिक वने हुए

हैं , इसी युग की देन हैं । जब लोग प्राकृतिक विपदाओं से जुझने में लगे हुए थे । ये वर्वर एवं राक्षस लोग आगे आकर पुरानी सभ्य पीढियों को हराया जिसने हमारी सभ्यता को विकसित किया था । हमारे पूर्वज उन प्राकृतिक विपदाओं के दौर में, उसकी नृसंसता की दौर में इसे पचाया, इसे नियति और भगवान की देन समझा और भगवान की देन समझकर वह आजतक इसे सहता रहा ! और तो और कालान्तर में भगवान का रुप !

भगवान के इसी रुप ने हमारे राज्यों में शादी रचाया, फिर नृसंस हत्यायें करके हमारे अपने राज्य जो हमारे अस्तित्व के रुप में मौजूद था, अपने राज्य में मिला लिया । राजे रजवाडों की इस लडाई

DO NOT COPY

में अपनी नाक एवं स्तनों को कटवाने के लिए जनता तैयार वैठी रहती थी । कहीं से सिपाहियों का काफिला गुजरता और हमारी वहू-वेटीयों के काफिले पर टूट पडता । उन निरीह औरतों, युवतियों पर जो किसी वन में अपने सुहाग के लिए चुल्हा जलाने के लिए लकडिया“ चुन रही होती है, जो किसी खेत में मवेशियों के लिए चारा काट रही होती , जिनकी अंगुलियां कहीं सम्पूर्ण सृष्टि का पेट भरने के उपक्रम में खेतों में थिरक रही होती । किसी की पथरायी आ“खें वन विथिकाओं में अपने पुत्र एवं सुहाग को सुरक्षा के लिए पुकारती वही खुली की खुली रह जाती । किसी की छतिया“ खेतों में कट जाते, किसी की अस्मत उसके पति के सामने लुटी जाती । कोई अभागन एक ओर अपनी अस्मत लुटते हुइ देखती और दूसरी ओर अपने पति के पेट में संगीन भोंकते सिपाहियों को देखती । कोई सिपाहियों के घोडो की पीठपर विठाकर कहा“ ले जायी जाती उसे लोग देखते पर पता नहीं चलता कि उस अभागन का इस धरती पर देह धारण करने का मतलव क्या रहा ? क्यों वनाया उन्हें भगवान ने ? इतने जुल्म इतने अत्याचार सहकर आगे वढती मनुष्यता के हम जीता जागता प्रमाण हैं ।

धीरे धीरे परिवर्तन होता रहा , जुल्मों सितम कम होता रहा ! अब वे लोग विजेताओं की रैयत कहलाने लगते और अपनी ही रैयत पर विजितों की तरह इतना जुल्म ढाना ठीक नहीं का नारा लगता । जमाने के अनुसार जुल्मों के रुप परिवर्तित होने लगे । अब राजाओं के लोग मात्र इस टोह में निकलते कि किस जगह पर, किस

DO NOT COPY

गा‘‘व में किस शहर में, किस घर में सौन्दर्य घू‘‘घट खोल कर वाहर आ रहा है, किस घर में कौन सी लडकी जवान हो रही है । सवका लिष्ट महल में पहु‘‘चाया जाता और चुन चुन कर सबको उनके खिदमत में पेश किया जाता रहा । प्रतिकार करने वाले को मृत्युदण्ड, सीधा यमलोक पहु‘‘चा दिया जाता । तुम भी , तुम भी इसी लिष्ट में पहु‘‘चायी गयी एक खिलौना हो । हमारे पूर्वजों को ऐसे किसी हादसे की याद न रही होगी या उन लोगों ने भुला दिया होगा या कोई उस काविल न रहा होगा, पर गा‘‘व घर में यही कहानिया‘‘ होती रही है । हमारे कितने सम्बन्धी अपने वचाव के लिए या खुद उस प्रकृति के होकर इन अत्याचारियों के अत्यचार में सहयोग करने का काम किया है । यह उनकी मजबूरी भी हो सकती है । मेरे नाना ने खुद इस अत्याचारियों का साथ ही नही दिया था वल्कि उन अत्याचारियों में शुमार उनके एक जमीन्दार रह चुके हैं । इसके वावजूद भी जब एक वार हाथी पर सवार होकर दरवार के लोग हमारे गा‘‘व में गये थे हमारी दादी का नाम अपने लिष्ट में शामिल कर लिया था । हमारे नाना का माथा ठनका ही नही था वल्कि उनके पैरों पर कितना माथा एवं नाक रगडने के वाद वडी मुश्किल से वे उनको रोक पाये थे । परन्तु लोगों ने देखा था कि पडोस की दादी की सहेली को वे कितने वेरहमी से दादी की आ‘‘खों के सामने ही उठा ले गये थे । इसके वाद दादी मा‘‘ ने पशुपतिनाथ की अपनी यात्रा रद कर दी थी । उसको तब इनके अत्याचारों का पता चला था

। जिसके राज्य में इतना वडा अत्याचार होता हो उनके राज्य में स्थापित पशुपतिनाथ का दर्शन करना भी व्यर्थ है । चुरिया“ मा“ के भयंकर गुफा को पार कर वह एक वार भगवान पशुपतिनाथ का दर्शन कर चुकी है । वागमती में स्नान कर तब वह गंगा स्नान का पुण्य प्राप्त किया था । अब और अधिक दर्शन करने की उसकी इच्छा नहीं है । भगवान इस पार्थिव शरीर को किसी की नजर लगने से पहले ही उठा ले जाय । वाप रे दिन दहाडे सबके सामने घसीटते हुए मेरी सहेली को किस तरह कुचलते, मसलते ले कर चले गये । दादी की जीजिविषा विल्कुल मर गयी थी । वे दिन रात परमात्मा से प्रार्थना करने लगी, अपने को उठा लेने के लिए । परन्तु परमात्मा ने उसे नहीं उठाया, उसके पति को उठा ले गया । भरी जवानी में वह विधवा हो गयी । वह उसी समय सती हो जाती परन्तु औरत की उसी कमजोरी ने जो तुम्हारे साथ हुई उसे रोक लिया । वह दो बच्चों को जन्म दे-चुकी थी , और उसे जिन्दा रहना पडा था ।

तब से लेकर आजतक जमाना गुजर गया । युग किस तरह करवटे वदलने लगे, देखकर आश्चर्य होता है । उन जुल्मों सितम के समय औरतें स्वभाविक रुप से पतिव्रता हो जाती थी । जिनकी अस्मत सबके सामने लूटी जाती हो, वह औरत अपने पति की चिता पर चढ कर मर न जाय तो क्या करे ? इसलिए सती प्रथा का लोमहर्षक यज्ञ होता था, उस समय ! जिसके पति को, उसकी आ“खों के सामने हत्या कर दी जाती हो और अपने पति की पथरायी खुली आ“खों के सामने जिस औरत को नंगा कर अस्मत लूटी जाती

रही हो वह औरत पतिव्रता ही होगी और कुछ नहीं । अपनी अस्मत लूट कर चले जाने के वाद, वह अपने पति की पुतलियों को जो उसके नंगे वदन को एक टक देख रहा होता होगा धीरे से वन्द करती होगी और वही उसके चरणों में लोट जाती होगी । यह खबर धीरे-धीरे गा‘‘वों में फैलती होगी, कहानिया‘‘ वनकर बच्चों के कानों में पडती होंगी । ऐसी, स्थिति में हमारे समाज में उस समय सतीत्व एवं पातिव्रत्य का गंगा न वहे तो और क्या हो । ये जुल्म, ये सितम ढाने वाले लोग थोडे से समाज के अगुवा एवं समाज के कोढ के रुप में फैले रहे । वाकी लोग इसलिए शान्तिप्रिय थे, इसलिए कि प्रकृति के घोर संघर्ष को झेलना था, इसलिए पत्नीव्रत एवं पवित्रता थे कि वे इन नरपिशाचों के अत्याचार से अत्यधिक पीडित थे । हा‘‘ एक कमी थी उनमें, शिक्षा की । वे इसे अपना नियति मानकर झेलते आये हैं और अब जबकि शिक्षा का प्रचार प्रसार हुआ है, आदमी अपने अत्याचारों को विस्मृत कर दिया है । आज के अत्याचार के जो रुप वदल गये हैं, वह उसे दिखलाई नहीं पडता । कुछ लोग पालतू कुत्ते वनकर, उसी प्रणाली का समर्थन करने लगे हैं । पत्नीव्रत एवं पतिव्रता शव्द एक हास्यास्पद गप होने लगा है पर आज भी अधिकतम लोग इस तरह के नहीं कहें जा सकते । वे भीतर ही भीतर छटपटाते रहे हैं, वे भीतर ही भीतर दुनिया‘‘ के लिए काम करने लगे हैं ।

इसी वेहतर दुनिया वनाने वालों में शामिल हुए थे मेरे पिता । कामयाव भी हुए थे । उनको इस कामयावी का कोई फल

प्राप्त नहीं हुआ । फिर से उस कामयावी का गला घोंट कर हमारे देश में उसी तानाशाही का भूत अपना राज्य करने लगा । दिन पर दिन छिजते एवं बूढे होते मेरे पिता अपने बच्चों के प्रति अत्यधिक मोहग्रस्थ हो गये । जब उनके अपने लोगों ने ठुकराया, जब उनके प्रजातान्त्रिक कहलाने वाले गिरोह ने पूछा भी नहीं तो एक वार वे उसी पालतू कुत्तों में शुमार होने को मचले थे पर उनका स्वाभिमानी खून उनको यह काम करने से रोकती । पालतू कुत्ता वनने से कुत्ते की मौत मरना उन्होंने वेहतर समझा । वे परिश्रम एवं लगन से अपने बच्चों को पढाने लगे । हम पढ भी गये पर हमलोगों ने भी उनकी लालसायें पूरी नही की । जिस सम्पन्नता को वे देखना चाहते थे, जब वह पूरा नहीं हुआ तब वे विक्षिंप्त हो गये । पर उनकी यह सम्पन्नता हम कहा“ से लाये ? हमने जो अपना कर्तव्य किया था, हमने जो मर-मरकर पढा था, वस यही था हमारे हाथों में । अब मैं सम्पन्न क्यों नहीं हुआ , हमारे पास पैसे क्यों नहीं हैं, हमारे बच्चे सब निपट विपन्नता में दिन गुजार रहे हैं तो इसमें मेरा क्या कसूर ? इस प्रश्न को वार-वार मैंने भी अपने आप से पूछा है । पर मेरे पिता एवं मेरे भाई को दोष मुझमें दिखलाई पडता है जबकि मेरे देखने पर मुझमें कही खोट दोष नहीं । अब वे यहा“ तक कहने लगे हैं कि अब मैं इस व्यवस्था का पालतू कुत्ता वनकर उनके सपनों को साकार करु“ ? जो चीज वे खुद नहीं किये, जिस चीज को उनकी जमीर ने अस्वीकार कर दिया वही चीज अब वे मुझसे चाहते हैं तो यह मेरे जमीर को कैसे स्वीकार हो ?

DO NOT COPY

इस चीज ने आर्थिक विपन्नता एवं कलह का रुप लिया । यह कलह दिन पर दिन बढता गया । वच्चों की संख्या वढती गयी, विपन्नता की मात्रा वढती गयी । औरतों के मन से विस्मृत पतिव्रत एवं वन्धुत्व भाव ने इस आग में घी का काम किया और परिवार टूटने की कगार पर पहंच गया । धीरे धीरे हमलोगों के वीच वोल चाल भी वन्द हो गया । कलह की यह धारा उस धारा से जाकर मिली जिसको सरकार ने हमारे पूरे तराई प्रदेश में फैला रखे थे । फूट डालो, सम्पूर्ण तराई प्रदेश में, सम्पूर्ण तराई को विपन्नता में रखों, सम्पूर्ण तराई पर छा जाओ और धीरे धीरे सम्पूर्ण तराई वासियों को यहा" से खदेड दो । जो भी इस चीज को समझे उनलोगों ने तराई का"ग्रेस आदि आन्दोलनों को चलाया भी पर तुरत अपने हथियार डालकर उनके तलवे चाटने लगे । टुअर निरीह तराईवासी अपनी समस्याओं को समझ नहीं सके । वे यह नहीं समझ सके कि ये जो विकास हो रहे हैं , ये जो जंगल काटे जा रहे हैं, ये सब उनपर कहर ढाने के लिए किए जा रहे हैं । भूमिसुधार जैसा खडयन्त्रकारी कार्य, उनकी जायदाद हडप लेने के लिए हुई । पुनर्वास कार्यक्रम के अन्तर्गत सारे जंगलों की कटाई उनको विस्थापित करने को ध्यान में रखकर किया गया है । घर घर आग लगायी गयी है । भाई भाई को लडाने का, गा"व गा"व को लडाने का खडयन्त्र किया गया है । कवसे हम राष्ट्रिय मुख्य धारा से किस कदर काट दिए गये हैं, इसका पता भी नहीं चला तराई को । वह अपनी लडाई में उलझता चला जा रहा है, जो उनके घाव को गहरा करता चला जा रहा है, तराई

DO NOT COPY

के कुछ निरीह, कायर एवं नासमझ लोगों ने उन्हीं के गुणगान एवं उन्हीं के पीछे अपनी शक्ति लगाये जा रही है । उनको पता भी नहीं कि सम्पूर्ण तराई को किस कदर सम्पूर्ण देश सें अलग-थलग कर दिया गया है ।

हमारे कंधो पर वन्दूक रख कर लडा गया, हम उनके, उनकी क्रान्ति में वरावर के हिस्सेदार वने, पर उनलोगों ने ही हमारे विरुद्ध खडयन्त्र किया, ऐसा क्यों ? क्यों हमको धोखा दिया गया ? कितने वहाने वनाये जाते हैं हमको धोखा देने के लिए । पहाड के लोग गरीब हैं उनको उपर उठाना चाहिए, पहाडों के लोग दुर्गम में रहते हैं । तो क्या किसी गरीब को हमारे मूल्य पर अमीर बनाया जायेगा ?जो लोग हमारी गरीबी के मुल्य पर पहाडी गरीबी को ठीक करना चाहते हैं वे लोग क्या करते हैं यह भी देखने समझने की कोशिश हमारे पहाडी गरीवों ने नहीं किया । किस तरह उनका शोषण करते हुए भी उन्हें हमारे विरुद्ध उकसाया एवं बढाया जाता है । वे नफरत के बीज लिए फिरते हैं हमारे विरुद्ध । वे तराई में उतरते हैं और उनके फैले हुए विस्तृत मैदान को देखकर हमें अमीर समझने लगते हैं । हम सारे मौजों को भोग रहे हैं यह सोंचकर वे हमारे विरुद्ध हो जाते हैं । उन्हें हमारे विरुद्ध भडकाने का निश्चित एवं नियोजित खुराक मिलता हैं । हम देशी हैं, हम भारतीय हैं, हम कायर हैं, हम ठग हैं, हम वेइमान हैं तथा पता नहीं और क्या क्या हैं । काश वास्तविकताओं को समझने की शक्ति होती हमारे पहाडी भाइयों में । काश वे पहचान पाते कि शोषक कौन हैं । काश वे

समझ पाते कि हम भाई-भाई को लडाकर कौन राज्य कर रहा है। कौन राज्य करना चाहता है।

मेरे सगे भाई एवं वाप ने भी इन शोषकों को नहीं पहचाना। उनको हमारी गरीबी का कारण केवल हममें दिखलाई पडती है। उनको हमारे पिछडेपन का कारण केवल हम दिखलाई पडते हैं। हम पैसा नहीं कमाते , हम रिश्वत नहीं खाते, हम चाटुकारिता एवं गलत दोस्तों के फेर में नहीं पडते। हम उसी तरह जीते हैं जिस तरह हमारे संस्कारों में वताये गये हैं। हमें वचपन से इमान्दारी का पाठ पढाया गया है , हमे वचपन से शाराव पीने को खराब बताया गया है , हमे वचपन से रण्डीवाजी को नकारना सिखाया गया। हमें वचपन से रिश्वतखोरी को गलत वताया गया है। मैंने आ‘‘खें फाड-फाड कर देखा है कि हमें जो कुछ सिखाया गया, हम वही करते हैं। पर लोग हम पर ह‘‘सते हैं। जो कुछ भी हमें सिखाया गया है, आज समाज में सबकुछ उसके विपरीत हो रहा है। शराव का कुल्ला करते हैं लोग, पपलू और जुए का साम्राज्य छाया हुआ है, रिश्वतखोरी पराकाष्ठा पर पहु‘‘चा हुआ है। रण्डीवाजी इस कदर व्याप्त है कि किसकी वहु बेटी कितनी सच्चरित्र है यह कहना मुश्किल है। हमारी वहन आज हमारे साथ घूम रही है, चहक रही है, कल उसकी लाश पोखरा की सेती से वरामद की जाती है। रातों रात वह सैकडों मील दूर पहु‘‘च जाती है। हमें भाइयों एवं वहनों, पति एवं पत्नियों पर से विश्वास उठ गया है। क्यों कैसे इसी का जवाव पूछने के लिए हम यहा‘‘ आये हैं। जिस सरकार के

DO NOT COPY

फाइलों में हर किसी का व्योरा वर्णन उपलब्ध है, कौन आराष्ट्रिय तत्व है, यह सभी सरकार के फाइलो में वन्द है, जो कोई भी उसका अ.त. है उसका जीना हराम हो गया है । पर सारे सरकारी अफसर दिनरात पपलू एवं रण्डीवाजी में व्यस्त है, वे सव सरकार को पता नहीं । सच तो यह कि जो कोई भी थोडा सच्चरित्र है, जो भी थोडा जिन्दा है, जिसमें भी थोडा सा होसो-हवास है, जिसपर भी देश थोडा सा गर्व कर सकता है, वे सब हमारे देश के फाइलों में अराष्ट्रिय तत्व के रुप में वन्द हैं । वे या तो देश के कैद खाने मे वन्द हैं, या गरीबी या हिकारत के नजरों में वन्द हैं , या जहालत एवं परेशानियों की पीडायें भ्केल रहे हैं । जब हम शहीदों के चरणों में पुष्पार्पण करने जाते हैं तो हमें गिरफ्तार कर लिया जाता है । हमें संदेह होता है कि क्या यह देश आजाद हुआ है । इतिहास कहता है कि हमारा देश कभी परतन्त्र हुआ ही नहीं । क्या खूव ? पर मैं पूछता हू“ कि क्या हमारा देश आजाद हुआ है ? जिस देश के शहिदों पर पुष्पार्पण करते हुए, नागरिकों को पकड लिया जाय वह देश अभी आजाद नहीं हुआ । हम यहा“ आये हैं, अपनी इसी आजादी को पाने लिए । सरकार वन महोत्सव करती है । क्या खूब । सारे वनों को विनष्ट करके वन महोत्सव का कार्य सम्पादन होता है । सरकार को पता नहीं कि वन लगाने से नही लगता , वाघ पालने से नहीं पलता । वन और वाघ दोनों को छोड दो, वे खुद व खुद वढ जाते हैं । पर हम वनों का विनाश करके वन महोत्सव का ढोंग रचाते हैं । यह वन महोत्सव कैसा है कि जब हम वन लगाते हैं तब ही उसे उखाड कर फेंक

दिया जाता है । जो सरकार लगायेगी वही पेड वन कहलाता हैं । जो हम लगाते हैं वे वन हो ही नहीं सकते । उसको उखाड फेंकते हैं ।

इस चीज को देश के कर्णधारों ने आज से चालीस वर्ष पहले सोचा उसे विरोधी वन महोत्सव की तरह उखाड फेंका गया । उसकी जगह पर जो, जिस महोत्सव का ढोंग रचाया गया उससे देश का एक एक वृक्ष समाप्त हो गया , एक एक पेड ढह गया, एक एक वृक्ष फलहीन हो गये । एक एक फूल टेसू की तरह गन्धहीन । एक एक आदमी नीरीह, लाचार, मजवूर । सव गरीबी के रसातल में ध‘‘स गये । कुछ लोग, कुछ राणायें, कुछ व्यापारी वस इन्ही की दूनिया‘‘ रह गयी हमारे देश में । हमारे लोगों ने जो सपने बुने थे वे सब चकनाचूर हो गये । जब हमारे सपने चकनाचूर हो जाते हैं तब हम शीशे के घरवालों की तरफ नजर उठाना शुरु करते हैं । दवें पा‘‘व यह नजर उठना शुरु हुआ तो उन्हें हमें आज से ४० वर्ष पहले की सोंच पर उतरना पडा । उसी का परिवर्तित रुप हमारे सामने एक झूठे सपने के रुप में पेश किया गया । यह भूठा सपना है । आधारभूत आवश्यकता । यह आधारभूत आवश्यकता कुछ दिनों तक हमें और ठगने का जवरदस्त वहाना है । और तो और मेरी आहें उस समय ओर तेज हो जाती है जब इसमें भी हम तराईवासियों को दरकिनार कर दिया जाता है । कौन समभ्कता है इसे । हम तराईवासी ही , इस वात को समभ्कने की वात तो दूर, उसके खडयन्त्रों में शामिल होकर अपने ही भाइयों का खून चूसने में पीछे नहीं हटते ।

DO NOT COPY

कुछ लोग हमारा खून चूसने में, कुछ लोग झगडने में और कुछ लोग इन झगडों को वढाने में व्यस्त हैं ।

एक अजीव उदासी छायी रहती मुझपर, कहीं मन नहीं लगता । एक समय मुझ पर ह‘‘सी एवं प्रसन्नता का जो दौर आया वह थोडे ही दिनों में ऐसे कुम्हाला गया जैसे फूल रात भर में ही खिलकर झर जाते हैं । समाज के ढोंग , समाज के दोगलेपन, समाज के अन्याय, समाज के शोषण, मेरी समझ में आते ही तत्काल हमारी सारी उत्कंठा हमारे सभी ह‘‘सी अचानक गायव हो गये । मैं जहा‘‘ भी डोलता, जहा भी जाता, जहा‘‘ भी पूछता, जहा‘‘ भी विश्लेषण करता, मुझे ढोंग, अन्याय, अत्याचार, एवं शोषण ही शोषण दिखलाई पडता । सम्पूर्ण समाज की संरचना गलत हो गयी है हमारी और मैं उसकी सही संरचना को प्राप्त करने आया हू‘‘ ।

मेरी शादी हुई , बच्चे पैदा हुए । कुछ दिनों तक आनन्द एवं खु**शियां समेटता हुआ लगा पर वहुत जल्दी मेरी यह खुशी भी विखर गयी ।** मुझे ऐसा लगने लगा जैसे इन खेतों, खलिहानों, वन वागों, तालावों में इन वन जंगलों में कहीं मेरा प्यार खो सा गया है । पत्नी ने मुझे समझने की कोशिश नहीं की । उनकी फर्माइशें होती और यह पता करने की कोशिश नहीं होती कि ये फर्माइशें पूरी कहा‘‘ से होंगी । वस कलह और कलह । कौन समझता है कि उनकी फर्माइसें पूरी मैं क्यों नहीं कर पाता । वस मैं अपनी सारी उदासी को वच्चों की गहरी, काली आ‘‘खों में डूबा देना चाहता जो

DO NOT COPY

यह भी नहीं समझते कि यह उदासी, यह गरीबी, यह कलह, यह शोषण, यह अत्याचार किसको कहा जाता है । उन्हें तो वस मेरे प्यार के दो वोल ही पर्याप्त होते, कंधों के थोडे से कष्ट ही उन्हें सुला दिया करते । और तब मन ही मन मैं कट कर रह जाता । मेरी आत्मा चित्कार कर उठती कि कहीं से मैं इन वच्चों के प्रति अन्याय कर रहा हू“ । क्या लोग इन बच्चों के वरावर भी अक्ल नहीं रखते ? लोग अगर केवल इसके वरावर भी हो जा“य तो सारी दुनिया“ के कष्ट मिट जायेंगे । जब ये वडे होंगे तब क्या ये अपने पिता की मजवूरियों को समझ कर उन्हें माफ नहीं कर देंगे ? फिर सोचता अगर ये माफ कर दें तो भी मेरा मन क्या मुझे माफ कर देगा ? क्या मुझे इनको इसी अन्याय, इसी शोषण के बीच वडा करना उचित होगा ? तो क्या मैं औरों की तरह रिश्वतखोर हो जाउ“, क्या मैं चाटुकार हो जाउ“ ? क्या मैं इनके लिए अपनी आत्मा को मार दू“ या मूल शोषण की कडी को कही से तोडने की प्रक्रिया में लग जाउ“ ?

मैं अपने कार्यालय जाता जहा“ पर मैं पेट पालने का धन्धा कर लिया था । यह सरकारी नौकरी मुझे वेश्यालय में वैठकर अपना शरीर वेंचने वाली औरत जैसा लगता । और अपनी आत्मा को मार कर मैंने यह धन्धा करता रहा । न कोई सुरक्षा, न कोई गारन्टी, न कोई अधिकार, न कोई विरोध । हम चुप चाप अपना काम करने के लिए वने होतें हैं । सरकार का विरोध नहीं कर सकते, चुनाव में भाग

DO NOT COPY

नहीं ले सकते, आन्दोलन नहीं कर सकते, यूनियन नहीं वना सकते, मा‘‘गें नहीं मा‘‘ग सकते । पर क्या खूव । पपलू खेल सकते हैं, शराब पी सकते हैं, महीनें में अपना टका सा पैसा लेकर परिवार के कपडों पर पैवन्द लगा सकते हैं । पैवन्द से ज्यादा हक मा‘‘गने वालों को स्पष्टीकरण, तारिख, जेल ...... ।

जब से होश सम्भाला, मैं छटपटाता रहा, तडपता रहा, राहें खोजता रहा । पर राह मुझे कहीं न मिला । मेरी उदासी, मेरी छटपटाहट मेरी तडप मुझे कभी वगावत, कभी क्रान्ति, कभी शान्ति, कभी कुछ तो कभी कुछ की ओर उन्मुख करती रही पर, न मैं कही खुल कर गया न कही इस लायक कोई जगह थी । इसी वीच देश को कई हादसों से गुजरना पडा और मुझें मन ही मन खुशी हुई कि विस्फोट हो तो रहा है । उन्हीं हादसों के क्रम में जनमत संग्रह आया, और मैंने उसमें खुलकर वहुदलिय व्यवस्था का प्रचार किया । मुझे लगा कि यह हमारे सपनों की मंजिल का पहला कदम है । हमारी यात्रा इसी कदम से शुरु होगी । परन्तु लोगों ने इस यात्रा के पहले कदम को ही दफन कर दिया । जो शोषक थे, जो अत्याचारी थे, वे तो दफन करने में लगे ही थे परन्तु जो इसका अगुवा थे वही इसको दफन करने में सहायक हो गये । सच ताज्जुव हुआ था मुझे जब उन्होंने ५ लाख रुपया लेकर अमेरिका की ओर कूच किया था और फिर वहा‘‘ से लौट विद्यार्थीयों के द्वारा अपने निवास पर पहु‘‘चाये गये घास को खाया था । आखिर उनकी मृत्यु उस घास को खाने के वाद ही हुई थी । हम कुछ भी कहें लेकिन इतिहास को, हम

सबको केवल उसी व्यक्ति का खामियाजा भुगतना पड रहा है । वह व्यक्ति भीतर से ठीक नहीं था, हम तराईवासियों के लिए तो और ठीक नहीं था । इसलिए उस व्यक्ति का ऐसा दुखद अन्त हुआ । मेरे सारे सपनों पर पानी फिर गया था । मैंने उस व्यक्ति को श्रद्धांजली तो दी थी पर मन ही मन मैंने उसे कभी माफ नहीं किया ।

दूसरा हादसा भी नेपाल के इतिहास में पहली वार हुई थी और मुझे गिरफ्तार कर लिया गया था । मेरे ही जैसे कितने ही निर्दोष और कई लोगों को भी गिरफ्तार कर लिया गया था जिनका इस घटना से कही कोई सम्बन्ध नहीं था । मैं हक्का वक्का एवं अवाक रह गया था कि यह क्या से क्या हो गया ? मैं अपने वच्चों का सपना बुनते वुनते यह कहा‘‘ आकर प‘‘ँस गया ? मेरा तो इसमें कोई हाथ नहीं ,मैं तो कुछ भी नहीं जानता ? फिर भी मुझे इन नेल एवं हथकडियों में भूखा, प्यासा क्यों रखा जाता है । मुझसे पूछा गया :-

“क्या जानते हो तुम ?”

“मैं कुछ भी नहीं जानता ।”

“क्या यह भी नहीं जानता कि यहा‘‘ पर यह घटना हुई है ?”

“जानता हू‘‘ ।”

“किसने कराया है इसे ?”

“मैं क्या जानू‘‘ ?”

“किसी ने स्वीकार किया है ?”

“हा‘‘ ?”

“किसने ?”

“राम नें ।”

“तुम उन्हें जानते हो ?”

“हा“ जानता हू“ ?”

“कैसे जानते हो ?”

“वे एक वरिष्ठ अधिवक्ता रह चुके हैं ।”

“ह“ ।”

“जब उसने स्वीकार किया है तो फिर उसने किया है यह क्यों नहीं कहते ?”

“एयर इण्डिया का प्लेन क्लैश हुआ है । तीन ग्रप अपने अपने ढंग से इसका दावी किया है । किसको कहा जाय कि किसने किया है ?”

“हू“, इतनी जानकारी ?”

वस मेरी इतनी जानकारी मेरा दुश्मन हो गया । मैं एक संवेदशनशील व्यक्ति हू“ और संसार की अधिकांश घटनाओं पर चौकन्ना होकर सोचता हू“ । वस मेरी यही सोच, मेरी यही संवेदनशीलता, मेरा दुश्मन हो गयी । मैं जरुर इससे कहीं से जुडा हू“ । फिर जुल्मों, सितम के जिस दौर से गुजरना पडा मुझे वह मानवता के इतिहास में किसी भी सभ्यता के इतिहास में कलंक वनकर आयेगा । न खाना , न पीना, न सोना न जगना, सब दुश्वार हो गया । कोई भी आता और अपने वूटों, लातों, हंटरों का वारिस कर जाता । हाथ उपर वांध कर मेरी पीठ पर कोडे वरसते और मैं

DO NOT COPY

वधे वंधे खडे खडें वेहोश हो जाता । जव पानी मा“गता तब गिलास में पेशाव भर कर मेरे होठों से लगा दिया जाता । ये मनुष्य कहलाने वाले दरिन्दे, पशुपतिनाथ से अपने कल्याण की कामना करने वाले दुष्ट, शान्तिक्षेत्र का नारा देने वाले राक्षस अपनी हर दरीन्दगी का उदाहरण पेश कर चुके हैं मेरे साथ । मैं उनके हर जहर को पचाकर यहा“ आया हू“ ।

मुझे गोली मार देने की आज्ञा को किसने ठुकरा दिया यह मैं नहीं जानता पर, मुझे उसके प्रति कोई सद्भावना नहीं है । मुझे मारने, जिलाने एवं छोडने का हक मैं किसी को नहीं देता । जब मैं खुद व खुद मरने लगा, लोगों ने मुझे छोड दिया ।

उसके वाद मेरी नौकरी एक कव्रगाह की नौकरी हो गयी । मेरे चारों ओर भूत-प्रेत म“डराने लगे । मैं जहा“ जाता उन पिशाचों को अपना पीछे करते हुए पाता । यह देश मेरा अपना है । इसमें मैं स्वतन्त्र हू“ । इसने हमारे अस्तित्व की रक्षा की है, यह कहना विल्कुल वेमानी हो गया । खाते-पीते, सोते-जागते, उठते-बैठते मेरे चारों ओर इन्टेलीजेन्स के साये म“डराने लगे । सारा देश मुझे एक कव्रगाह की तरह लगने लगा । कव ये लोग मुझे इस कव्रगाह में दफन कर देंगे इसका कोई ठिकाना न रहा । मैं अपने अस्तित्व की तलाश करने लगा । इस वेमानी जीवन की क्या अर्थवत्ता है, मैं दिन रात यही सोचने लगा । यह वीवी, ये मासूम वच्चे, यह नासमझ वाप, भाई, ये लोग, यह सरकार, यह व्यवस्था, इन सबके वीच मेरे जीवन का क्या अर्थ रह गया है ? मुझे क्या करना चाहिए, क्या नहीं

करना चाहिए दिनरात अब यही सोचने लगा । क्या ये मासूम बच्चे, क्या ये खेत खलिहान, ये पेड, यह धरती, मुझे जन्म देनेवाली मा‘‘, ये सब मेरे रास्ते रोक लेंगे ? नहीं ये लोग मेरे रास्ते नहीं रोक सकते । इनसे और इनके लिए तो मुझे अपना रास्ता प्रशस्त वनाना है । और मैं अपने जीवन का कोई अर्थ देने के लिए, अपने अस्तित्व एवं स्वतन्त्रता के लिए, अपने बच्चों का भविष्य ढूढने के लिए, उन सबको छोड कर एक दिन घर से निकल आया । और अब हम यहा‘‘ पहु‘‘चे हैं ।

अब तक तुमने यही सोचा होगा कि मैं क्या सुनाता रहा । यह मैंने अपनी कहानी सुनायी या किसी और चीज को जोड-जोड कर अपनी कहानी वनायी । पर नहीं यही मेरी कहानी है, यह हम सबकी कहानी है, यही हमारा इतिहास है । वुद्ध की इस धरती पर आओ हम वादा करें कि हम इस इतिहास को नये सिरे से लिखेंगे । अपने-अपने बच्चों को त्याग कर नियति ने हमें बुद्ध की इस प्रथम धरती पर क्यों लाया है । इसलिए और सिर्फ इसीलिए ।

दो-दो आ‘‘खों ने एक दूसरे को देखा, आ‘‘सुओं के कुछ वू‘‘द उनमें से लुढके । नीचे दो-दो हाथ एक दूसरे से मिलकर भींच गये मानों कोई प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किये हों । सामने सीने ने सीने एवं कंधों ने कंधे से चिपट एक दूसरे का सहारा वना ।

४

दिन वही ढल गया । वोधिवृक्ष की शीतल छाया में सभी परिताप मिट गये । शाम हुई, सूरज ने अपनी यात्रा तय की । संजय और रचना ने अपनी यात्रा शुरु की । वे वहा‘‘ से चले । तय हुआ कि वहा‘‘ से कही जाने से पहले रात स्टेशन पर काट लेंगे । होटल के पैसे नहीं हैं । वही पर तय करेंगे कि हम कहा‘‘ जा‘‘य और फिर किसी काम की तलाश करेंगे । फिर हमारी अन्य योजनायें बनेंगी ।

रात स्टेशन पर गुजार कर अलह सुवह वे दोनों पा‘‘व पैदल शहर ही ओर चले । तय हुआ कि वे लोग कलकता जायेंगे और कलकत्ते की गाडी १० बजे दिन में थी । उन लोगों ने सोचा कि इतनी देर में शहर भी देख लेंगे और उधर से ही कुछ नास्ता वगैरह करते आयेंगे । अटैची हाथ में लिए, एक अप्रतिम सुन्दर युवती के साथ सडक पर जा रहे वे दोनों इस शहर के लिए अजनवी लग रहे थे । इतने में एक व्यक्ति आगे आया और सडक पर से कुछ उठाते हुए संजय से बोला :-

“इस कपडे की गठरी में क्या है , क्या यह आपका है ?”

DO NOT COPY

“   ” संजय ने कोई जवाव नहीं दिया, पर कोई चीज रचना की भी हो सकती है, यह सोचकर उसने रचना की ओर देखा। तबतक आदमी पोटली लेकर चला गया। तबतक एक और आदमी आया जो एक यात्री जैसा लगता था। वह संजय के साथ-साथ चलते हुए बोला कि क्या उसकी कोई चीज गिरी है ? वह आदमी वतलाते हुए उससे पूछ भी रहा था। अभी संजय उस आदमी को जवाव दे ही रहा था तब तक आगे से एक व्यक्ति दौडता हुआ आया और हा“फते हुए संजय एवं उस दूसरे व्यक्ति से कहा कि क्या वे लोग रास्ते में एक कपडे में व“धी हुई कोई चीज पायी है ?

“हा“-हा“ पायी है। एक आदमी ने उसे उठाया है। वह अभी इधर ही होगा। क्या चीज है वह ?”

“उसमें थोडा सोना वंधा था जिसे मैं विदेश से लेकर घर जा रहा था। वडी मुशीवत हो गयी। मेरी सारी कमायी खतम हो गयी।”

फिर वह विना कुछ पूछे वदहवास सा उसे खोजते हुए आगे निकल गया। वे लोग यही रहो, यही, वह मिल जायेगा कह कर उसे रोके ओर अब संजय, रचना और वह दूसरा व्यक्ति पोटली उठाने वाले उस आदमी को इधर उधर देखने लगे। वह आदमी सडक के दूसरे किनारे पर दिखलाई पड गया। दूसरा व्यक्ति उसे देखकर पूछने लगा कि वह पोटली कहा“ है ? उस व्यक्ति ने कहा कि मैंने उसे फेंक दिया। पहला व्यक्ति उसे दवोचते हुए उसी गली में ले गया जहा“ वह फेंकने की वात कह रहा था। यह सारी घटना संजय के लिए एक तमाशा वन गयी। वह उस वदहवास आदमी का सहयोग करना

चाहता था। वहुत से लोग थे, पर कोई उस घटना से वाकिफ नहीं हुआ। पोटली उठाया हुआ आदमी भी अब अपनी ही पोटली को खोजने लगा। उसके पीछे पीछे वह अजनवी व्यक्ति भी उसको खोजता चला। और उनके पीछे एक तमाशवीन की तरह उत्सुकतावस संजय और रचना भी चले। खोजते खोजते वे दोनों काफी दूर चले गये जहा‘‘ की सकरी गली से अब संजय और रचना ने लौट जाना चाहा। इसी वीच एक दवंग आवाज आयी।

“अटैची को छीन लो और इस लडकी को उठा लो।”

संजय कुछ समझे समझे तबतक उसके हाथ से अटैची छीन लीया गया और विजली की फूर्ती से किसी ने रचना का मुह‘‘ दवोच दिया और एक घर में जा घुसा। यह सब इतनी फुर्ती से हो गया कि संजय हक्का-वक्का रह गया। अब जाकर उसे पता चला कि वह ठगा ही नहीं गया है वल्कि एक खडयन्त्र में फ‘‘स गया है जिसमें उसके पैसों के साथ रचना की इज्जत एवं अपनी जान का भी डर है। पोटली उठाने वाला, उसको खोजने वाला अजनवी एवं वदहवास भागता हुआ युवक सबके सब एक गिरोह के ही व्यक्ति थे जिन्होंने संजय को एक मालदार अजनवी समझ कर ठगने की योजना वनायी थी। अब वह क्या करे। जिसकी सहायता करने के लिए वह चला था, उसी के हाथो वह लूट गया था। हे भगवान ! रक्षा करो !! क्या से क्या हो गया !!! अब इस अजनवी जगह पर क्या किया जाय ?

इतने में एक साइकिल सवार तेजी से आया । वह साइकिल परसे उतरा ही था कि आनन-फानन में ५ नौजवान और आ धमके । अब वह पूरी तरह से गुण्डों से घिर गया है, यह सोचंकर उन सवको तौलने लगा । परन्तु वात ऐसी नहीं थी । वे लोग उस नौजवान संजय को लेकर उस दरवाजे को तोड डाला जिसमें रचना को लेकर लोग घुस गये थे । करीब आधे घंटे की लडाई के वाद वहा‘‘ पुलिस पहु‘‘ची और तब जाकर वे लोग उस दुर्घटना से उवरे । पुलिस के यह पूछने पर कि वे कहा‘‘ से आकर कहा‘‘ जायेंगे । संजय ने सबकुछ सच सच बता दिया ।

“अब कहा‘‘ जाना है तो ?”

“देखिये इन्सपेक्टर साहव, हम लोग, लखनउ से आरहे हैं और नेपाल चले जायेंगे । हमारा क्या है यहा‘‘ । डडेलधुरा में हम नौकरी करते हैं । वीरगंज हमारा घर है ।

“ अच्छा तो ठीक है, जल्दी चले जाइए । यह एक ऐसी वदनाम गली है जहा‘‘ पर लोगों को मारकर फेंक दिया जाता है और उसका सबकुछ छीन लिया जाता हैं । धन्यवाद तो इस साइकिल सवार को दिजीये जिसने इनके पंजो से वचाया ” इन्सपेक्टर ने साइकिल सवार की ओर इशारा करते हए कहा और कुछ गुण्डों को हथकडिया‘‘ लगाकर चलते वने । अब साइकिल सवार संजय की ओर मुखातिव हुआ ।

“मैं वह सबकुछ देख रहा था जो तुम्हारे साथ घटित हो चुका है । मैं इस गली को जानता हू पर, मैं अकेला उनलोगों से लड नहीं सकता था, इसलिए साइकिल से दौडकर अपने नौजवानों को खबर किया और फिर पुलिस में खबर करके आनन-फानन में तुम्हारे पास पहु‘‘चा । अगर तुम चाहो तो घर जाने से पहले मेरे साथ चल सकते हो । तुम जितना दिन चाहो रहकर फिर कभी चले जाना ।”

उसकी आत्मीयता ने संजय को आकर्षित कर लिया और वे लोग साथ चले । उन्हे जाना भी कहा‘‘ था । इसी वहाने इन नेक लोगों से भी परिचय हो जायेगा । उस साइकिल सवार की आत्मीयता एवं आग्रह से वे लोग, उसी के घर में रहने लगे । उसने उन लोगों को आग्रह करके रखा । उनको किसी काम पर लगा देने का वादा करके वह उनकी हर कमी का ख्याल रखने को कहता । संजय ने उसकी आत्मीयता पर द्रवित होकर अपनी सारी राम कहानी सुना दी थी । एक प्रकार का आत्मीय दोस्त वन गया था वह । इस संयोग ने उसे एक अच्छे दोस्त से मिला दिया था । वह भी अपना घर जब नेपाल में ही वताया था तब वे दोनों और आत्मीय वन गये थे । इस तरह १५ दिन वीत गये । उसके आवभगत में कोई कमी नहीं हुई और नहीं इस प्रकार का कोई संकेत कि वह किसी प्रकार का भार वना हुआ हो । एक दिन उसे इस वात की उत्सुकता हुई । उसने उस साइकिल सवार से कुछ पूछना एवं जानना चाहा । रचना उसकी लडकियों के साथ घूमने गयी थी । घर में एक कमरे में वे ही दोनों वैठे थे ।

DO NOT COPY

“पर आपने न अपना घर वताया न नाम वताया । अब मैं जानना चाहता हू“ और इसके पहले मैं आपका नाम एवं पता पूछने का हक रखता हू“ । कब तक मैं यहा“ भार वना रहू“गा ? कोई काम मिलता अथवा मैं अपने घर का रास्ता नापता ।”

“वरखुद्दार सबकुछ मुझे वता देने के वाद अब आप कहा“ जायेंगे ? मेरा नाम जानकर आप क्या करेंगे ? हम अनाम होते हैं । इतने दिनों तक रहने के वाद आपको पता नहीं चला कि आपका काम मिल चुका ? आप अब अपनी ड्युटी पर है ।”

“मैं ...... मैं काम पर हू“ ? कुछ समझा नहीं ? आप अनाम होते हैं । मैं कुछ समझा नहीं ? संजय थोडा आतंकित हुआ, थोडी शंका उपशंका की चपेट में आ गया ।

“तुम तो खामखाह शंका करने लगे । तुम काम पर लग चुके हो । चाहो तो रचना भी । कल तुम्हें हमारे साथ चलना होगा । अपनी आ“खों से देख लेना ।”

“बुरा न माने, मैं शंका करते हुए आतंकित ही नहीं हू“ वल्कि भौंचक भी हू“ ।”

“कल मैं तुम्हे जहां ले जाउ“गा, तुम सब कुछ समझ जाओगे । वस इतना समझों कि वर्षो से तुम जिस काम की तलाश मे थे, तुम्हे वह काम मिल गया है । वरखुदार तुम नहीं जानते मुझे, पर हम सिर्फ तुम्हें ही नहीं, तुम्हारे एक एक क्रिया कलाप, तुम्हारी एक एक मानसिकता को अब हम जान गये हैं और तुम्हे उचित जगह पर ले

आये हें। हमारा काम यही है कि तुम जैसे नौजवानों को ढुढना और उनको उनका काम देना। वस समझ लो तुम्हें तुम्हारे जीवन को अर्थवत्ता मिल गयी है। जिस असन्तोष की आग में तुम अब तक झुलसते आ रहे थे, उसने अपना रास्ता खोज लिया है।"

संजय के लिए वह आदमी और अधिक रहस्यमय हो चुका था। वह उत्सुकतावस कल का इन्तजार करने लगा। शाम को जब रचना घूम कर आयी उसने उसे कुछ नहीं कहा, पर उसे वताया कि कल वह अपने काम पर जायेगा। मुझे काम मिल गया है। रचना के यह पूछने पर कि कौन सा काम मिल गया है उसने कहा कि उसे पता नहीं है, पर कल लौट कर वताउ''गा।

× × ×

रातभर चलने के वाद वे लोग बीच जंगल के एक छोटे से स्टेशन पर उतरे। फिर थोडी दूर पैदल चल कर वे लोग घने जंगल में लोप हो गये। मन में उत्सुकता लिए संजय उस आदमी के साथ जा रहा था। अब उसे कुछ कुछ वात समझ में आने लगी थी। उसने जो कुछ सुना था, वह ऐसी जगह ही होती है। जब उस आदमी ने संजय का फोटो दिखाया और उसका टेप सुनाया तो संजय आश्चर्यचकित रह गया। उस आदमी ने संजय के कंधे को थपथपाते

DO NOT COPY

हुए कहा "डरो मत, हम तुम्हारे ही नहीं तुम्हारे जैसे हर नौजवान की तलाश में होते हैं। हमारे आदमी सारे देश में फैले हुए इसकी टोह लेते हैं और हमारे पास खबर पहु''चती रहती हैं। उचित समय आने पर अच्छी तरह ठोक-ठाक कर, उसके असंतोष की पराकाष्ठा को परख कर हम उससे सम्पर्क साधते और यहा'' लाते हैं। पर तुमसे इस प्रकार का यह सम्पर्क केवल एक संयोग है। पर मन में अगर लगन हो तो संयोग भी उसके काम में सहयोगी होता है। अब तुम चलकर अपनी आ''खों से इस संयोग का साक्षात्कार करोगे कि क्या तुम्हारा जीवन किसी अर्थवत्ता की ओर आकर सार्थक हुआ है अथवा नहीं ? हमने तो वरखुदार अपने घर को फू''क डाला है और कहते हैं लोगों से "जो घर जारो आपनो चलो हमारे साथ।" अब यह तुम पर निर्भर है कि तुम यह काम करोगे या नहीं। तुम चाहो तो तुम लौट सकते हो। हमें तुम पर पूरा यकीन है, इसलिए तुम्हें इतना कुछ वताया, यहा'' तक लाया। उसने फिर कहाः-

"क्या तुम लौट जाना चाहोगे ?"

"नहीं।" संजय ने कहा। वह और अधिक उत्सुकता से भर गया। अब वह बहुत कुछ समझ चुका था। जिस चीज की तलाश थी, वह अपने आप चलकर आ गयी जैसी लग रही थी। उसे लग रहा था, उस जंगल के रास्तों पर वह नहीं चल रहा है वल्कि उसकी मंजिल चल कर उसके पास चली आ रही है। उसका कलेजा धडकने लगा था कि जिसका सपना वह वर्षों से देखता आ रहा है, आखिर कैसा होगा वह सपना। वह सोंच सोंच कर रोंमांचित हो रहा था। उसे

महसूस हो रहा था कि केवल चाहत, प्रेम या सुन्दरता ही रोंमांटिक नहीं होता वल्कि हर वह काम जो मन को पसन्द हो, वह रोंमांटिक ही होता है । संजय अपना मनचाहा काम देखने को वेताव हो गया ।उस घने जंगल के दरख्त, इधर उधर भागते मृगछौने, खरगोश, सब उसके स्वागत में वल्लियों उछल रहे थे । वह मन ही मन वन देवी को प्रणाम कर अपनी मंजिल तय करने लगा । एक वार उसे घर की भी याद आयी, बच्चे याद आने पर मन ही मन उनलोगों से भी क्षमा मा‘‘ग कर अपना लम्बा-लम्बा डग आगे बढाने लगा । हे परमात्मा , मेरे अन्दर किसी प्रकार की कमजोरी न दो । मैं जिस रास्तें पर चल पडा हू‘‘, उसमें किसी प्रकार की कमजोरी की कोई जगह नहीं । सिर्फ त्याग, वलिदान, एवं कर्मठता, कठोरता का सिलसिला है वह ।

चार घंटे चलने के वाद वे लोग एक जगह पर पहु‘‘चे । घोर जंगल के वीच में गुफायें वनी हुई थी । इसे जंगल युग के जंगली मनुष्यों की गुफायें कहे या ऋषि महर्षियों की साधना स्थली कहें । ऋषि मुनियों की साधना स्थली, ज्ञानस्थली जहा‘‘ से मानवता का सूरज उदय होकर, जहा‘‘ से वसुधैव कुटुम्वकम की धारा वहकर नागरिक सभ्यता की दिशा वदलती थी । तब से हमेशा समाज को दिशाहीतना से वचाकर सूरज की रोशनी प्रदान करने का काम क्या इन्ही जंगलों में होता रहा है ? हा‘‘, हा‘‘ इन्ही जंगलों में होते रहे हैं । इन्ही जंगलों की कठोर तपस्याओं से, इन्हीं जंगलों के शरण में आकर अत्याचार एवं अनाचार को मिटाने का रास्ता खोजा गया है ।

DO NOT COPY

राम ने इन्हीं जंगलों में भटक भटक कर रावण का नाश किया है, कृष्ण ने इन्हीं जंगलों में भटक भटक कर अपने जीवन की भगवत्ता प्राप्त की थी, पाण्डवों ने इन्हीं जंगलों में भटक भटक कर पाशुपतास्त्र प्राप्त किया, दुराचारियों के विरुद्ध वल संगठित किया । इस जंगल के शरण स्थल ने हमेशा हमारे जंगलीपन को दूर करने का काम किया है । मानवता का इतिहास लिखा है इस जंगल नें । आज इसी इतिहास को लिखने आया है वह । वह मन ही मन उस आदमी के प्रति कृतज्ञता से भर गया ।

एक सीटी वजी

एक .... दो .... तीन .... तीस

चारों ओर से खम खम, तीस नवयुवकों ने आकर दोनों को घेर लिया । सभी नवयुवक सीधे साधे, दुवले पतले पर फूर्तिले एवं तेजीले दिखलाई पड रहे थे । उन सबके चेहरे पर एक अपूर्व तेज, एक अपूर्व तपस्या एवं एक अपूर्व संकल्प का भाव दिखलाई पड रहा था । ऐसे सादे, ऐसे गर्वीले युवकों को उसने अपने अगल वगल कभी नहीं देखा था । सभी नवयुवकों से उस आदमी ने संजय का परिचय कराया सवसे हाथ मिलाकर संजय यही देखकर हैरान रह गया कि सबका कोई नाम नहीं था । एक दो, तीन, इसी तरह सबके नम्बर थे । इसके अलावा किसी का कोई परिचय नहीं था । किसी को इससे अधिक किसी से पूछना नहीं था । वस केवल, नम्बर । न नाम, न टाइटिल, न गा‘‘व , न शहर । सब सबको पहचानता था, सब सवको मदत करेगा, सब एक दूसरे एवं देश के लिए जियेगा पर सब सवसे

DO NOT COPY

अनभिज्ञ, सब सवसे अलग, सब सबसे अपरिचित । थोडी देर में एक अलग किस्म की सीटी वजी और सभी नवयुवक वापस जंगल में लोप हो गये । उस आदमी ने संजय से वताया, हम न अपना परिचय किसी को देते हैं न किसीका परिचय लेते हैं । अपनी गोपनियता को हम इसी तरह नहीं रखें तो हमारा मिशन पूरा नहीं होगा । अगर किसी ने किसी से उसका परिचय पूछा, यह पता चल जाय तो परिचय पूछने एवं वताने वाले दोनों को गोली मार दी जाती हैं । यहा‘‘ का पत्ता भी यहा‘‘ के सर्वोच्च नेता के विना नहीं खडखडाता । सवका नाम एवं पता केवल उनके ही पास होता है । और दूसरा हू‘‘ मैं । वस मुझे एवं उनको इन दो लोगों को ही हमारे लोगो के नाम पता होते हैं । वाकी लोगों को कुछ पता नहीं होता है । तुम कल से यहा‘‘ का अभ्यास देखोगे ।

संजय को एक वार यह लगा कि वह कहा‘‘ आकर फ‘‘स गया है । इतने कम लोग और इतनी वडी क्रान्ति । केवल तीस नवयुवक और सारे देश का आन्दोलन, सम्पूर्ण क्रान्ति क्या केवल इतने ही लोगों से पार लग जायेगा ? वह वहुत सा प्रश्न पूछना चाहता था । उसने उस आदमी की ओर प्रश्न भरी निगाहें डाल कर बोला

“मैं कुछ पूछना चाहता हू‘‘ ।”

“पूछ सकते हो, हालाकि हम यहा‘‘ आने के वाद और किसी को इसका इजाजत नहीं देते हैं । लेकिन सरदार की आज्ञा कुछ इसी तरह

है कि मैं तुम्हारे हर कुतुहल, हर प्रश्न का जवाव दू“ । अन्यथा यहा“ आने से पहले युवकों को अपने प्रश्न गिराकर आना पडता है । जिस तरह भगवान की भक्ति की जाती हैं, केवल, श्रद्धा एवं भक्ति को लेकर । वस यहा“ आकर हर युवक के पास प्रश्न नहीं केवल संकल्प एवं तपस्या होती है । पता नहीं, तुम्हारे उपर सरदार की खास रहम है ।

“मेरे उपर ?”

“हा“ तुम्हारे उपर उनकी कुछ खास रहम दिखलाई पडती है । सरदार यह सलूक कुछ खास खास युवकों के उपर ही करते हैं जिन्हें वे कुछ खास जिम्मेदारी सौंपना चाहते हैं । हो सकता है वे तुम्हे कुछ खास जिम्मेदारी सौपना चाहते हों ।”

“वे जो हमें जानते भी नहीं , वे जिनसे हमारी कोई मुलाकात भी नहीं हुई, हमें अभी से जिम्मेदारी सौंपना चाहते हैं ?”

“ऐसी वात नहीं है । वे तुम्हें यहा“ आने से पहले ही तुम्हारा सब कुछ जानते है । हो सकता है कि उन्हें तुम्हारे वारे में, तुम्हारे व्यक्तित्व में कोई खास खूवी दिखलाई पडी हो और इसलिए वे ऐसा चाहते हों ।”

संजय को इस वात की खुशी हुई कि उसको विशेष महत्व के लायक समझा जा रहा है पर वहा“ के वातावरण से उसे संतोष नहीं हुआ । उसने इस वात को प्रकट कर ही दिया ।

DO NOT COPY

"यह तो मैं समझा और मुझे इस वात को जानकर खुशी हुई। परन्तु मैं कुछ संतुष्ट नहीं हुआ। ये तीस नवयुवक, हमारा, सम्पूर्ण देश, सम्पूर्ण क्रान्ति, कैसा वृहत्तर प्रश्न !"

"हा" तुम्हारा यह पूछना ठीक है विल्कुल। —पर यहा" पर रहकर तुम समझ जाओगे। इसलिए कहा जाता है कि केवल मन में मन सूवे वा"धने से कोई काम नहीं होता। उसके लिए ट्रेनिंग, उसके लिए खोज, उसके लिए साहस लेकर अग्रसर होना सवसे वडी वात होती है। ये तीस नवयुवक एक नहीं तीस-तीस सम्पूर्ण क्रान्ति को कर सकने में सक्षम हैं।

"वह कैसे ?"

"वहुत वचकाना प्रश्न।"

"कैसे ?"

"अच्छा बोलो, गा"धी के वारे में जानते हो ? जय प्रकाश के वारे में जानते हो ! जवाहर लाल के वारे में जानते हो ? माओ-से-तु"ग, लेनिन को जानते हो ?

"हा" जानता हू"।"

"वे लोग कितने थे ?"

"क्या मतलव ?"

"मतलव कि ये सभी लोग अकेले थे। एक एक आदमी, एक अलग अलग क्रान्ति करने के लिए सक्षम। एक एक आदमी, अपना अपना युग लेकर चलने वाला व्यक्ति। हम यहा" ऐसे ही लोगों को पैदा

DO NOT COPY

करते हैं । हम यहा“ पर ऐसे ही लोगो को वनाते हैं । ये तीस व्यक्ति अपने साथ तीस सौ वरस का इतिहास लिखना जानते हैं । एक व्यक्ति अपना युग, अपना इतिहास, अपना हस्ताक्षर, इस आकाश पर करने वाला । तुम कल कुछ और देखोगे ।”

संजय को उस व्यक्ति की गम्भीरता एवं–_आत्म–विश्वास पर आश्चर्य हुआ । उसे लगा यह व्यक्ति विल्कुल ठीक ही नहीं कह रहा है वल्कि उसे भी एक युग का पर्वतक वना दिया है । संजय ने उसकी चमकती हुई आ“खों की ओर देखते हुए उसके आगे अपने दोनों हाथ जोड दिये । उसके दोनों हाथों को पकड कर उस व्यक्ति ने उसे “गुड लक” कहा और फिर उसकी पीठ थपथपाते हुए उसे एक ओर चलने का इशारा किया । संजय उसके पीछे पीछे हो लिया । ~~सिधे~~ दोनों ने एक गुफा में प्रवेश किया । एक विशाल शस्त्र भण्डार ! स्टेनगन, मशीनगन, राइफल, साधारण भरुवा, पिस्टल, चाकू, छूरा, खुकरी, भाला, ग“डासा, फरसा, वरछी, वल्लम, तीर, धनुष आदि दुनिया“ भर के शस्त्र इस विरान जंगल में देखकर, उन्हे वह देखता रह गया । कही कही भोले में कुछ ट“गा हुआ था जिसे वह समभ नहीं सका कि वह क्या है । इतने कम लोगों के लिए इतने शस्त्र, थोडी समभ में नहीं आ रही थी । उस आदमी ने कहा कि किसी भी आगन्तुक का पहला दिन हमारे इन्हीं परिचयों से होता है । तुमने हमारे क्रान्तिकारीयों से परिचय प्राप्त किया और अब हमारे अस्त्र-शस्त्रों से परिचय प्राप्त करो ।

"यह पिस्टल .... जब हम लोग शहर जाते हैं तो इसे साथ रखते हैं । यह स्टेनगन, मशीनगन, विभिन्न छापों के समय झुण्ड में रखकर चलते हैं ।

"लेकिन इस भाला , वरछी, तीर आदि का आजकल कया जरुरत है ?"

"जरुरत है वहुत जरुरत है । कव ये शस्त्र हमारे किस तरह प्रयोग करेंगे इसका कोई ठिकाना नहीं । जब आग्नेय अस्त्र चूक जाते हैं, तब जब गोलिया" समाप्त हो जाती है तब ये काम आते हैं और वहुत काम आते हैं । इसके अलावा ये हमे इस जंगल में शिकार एवं अन्य कई वातों में सहयोग करते हैं ।"

"और ये झोला जो ट""गें हुए हैं ।"

"इसमें वे सामाग्रींया" हैं । जिनसे आज की सर्वाधिक संहारक चीज वनायी जाती है ।

"सर्वाधिक ?"

"हा", सर्वाधिक संहारक अस्त्र,वम । हम इन्हें छोटे छोटे से लेकर वडे वडे वमों टाइम वमों आदि का ट्रेर्निङ्ग देते हैं ।"

सब कुछ देख चुकने के वाद संजय के मन में एक विचार उभरा , एक ऐशा प्रश्न, जो एक शाश्वत मुल्य की स्थापना की वात करता है । मनुष्य को क्या चाहिए ? एक शाश्वत शान्ति, जिसके साये तले उसका सम्पूर्ण विकास हो सके । फिर ये संहार अस्त्र-शस्त्र उसने क्यों अपनाये ? क्या जरुरत है इसकी ? ये सभी अस्त्र आखिर मानवता का खून ही तो पीते हैं । उसने पूछा :-

DO NOT COPY

“वैसे तो मेरे पहले दिन ही यह पूछना गलत ही नहीं होगा वल्कि हो सकता है इसे आप मेरी कायरता भी समझे । पर यह पूछे विना मैं नहीं रह सकता । आखिर इन अस्त्रों की क्या जरुरत है ? क्यों हमने इस महा–विनास का जामा पहना है ? हमारे युग में जवकि महात्मा गा“धि जैसे शान्ति एवं सत्य के संस्थापक सफल हो चुके हैं हमने इन शस्त्रों से सफलता के असफल प्रयत्न में क्यों लगे हैं । ये सभी लोग अपने अपने घर द्वार, वाल बच्चे छोडकर यहा“ इस आग में झुलसने क्यों आये हैं ? इनके जीवन में किसी प्रेम, किसी मनोरंजन किसी शान्ति की कही कोई नामोनिशान कहा“ है ?

“तुमने ठीक कहा है । हम भी यही सोचते हैं । हमारे भी जिस्म एवं हमारी भी आत्मायें हैं, हमारी भी संवेदनायें हैं । और सच पूछो तो अपनी इन्ही अत्यधिक संवेदनाओं के चलते हमने इस जीवन को अंगीकार किया है । आखिर जिस सरकार के विरुद्ध हमने अस्त्र उठाये हैं, उस सरकार ने आजतक क्या किया है ? ये ८० प्रतिशत रुपये खाने वाले मिलीट्री, ये पुलिस, ये सभी सरकारी जासूस क्यों है ? सरकार चलाने वाले को भी, ये राजे महाराजे को भी तुम्हारी दलील के अनुसार इनकी क्या जरुरत है ? कोई जरुरत नहीं पर वह सवको हम पर जुल्म ढाने के लिए, केवल अपने को सत्ता में वनाये रखने के लिए सदियों से इन अस्त्र-शस्त्रों, का प्रयोग नीरीह एवं निहत्थी जनता पर करती आयी है । जिनका तूने नाम लिया न गा“धी, उनकी हम पूजा करते हैं पर सत्ता पर वैठने वाले लोग हमेशा फिर से जनता को

DO NOT COPY

अपने नये खडयन्त्रों में कसते आये हैं । तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हम गा‘‘धी की अगली कडी हैं, अगली पीढी हैं । हमारी क्रान्ति वही से आगे वहती है । हम अैर गा‘‘धी अलग-अलग नहीं हैं ।

“वह कैसे ?”

“अभी संसार में सम्पूर्ण क्रान्ति नहीं हुई है । हर क्रान्ति महात्मा गा‘‘धी से शुरु होती है । गा‘‘धी का युग संसार की क्रान्ति का पहला कदम है । जब लोग क्रान्ति का पहला पाठ पढते हों, जब उनको अपना देश और अपना घर छोडकर कही जाना न हो जब लोग अधिक यूनाइट हों तो गा‘‘धी से आन्दोलन शुरु होता है । जब वह आन्दोलन, जब वह क्रान्ति, अधिक विकसित होती जाती है तब वह हमारे स्टेज पर पहु‘‘चती है । गा‘‘धी की क्रान्ति और हमारी क्रान्ति में क्या फरक है, जानते हो ?”

“बहुत ज्यादा नहीं जानता हू‘‘ ।”

“केवल एक बुनियादी फर्क है ।”

“क्या ?”

“यही कि गा‘‘धी का आन्दोलन सरकार को मजवूर करती है । वह अपने ही वनाये हुए कानून को, अपनी ही वनायी एवं फैली हुई शान्तिको पहले भंग करे । हम यह काम इसकी उल्टी दिशा में करते हैं । हम खुद उसके बनाये कानून को तोडते हैं । सरकार शान्ति पूर्ण जुलूस एवं प्रदर्शन पर रोक नहीं लगाती और ठीक उसके अर्न्तगत रह कर लोग जालियावाला वाग में जमा होते हैं । सरकार को यह

वात वर्दास्त नहीं होती और वहा“ जाकर उन निहत्थे लोगो पर गोलियां चलाकर खुद कानून को तोडती है । गा“धी को इसका जबरदस्त विरोध करने का वहाना मिलता है, अपने पक्ष में जनमत तैयार करने का अवसर मिलता है ।

हम इसके उल्टा काम करते हैं । जब एसेम्वली में लोग बैठ कर छलफल कर रहे होते हैं तो हम उनपर वम फैंक कर, कानून तोडकर उनकी आ“खें खोलते हैं कि तुम्हारे कानून हमारे रक्षक नहीं हैं । गा“धी उनके द्वारा उनके ही कानून तुडवाकर उनकी गलतीयों के लिए सोचने को मजवूर करते हैं । वह प्रक्रिया इसलिए हमसे लम्बी एवं थकाउ हो जाती है तथा सरकार को अपना खडयन्त्र करने का काफी अवसर मिलता है । हम वैसा मौका नहीं देते । हम सीधे उनकी छाती पर वार करते हैं, उसे हटाते हैं । गा“धी जी के आन्दोलन को सरकार हमारे आन्दोलन मे परिवर्तित कर उसे कुचलने का प्रयास करती है । वह शान्तिपूर्ण आन्दोलनों में वमों, पिस्तौलों का खुद अपने आदमीयों से प्रयोग करवा कर उसका इल्जाम शान्तिपूर्ण आन्दोलनकारियों पर लगाती है, उनका दमन करती है । हम इसका सीधा इल्जाम अपने उपर लेते हैं और उसी की भाषा में वात करते हैं । इसलिए वह हमसे अधिक डरती है । अधिकांश सरकारों के इन्ही रवैयों ने गा“धी–वाद को हटाकर क्रान्ति का रुप हमारे रुप में बदल दिया है । पर यह वही क्रान्ति है । आज

सारी दुनिया" में हमारी क्रान्ति जोरों पर है । हम किसी सरकार से अपनी कमजोरी का इजहार नहीं करते ।"

"किसी भी सरकार के पास एक वहुत सैन्य दल होता है जिसको भेदने के लिए लेनिन एवं माओ ने वैसे ही बोलसेविक आदि एक वहुत वडे सैन्य दल का गठन किया था लेकिन हमारे ये तीस आदमी ?" " हा" यह वात ठीक है । पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि लेनिन एवं माओ ने कितने वडे कै–नवास पर काम किया था । जिसको जितने वडे कैनवास पर काम करना होता है उनको उसी अनुसार इसका गठन करना चाहिए । माओ और लेनिन की तरह सैनिक, संगठन की आवश्यकता हमें नहीं है । हमारे पास न उतने लोगों को सम्भालने का खर्च है और न आदमी । फिर भी हमें अपनी क्रान्ति को आगे वढाना है , देश एवं सरकार की संरचना को बदलना है । यह इसी अत्याधुनिक तरीके से हो सकता है । कम लोग, अत्यधिक गोपनियता, सूक्ष्म वैज्ञानिकता एवं अथाह साहस तथा वहादुरी के साथ हमने अपना काम आगे वढाया है । हमारे साथ सारी जनता होगी । हमारे अपने सैन्य दल होगे । हम ३० से ३० हजार होंगे । .... खैर छोडो सभी वातों को । फिर कभी करेंगे । अव हम खाना खाने चलेंगे ।

फिर उनलोगों ने अपने सभी साथियों के साथ जंगल से लाये गये फल, साग, सब्जी तथा भूने हुए हरिण एवं तीतर के मा"स खाये और आराम करने लगे । तय हुआ कि आज तीन बजे संजय उन लोगों का अभ्यास देखेगा ।

ठीक तीन बजे उसे वह करतव देखने को मिला जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। विभिन्न कलावाजियों, स्टेनगन तथा मशीनगन का अभूतपूर्व कर्तव्य, मारक एवं रक्षक मुद्राओं का प्रदर्शन, खन्दकों की वनावट, यह सब उस जंगल में देखकर दंग रह गया। सभी लोग एवं खंदक पेड पत्तियों में पूरी तरह ढके हुए कुछ दिखलाई नहीं पडता था। भीतर ही भीतर एक वहुत वडा मैदान वना था। सभी लोग खन्दक से होकर भीतर के उस मैदान में इकठ्ठे होकर वेधडक सभी कलायें दिखला रहे थे। वाहर से लोग जाये भी तो उन्हें कहीं कुछ कहीं कोई निशान नहीं दिखलई पडेगा। इतना सुगठन, इतनी सावधानी एवं सूक्ष्मता उसने कहीं नहीं देखी थी।

करीब डेढ घंटे के प्रदर्शन के वाद छुटी मिली और हुक्म हुआ कि अब वे सभी लोग सिनेमा देखने जायें। सभी लोग अनन-फानन में सादे वस्त्रों में होकर जंगल में अलग-अलग दिशाओं में फैल गये। विखर गये। संजय को कौतुहल हुआ कि वे लोग अलग-अलग दिशाओं में क्यों विखर गये ?उसने पूछा :-

"ऐसा क्यों और क्या उनको सिनेमा भी दिखलाते हैं ?"

"ये सभी लोग वैसे ही जीवन की हर चीज का उपयोग करते हैं जैसे तुम अपने घर में। यह सिनेमा दिखाना भी हमारे ट्रेनिङ्ग के अन्तरगत आता है। ये लोग दौडते हुए यहा" से जायेंगे और सिनेमा देख चुकने के वाद दौडते हुए यहा" आयेंगे रात को। अलग-अलग दिशाओं में ये लोग इसलिए हो गये ताकि इन्हे कोई एक साथ देख

DO NOT COPY

कर किसी प्रकार का शंका नहीं करें। और कुछ देखना हो तो चलो शहर में, तुम अपनी आ“खों से देख लेना। यह सब हमारा ट्रेनिङ्ग है।

और वे दोनों भी सिनेमा देखने चले गये। ये लोग नजदीक के स्टेशन पर आकर एक सवारी पर वहा“ के लिए चले। वहा“ संजय ने उनलोगों को पुकारना चाहा, पर लपक कर उस आदमी ने उसे रोक लिया। ना ऐसा मत करो संजय। तुम कया समझते हो कि यह कठिन मेहनत एवं किसी लक्ष्य के लिए समर्पित ये सभी युवक यहा“ सिनेमा देखने आये हैं ? नहीं भाई अब ये इतनी दुर से दौडते हुए आए है और फिर यहा“ से दौडते हुए जायेंगें हा“ सिनेमा देखकर दौडते हुए जायेंगे। सिनेमा शहर, इस शहर की दूरी, यह सब हमारे ट्रेनिङ्ग के लिए एक वहाना है। तभी उनमें से एक युवक ने अपने ही एक साथी से आपना परिचय देते हए वहा से लखनउ जाने के ट्रेन के वारे में पूछने लगा। दूसरा युवक भी विल्कुल अनजान वनकर उसे ट्रेन के समय सारिका के वारे में वताया और चलते वना।संजय ने उन्हें आश्चर्य से देखा। इस आदमी ने भी संजय को देखा और ह“सते हुए वोला

“हा“ भाई संजय, इनमें से कोई किसी को नहीं पहचानेगा। यह भी हमारे ट्रेनिङ्ग का एक हिस्सा है और उसका रिहर्सल करने हम यहा“ आकर इधर उधर छितरा जाते हैं।

थोडी देर में संजय ने देखा एक नौजवान भीखारी का भेष वनाकर आया है। कोई कोढी का भेष वनाकर सिनेमा हाल के पास

बैठ गया । कोई साधु के भेष में कंठट्टी धारण हर इधर-उधर टहल रहा है । इस तरह विभिन्न युवक विभिन्न भेष भूषा एवं भाषा में निपुण आश्चर्यजनक रुप से महारत हासिल किये हुए हैं । उस आदमी ने कहा:-

“संजय, इस तरह हम चारों तरफ एक रक्षा कवच का निर्माण करते हैं । तुम जहा“ जाओगे हमारे आदमी तुम्हारे चारो ओर तुम्हारी रक्षा में रहने के साथसाथ आक्रमण करने में चीते की तरह तैयार रहते हैं । इन लोगों के आगे किसी भी देश का सैनिक फीका ही नहीं पड जायेगा वल्कि हार जायेगा । तुम इनकी ताकत को कम मत समझना । और फिर हमारे देश में इतने लोग तो ५० वार किसी सत्ता को उलट पलटक कर सकते हैं । फिर भी हम ,तुम जो कहते हो उसका भी ध्यान रखकर काम करते हैं । हमने एक धारा को वनाये रखने एवं वीज तैयार करते हरने का संकल्प किया है । हम अगर कुछ नहीं कर सके तो हमारी ही कडी कुछ कर सके इसका हम ख्याल रखकर ही काम करते हैं । हमने इस क्रान्ति को विकसित करने का पहला कदम शुरु किया है और इसे हम तुम्हारे जैसी अगली पीढीयों को सौपते जायेंगे “अब चलो” कह कर संजय के साथ वह स्टेसन की ओर मुड गया ।

× × ×

“पर यह तो वह जगह नहीं, यह कहा“ लाये अब ? ” जिस जगह से संजय उस व्यक्ति के साथ सिनेमा देखने गया था अब यह वही

जगह नहीं थी । जंगल की एक दूसरी जगह थी वह । इसलिए संजय ने उस व्यक्ति से पूछा ।

"हा" संजय, यह वह जगह वही हैं । हमलोग उस जगह से ४० मील दूर आ गये हैं । इस जगह और उस जगह के लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं है । हमारे ये लोग, हमारे वहा" के लोगों को विल्कुल नहीं जानते, विल्कुल नहीं पहचानते । यही हमारे कार्य करने का ढंग है । यह वात सरदार के इशारे से ही तुम्हें वतलायी गयीं है अन्यथा तुम यह सब नहीं जान सकते । तुम सौभाग्यशाली हो कि सरदार ने तुम पर इतना विश्वास किया । उस व्यक्ति ने यह कह कर फिर एक सिटी वजायी ।

इसवार सीटी के वजते ही संजय एक अभूतपूर्व आश्चर्य से भर गया । ठीक उसी प्रकार इस वार चारों ओर से खम खम ४० युवतियों का झुण्ड निकल निकलकर उसके चारों ओर पहुची एवं उसे घेर कर खडी हो गयीं । संजय ने आश्चर्य से एक एक को देखा । सभी सुन्दरता एवं यौन की साक्षात मूर्ति । सबके चेहरों पर तेंज ; निरीहंता एवं विवशता का कोई भाव नहीं । दो युवतिया" तो अपनी पीठ पर अपने अपने बच्चों को लिए हुए थी । उन्हें देखकर संजय और आश्चर्य के साथ उस व्यक्ति को देखा ।

"हा" संजय हमने अपनी क्रान्ति में केवल पुरुषों का ही सहयोग नहीं लिया वल्कि वहुत सोंच समझ एवं ठोक पीटकर हमने इन मजवूर औरतों को भी शामिल किया है । और तुम्हे यहा" आकर

DO NOT COPY

आश्चर्य होगा कि लडकिया“ युवकों से अधिक कारगर एवं वहादुरी के साथ हमारे मिशन में सफल हुई हैं ।”

“ मजवूर ? ” संजय फिर प्रश्न को दोहराना चाहा ।

“हा“ संजय, ये हमारे देश की मजवूर युवतिया“ है जिन्हें सैकडों की संख्या में बम्बई के बाजारों में बेंच दिया जाता हैं । हमने उन्हीं में से संकल्प–शील एवं बहादुर युवतियों को चुनकर अपने ग्रुप में शामिल करके अपने देश की संरचना के लिए तैयार किया है । मैं समझता हू“ अब तुम सवकुछ समझ गये होगे क्योंकि तुम स्वयं इस हादसे के शिकार युवती के साथ हो । तुम चाहो तो इनसे कोई प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शान्त कर सकते हो ।”

संजय सबकुछ समझ चुका था, अब उसके अन्दर क्या जिज्ञासा हो सकती थी । इन मजवूर औरतों ने अपनी सारी विवशता, सारी निरीहता को क्रान्ति की ओर मोडकर शक्ति का रुप धारण कर लिया था । फिर भी एक दो प्रश्न पूछने का लोभ संवरण नहीं कर सका वह । वह दोनों वच्चों वाली औरतों से वह एक के पास गया और बोला :-

“पर तुम अपनी पीठ पर अपने अपने बच्चों को लेकर इस दूरुह एवं वीहड जीवन को अपना कर क्रान्ति को कैसे सफल कर सकोगी ? कहा“ क्या है तुम्हारा ?”

“यह मत पूछो कि कहा“ क्या है मेरा और क्या नाम है मेरा । समूचे नेपाल में मेरा घर है और मैं इस बच्चे को अपने साथ रखती हू“

इसलिए कि इसे मैं इस क्रान्ति से परिचय ही नहीं कर दू“ वल्कि सम्पूर्ण क्रान्ति को इसके सीने में उतार दू“ । मेरे दूध में वहती हुई क्रान्ति इसके खून में वहकर , इसके रग रग में समा जाय । मैं केवल अपने तक ही नहीं वल्कि अपने खून के कतरे कतरे को क्रान्ति में ढालना चाहती हू“ जबतक हमारे देश में हमारी हुकुमत न हों लोगों की परतन्त्रता की जंजीरे न टूट जाय ।”

संजय झेंप गया । उसमें उस युवति के तेज के सामने टीक पाने का साहस न रहा । वह दूसरी औरत की ओर मुडा और वोला :-

“पर तुम तो एक मधेशी युवती हो । हम तो इसकी कल्पना भी नहीं करते । क्या तुमको यहा आकर अपना गा“व, अपने लोग याद नहीं आते ?”

“कई वातें कल्पनातीत होती हैं साहव । मेरे पति की हत्या कर दी गयी । सिर्फ इसलिए कि वे स्वतन्त्रता एवं प्रजातन्त्र की वातें करते थे । पढी लिखी तो मैं भी हू“, पर मेरे पति राजनीति से एम.ए. थे । उनको नेपाल की मौजूदा व्यवस्था से चिढ थी । वे हमेशा स्वतन्त्रता के लिए लडते एवं उनके पक्ष में जनमत तैयार करते थे । सरकार को संदेह था कि उनका सम्बन्ध क्रान्तिकारियों से है । उनको मार दिया गया और उनके कतल में फ“सा कर मुझे ही जेल में भेज दिया गया । उस जेल से भागकर मुझे यहा“ ले आने का श्रेय, इन क्रान्तिकारियों का है । यहा“ आकर हमने वह सबकुछ सीखा, देखा

और पाया कि हमारे ही नहीं वल्कि पूरे संसार में कितना अंधकार छाया हुआ है । वस मेरे पति का सम्बन्ध तो क्रान्तिकारियों से नहीं था पर अब मैं सचमुच उस क्रान्ति से अपने आपको जोडकर उनकी इस अमानत को इसके रंग में रंग डालने का संकल्प कर लिया है । सम्पूर्ण क्रान्ति का संवाहक वनकर मैं अपने जीवन को धन्य समझती हू“ । क्या आपको और कुछ पूछना है ? अपना घर, अपना गा“व किसको याद नहीं आते । वही याद आते हैं कि कैसे हमने इस रास्ता को अपनाया है । एक पंछी जो हजारों मील दूर जाकर दाना चुगती है, पर फिर वही आकर अंडे देती है जहा“ से वह चली होती है । जब पशुपंक्षियों में भी अपनी मातृभूमि का इतना मोह है तो हम मनुष्यों में कैसे नहीं होगी ? पर दुख है कि हमारी मातृभूमि को, हमारे मधेश को वहा“ के लोग हमारे कहने देने से वंचित करने में लगे हुए हैं । वे हमें विस्थापित करने का खडयन्त्र रच रहे हैं । पहाड और मधेश में भेदभाव पैदा करते जा रहे हैं । हम भाई भाई को लडाने का दुष्प्रयास कर रहे हैं ।”

“यो लोग भी पहाडी युवतिया“ है । जब तुम इस तरह की वात करोगी, तो क्या इन लोगों के मन में भेदभाव पैदा नहीं होगा ?”

तपाक से एक दूसरी युवती आकर वोल उठी :-

“नहीं हमारे अन्दर यह भेद भाव पैदा नहीं होगा । हम इसी भेदभाव को मिटाने के लिए, हम इसी भेदभाव की राजनीति को समझ कर तो एक साथ इस क्रान्ति में लगे हुए हैं । हमारी क्रान्ति का एक हिस्सा यह भी है । हम अपनी सत्ता में मधेश की इस संरचना को

DO NOT COPY

परिवर्तित करके एक अभूतपूर्व भाईचारे का मिशाल कायम करेंगे ।"

"क्या आपको और कुछ पूछना है ? " उस मधेशी युवती ने फिर पूछा

उसकी वातें सुनकर संजय का खून खौलने लगा और खुद इस क्रान्ति में कूद पडने और एवं अभ्यास शुरु कर देने के लिए मचलने लगा ।" कुछ नहीं पूछना है वहन । अगर हमारा देश, हमारा मधेश यहा“ तक पहु“च चुका है तो अब हमारी क्रान्ति को कोई नहीं रोक सकता ।" उसने उस युवती को गुडलक कहा और उस व्यक्ति की ओर मुडकर रचना को भी इसमें शामिल कर लेने का आग्रह किया ।

"ऐसा ही होगा" कह कर उस व्यक्ति ने संजय की पीठ थपपायी । फिर वहा“ भी उन लोगों ने उन्हीं कर्तव्यों को देखा और दूसरे दिन वहा“ से वापस लौट गये ।

अव संजय और रचना दोनों अलग अलग खेमों में अपना अपना अभ्यास शुरु कर चूके थे ।

DO NOT COPY

पेरिस का एक भव्य कक्ष । फ्रान्स की राजधानी एवं दुनिया“ के गिनती के नगरों में एक पेरिस, जो राजनीति एवं कला का भव्य इतिहास अपने में समेटे हुए है । यही वह देश है जहा“ से आधुनिक प्रजातन्त्र का जन्म हुआ था । जहा“ से राजनीति अपने विकाश की विभिन्न यात्रायें तय कर चुकी है । सभी लोग अपने काम में मस्त कहीं भागे जा रहे हैं । किसी को किसी के वारे में पूछने का फुर्सत नहीं । ऐसे सम्मेलन के लिए इससे अच्छी एवं इससे सुरक्षिँत जगह दूसरी कहा“ मिलेगी ? सभी लोग भेष बदल कर पेरिस पहु“च चुके थे । सबको अपने अपने कक्ष में आराम करते हुए उस दिन का इन्तजार था । दूसरा दिन आया और निश्चित समय पर सम्मेलन की कार्यवाही शुरु हुई । सर्वप्रथम कार्यवाही अपना परिचय देकर हुआ :-

“मेरा देश फिलिस्तिन, संगठन का नाम फिलिस्तिनी मुक्ति मोर्चा और मेरा नाम नासिर याराफात” एक व्यक्ति सबसे पहले उठा । उसके अगल बगल के दोनों व्यक्ति उठे और फिर वैठ गये ।

“मेरा देश श्री लंका, संगठन का नाम “लीवरेशन टाइगर्स आ“फ तमील एलम” और मेरा नाम विभाकरन ।” उसके ठीक सामने दूसरी ओर बैठा एक व्यक्ति उठकर वोला और बैठ गया ।

“मेरा देश आयरलैण्ड, संगठन का नाम आइ.आर.ए.” और नाम माइकल”

DO NOT COPY

“मेरा देश हिन्दुस्तान, संगठन का नाम गोरखा लैण्ड और नाम सुहास नृसिंह ।”

“मेरा देश क्यूवा, संगठन का नाम क्यूवा डेमोक्रेटिक पार्टी , नाम फिदेलकास्त्रो ।”

“मेरा देश इराक, संगठन का नाम कुर्दिस डेमोक्रेटिक पार्टी । नाम हुसैन हासन”

“मेरा देश नेपाल, संगठन का नाम जनवादी मोर्चा, नाम अग्नि सिंह” सवसे अन्त मे एक व्यक्ति ने उठकर कहा । उसके साथ ही संजय भी उठा । वह भी उस व्यक्ति के साथ नेपाल के प्रतिनिधि के रुप में गया था ।

इसके पहले क्रमशः पाकिस्तान के कवाइली विद्रोही, फिलिपिन एवं निकाराआ के विद्रोही सत्ताधरी पार्टी भी क्रमशः अपने अपने परिचय दिये ।

इन सभी देशों के विद्रोही संगठनों का सम्मेलन नेपाल के जनवादी मोर्चा के निमन्त्रण पर हुआ था । बहुत दिनों से इस तरह का सम्मेलन नहीं हो पाया था । जवसे अपने को प्रजातन्त्र कहने वाले देशों के अत्याचार से विभिन्न देशों में सैनिक तानाशाही और प्राचीन राजशाही का दौर शुरु हुआ और दुनिया के विभिन्न देशों की जनता का दम घूटने लगा तो छटपटा कर उन विभिन्न देशों की जनताओं के वीच से संघर्षशील लोगों के संगठन उभरकर सामने आते गये एवं अत्याचारी सरकारों के विरुद्ध, तानाशाही सरकार के विरुद्ध जे हाद छेड दी । इस अनाचार को देखतें हुए कुछ वामपन्थी सरकारों ने

DO NOT COPY

अपने एक महा–सम्मेलन में ऐसे संगठनों को मदद करने का निर्णय लिया था । तवसे दुनिया“ भर में इस तरह के विद्रोही संगठनों को उभरने का मौका मिला । वे अपने हक एवं अधिकार के लिए लडते आ रहे हैं । इस लडाई, इस जेहाद को तथाकथित प्रजातन्त्रवादी एवं पाखण्डी गोरे लोगों ने दुनिया“ में आतंकवाद को फैलाने का आरोप लगाया । फिर कम्यूनिष्टों में फूट पडता गया । चीन और अमेरिका की दुरी नजदीक आयी । उनलोगों ने इन विद्रोही संगठनों के विरुद्ध प्रतिक्रियावादी संगठनों को वढावा दिया । धीरे धीरे अन्तराष्ट्रिय रुप ले रहे विद्रोही संगठनों में भी फूट पडने लगे । एक अच्छी खासी शक्ति जो दुनिया“ भर में परिवर्तन कर सकती थी अकेली पडने लगी । सभ्यता के इस इतिहास से नेपाल अलग थलग पडा रहा, पर ज्योही जनवादी मोर्चा का जन्म नेपाल में हुआ उसने अपने को सवसे असहाय समभ्रते हुए एक वहूत वडे अन्तराष्ट्रिय सहयोग की जरुरत महसूस कर रहा था । वह फिर से इन संगठनों को एक टेवल पर लाने की कोशिश में जूट गया । यह सम्मेलन इसी संगठन एवं इसके नेता अग्नि सिंह के मेहतन का फल था । फिर सम्मेलन की कार्यवाही आगे वढी । सभापतित्व का भार आइ-आर-ए के उपर सौंपा गया और स्वागत भाषण का भार स्वभावतः जनवादी मोर्चा पर रहा । उसने सवसे पहले उठकर वोलना शुरु किया :-

“ आदरणीय सभापति महोदय एवं विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि भाई, आज मुभ्रे आप सभी लोगों के बीच खडे होकर आपलोगों का स्वागत करके मेरी खुशी का ठिकाना नहीं है । हम

वहुत दिनों के वाद यहा‘‘ एक होने के लिए आये हैं । हमारे इन संगठनों में वहुत से संगठन वहुत विकसित है, वहुत से उससे कम विकसित और वहुत से विल्कुल सिखने की स्थिति में हो सकते हैं । हम इस सम्मेलन के द्वारा सबको एक दूसरे से सहयोग एवं भाई चारा वा‘‘टने के लिए आये हैं ।

मुझे अफसोस है कि यहा‘‘ कूछ लोग नहीं आये हैं अगर वे लोग जान वूझ कर नहीं आये हैं तब तो मुझे इसका वहुत दुख है । अगर वे लोग किसी खास कारण से नहीं आ सकते हैं तो उनको इसका कारण वताना चाहिए । मुझे खुशी है कि कुछ देशों से ऐसे पत्र पहु‘‘चे हैं जो यहा‘‘ अपने प्रतिनिधि तो नहीं भेज सके फिर भी वे हमारे इस सम्मेलन की सफलता के लिए शुभकामना संदेश भेजे हैं ।

हमारा देश नेपाल एक छोटा सा देश है । चारों ओर अद्‌भूत प्राकृतिक दृश्यों एवं प्राकृतिक, सम्पदाओं से भरा हुआ है,। वह एक कृषि प्रधान देश है, पर कृषकों के चूल्हे रोज नही जलते । शिक्षा १.५ है । सभी लोग गरिबी रेखा के नीचे जीते हैं । पर कुछ लोग, गिनती के लोग सारे देश को चूस कर राज्य कर रहे हैं । कुछ दिन पहले तक वह राणा शाही के चंगुल में रहा जबकि सारी दुनिया‘‘ में अन्धकार छाया हुआ था । दुनिया‘‘ के सभी देशों में जब अंग्रेजों का शोषण परकाष्ठा पर था तब हमारा नेपाल भी राणाओं के शाशन के रुप में अंग्रेजों का अर्द्धउपनिवेश रहा । जब राणाशाही का अन्त हुआ,

DO NOT COPY

तब जो व्यवस्था आयी उसे पंचायती व्यवस्था का नाम दिया गया है । तो भाइयों हम यहा“ यह भी छलफल करेंगे कि कहा“ पर क्या शाशन है, क्या प्रजातन्त्र कहने वाले ये तथा–कथित शाशन प्रजातन्त्र है ? अगर नहीं तो हमें इस पर ठोस निर्णय लेना, देना होगा ।

जब इस पंचायती प्रजातन्त्र ने देश में शोषण का हद कर दिया, जब इस पंचायती प्रजातन्त्र ने समूचे देश में लूट एवं वैमनस्य का वीज वो डाला, स्पष्टतः मधेश एवं पहाड के लोगों को लडाकर साम्प्रदायिकता का जहर फैला दिया और जब अपने को प्रजातन्त्र का सरगना कहने वाले लोग इस तथा–कथित प्रजातन्त्र से जा मिले तो हम उस का“ग्रेस नामक संगठन से अलग होकर इस अत्याचार के विरुद्ध लडने का संकल्प किया और अपने जनवादी मोर्चा का संगठन किया ।

परन्तु हमारा देश एक गरीब देश है, हम गरीब हैं इतने वडे संकल्प को कैसे चला सकते है ? मुझे आप सभी लोगों से आशा है कि हमारे इस संगठन को संचालित करने का हौसला, शक्ति एवं सहयोग दें । इस छोटे से ,नन्हें संगठन को जो अभी मुश्किल से सातवा“ वर्ष पार कर रहा है आपलोगों की अपेक्षा है । इतना कह आप सभी लोगों को स्वागत करते हुए मैं अब श्रीलंका को कुछ कहने का आग्रह करता हू“ ।

जय नेपाल, जय अन्तराष्ट्रिय विद्रोही एकता

इसके वाद श्रीलंका के विभाकरन ने वोलना शुरु किया :-

DO NOT COPY

"सभापति महोदय एवं अन्य साथियों । मैं विशेष वोलने में विश्वास नहीं करता इसलिए छोटे से वक्तव्य में कुछ वुनियादी वातों पर प्रकाश डालना चाहता हू" । राजनिति में तीन वाते मूख्य होती हैं : कलम, भाषण, तलवार । मैं इन तीनों में तवलार को सवसे कारगर समझता हू" । कलम से आन्दोलित एवं जनजागृति करना अच्छा होता है । रुसों एवं अन्य लेखकों की तरह । भाषण से जन सभाओं में खडे लोगों को खून में गर्मी पैदा किया जाता है । लेकिन तलवार से लडना इन सबसे कठिन है । और मैं समझता हू" कि हम सबने यही रास्ता अख्तियार किया है । हमारे इस रास्तें में हम सवका सहयोग हो, यही मैं कामना करता हू" ।

हमारा देश श्रीलंका जिसे हमने अपना देश समझा, जिसने श्रीलंका की प्रगति में अपना सब सहयोग दिया, जिसने अंग्रेजों के विरुद्ध लडाई और उपनिवेशवाद से मुक्ति के वाद प्रजातन्त्र की स्थापना की । उसके वाद से सिंहलियों ने अपना खडयन्त्र हमारे विरुद्ध शुरु कर दिया । उसका कहना है कि हमने अंग्रेजों के साथ मिलकर उनपर राज्य किया है, हमने उनपर अत्याचार किये हैं । इसलिए अब वे हम पर अत्याचार करेंगे । मानों हम कोई जार राजा हो जिसे लेनिन की गाडियों में वा"धकर मारा जायेगा । अरे यह प्रजातन्त्र आ चूका है । अंग्रेजों के अन्धकार भरे शासन में किसने क्या किया अगर उसी का अदला वदली होता रहे तो फिर तुम्हारे प्रजातन्त्र का क्या मतलव ? तब हम न प्रजातन्त्र के लिए लडेंगे, न राजतन्त्र के लिए, न तानाशाही के लिए । तब तो वस हम केवल अपने अस्तित्व के

लिए लडेंगे, हम अपने अलग राज्य के लिए लडेगें । वाकी हम कुछ नहीं जानतें, हम पर जुल्म ढाहे गये हैं । भूटान में भी हमारी वात नहीं मानी गयी, हिन्दूस्तान सरकार भी हमारी वात नहीं मान रही है । हम आशा करते हैं कि आप सब लोगों का सहयोग हमें प्राप्त होगा ।

"जय तमिल एलम, जय अन्तराष्ट्रिय विद्रोह"

इसके वाद फिलिस्तीनी मुक्ति मोर्चा का नासिर आराफात ने बोलना शुरु किया :-

"हमारा संगठन विश्व प्रसिद्ध है और हमारे समर्थन में वहुत से लोग हैं; । खुलेआम यू.एन.ओ. में और अमेरिका में हमारा कार्यालय भी है फिर भी मैं चाहता हू" कि हमारे इस २७ वर्ष के संगठन से आप सभी लोग लाभ उठायें, हम आपसे सहयोग करें । मध्यम मार्ग मुझे भी पसन्द है और हथियार का विल्कुल परित्याग भी हम नहीं कर सकते । सवाल यह पैदा होता है कि सरकार हमसे जिस तरीके से पेश आती है, हम भी उससे उसी तरह से पेश क्यों न आये ? अगर सरकार हमारे लोगों को वेरहमी से मारती है तो फिर हम भी उनको वेरहमी से क्यों न मारे ? हम खुलेआम घोषणा करते हैं कि हम सरकार के विरुद्ध हैं तो सरकार को सोचना चाहिए कि हम क्यों उसके विरुद्ध हैं ? अगर हमारी मा"गे, अगर हमारा कथन ठीक है तो सरकार को झुकना होगा, हमारी वात माननी होगी । अन्यथा हम जब कुछ करते हैं तो सरकार उसे आतंकवाद कहती है । जब तक सरकारी आतंकवाद खत्म नहीं होगा, हमारी क्रान्ति

DO NOT COPY

समाप्त नहीं होगी । यह तो हुई आप लोगों की वात जो कि अपने ही देश के, अपनी ही अत्याचारी सरकार के विरुद्ध वीडा उठा रखे हैं ।

पर आज हमारा अपना कोई देश नहीं । जिन यहूदियों को हिटलर नै गैस चैम्वरों में भून दिया था, उस समय हमें , हमारे लोगों एवं सारे संसार को कितनी तकलीफ हुई थी ? सारे विश्व ने हिटलर के इस अमानवीयता पर आ‘‘सू वहाया था । पर कैसी विडम्बना है ! आज वे यहदी ही हिटलर वना बैठा है । आज वही यहूदी दूसरों को भूनता है और विश्व चुपचाप बैठा है । आज हमारा कोई देश नहीं हम दूसरे देशों से पनाह मा‘‘गते तम्बुओं में जिप्सीयों की तरह रहते हैं । ऐसी अवस्था में हम सिर्फ ऐसे हिटलरों के विरुद्ध अनन्त काल तक लडते रहने का वीडा ही नहीं उठाया है वाल्कि उनको समर्थन करने वाले सम्पूर्ण देश के विद्रोहीयों को सहयोग देंगे । अब उनसे खुद सहयोग लेने का आह्वान करता हू‘‘ मैं । मेरे दोस्तों हमने जो रास्ता अख्तियार किया है, इतिहास उसको भूल नहीं सकता । आगे वढो और अपना नाम स्वर्णक्षरों में लिखों ।

जय फिलिस्तिन, जय विश्व क्रान्ति”

इसके वाद क्यूवा का प्रतिनिधि उठा और छोटकरी में अपना भाषण समाप्त किया :-

अध्यक्ष महोदय एवं सभी भाइयों । मेरा संगठन आज सफलता प्राप्त करके खुद सत्ता में हैं, खुद सरकार में है फिर भी हमारे राष्ट्रपति ने जिसने खुद ऐसी ही पार्टीयों के द्वारा, ऐसे ही विद्रोहों के द्वारा सत्ता में आये हैं हमें इस सम्मेलन में खास तौर से

DO NOT COPY

भेजा है कि मैं आपलोगों की हर तरह से मदत करु“ और आपके हौसले बुलन्द कर सकू“ । मुझे अफसोस है कि अपने ७०-७२ साथियों को खोकर हमने इस सत्ता को पाया था ओर वह व्यक्ति जो इसका मुख्य नायक था - चीग्यूरेरा वह भी अब इस संसार में नहीं रहा । पर हम सफल हुए हैं । हमारा लक्ष्य, केवल सरकार को पा लेना ही नहीं था वल्कि अपने देश एवं दुनिया“ में अपने प्रखर प्रजातन्त्र को फैलाना एवं समर्थन देना है । इसलिए हम एवं हमारी सरकार आज आप लोगों के साथ है । वहुत से देशों की सरकार आज हमारे साथ हैं , पर हमारी सरकार इसमें अभी भी हिस्सा लेकर, आपलोगों को मदत करना चाहती है । मैं अपने राष्ट्रपति एवं उनकी सरकार की ओर से शुभकामना लेकर आया हू“ । आप लोगों की उत्तरोत्तर प्रगति की हम कामना करते हैं ।

जय क्यूवा, जय विश्व विद्रोह”

उसके वाद कुर्दिस डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रतिनिधि ने वोलना शुरु किया “हम कुर्दिस लोग सौ वर्षों से वह दुख भोग रहे हैं जो एक राष्ट्र विहिन लोगों को भोगना पडता है । जो सब जगह रहते हैं, पर कहीं का नहीं होते । जो हर देश में जाकर उसकी प्रगति में हिस्सा लेते हैं पर कोई उन्हें अपना नहीं मानता । इस हिसाब से हम इजराइलियों से मिलते हैं, पर इजराइलियों की तरह हमें कुछ नहीं मिला । इजराइलियों ने न केवल अपना देश, अपनी पहचान ही पा रखी है वल्कि वह स्वयं हिटलर की कुर्सी पर बैठा, सम्पूर्ण मानवता का

दुश्मन हो गया है । इसलिए मेरे भाइयों मुझे इजराइलियों के कैटोगोरी में मत रखियेगा ।

हमारा इतिहास तीन हजार वर्ष पुराना है । जब से तुर्की का पतन हुआ हमारे लोग इरान, इराक, सिरिया, और रुस में भी अल्पसंख्यक के रुप में फैल गये । तब से हम इन देशों में एक अल्पसंख्यक के रुप में पलते आये हैं - वहा“ के लोगों ,वहा“ की सरकार, सबके लिए संकास्पद । किसी ने भी हमें हमारे अधिकारों को खुलकर उपयोग करने नहीं दिया । इस तरह से हम श्रीलंका के तमिलों , नेपाल के तराइयनों तथा पाकिस्तान के पख्तूनों आदि से मिलते हैं । तत्कालिन अन्तराष्ट्रिय हालात में इराक सरकार से लडकर अपना अधिकार प्रँप्त करने के लिए हम कटिवद्ध हैं । हमारे २० हजार छापा मार, अभी वहा“ पर सक्रिय हैं । परन्तु जब से इरान इराक के बीच युद्ध वन्दी की वात चल रही है हम पर इराक ने कहर ढा रखा है । हमारे एक लाख शरणार्थी तुर्की में शरण ले चुके हैं । हमारे विरुद्ध रासायनिक हथियारों का भी प्रयोग किया जा रहा है । ऐसी अवस्था में हम अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आप सभी लोगों के सहयोग के मुखापेक्षी हैं क्योंकि कहीं की भी सरकार हमारा सहयोग इसलिए नहीं करती क्यों कि उन्हें हम अल्पसंख्यको की पीडाओं के लिए क्या पडी है । रुस और अमेरिका जैसी महाशक्तियां अपने स्वार्थो में डूवी हुई हैं । इराक एवं तुर्की आदि में भी कल यह समस्या आने का भय है । अत: हम विल्कुल आरफन की तरह अलग

DO NOT COPY

थलग पडते जा रहे हैं । मुझे आशा है कि आप सभी भाइयों के जवर्दस्त सहयोग एवं विरोध से हमारा नरसंहार वन्द होगा ।

हमें जो क्षमादान का प्रावधान किया है वह केवल एक चाल हैं क्योंकि विश्व की जनता के बीच हमारे संहार को लेकर वह काफी वदनाम हो चुका है । वह अपनी इसी वदनामी को धोना चाहता है । पर हम यह सामूहिक क्षमादान अपनी शर्तों के अनुसार ही मानेंगे । अगर वह हमारी सुरक्षा की गारेन्टी देगा तब ही हम इराक लौटकर जा सकते हैं ।

जय कुर्द, जय विश्वक्रान्ति ।

इस तरह और देशों के प्रतिनिधियों ने भी अपनी अपनी वातें कहीं । तीन दिनों के इस गोपनीय सम्मेलन में आज यही कार्यक्रम था । कल के कार्यक्रम में नितियों के निर्धारण की व्यापक विधियों पर चर्चा होना है । सहयोग के विभिन्न उपायों को पक्का करना है । तीसरे दिन के कार्यक्रम में उन सबका संशोधन एवं विश्लेषण करते हुए कार्यक्रम का स्थगन और विदाई समारोह था । आज के कार्यक्रम में सवमें अन्त में सभापति का आसन ग्रहण करने वाले आई आर ए के प्रतिनिधि को वोलकर सभा का समापन करना था । उन्होंने बोलना शुरु किया :-

"हमारे सभी प्रिय साथियों, मुझे इस सभा का सभापति वनने का गौरव प्रदान करने के लिए मैं अपने आप को अत्यधिक गौरवान्वित समझते हुए आप सबके प्रति आभार प्रकट करता हू" । इस सभा के

संयोजक श्री अग्नि सिंह को मैं वहुत बहुत धन्यवाद देता हू‘‘ कि वे अपने इतनी छोटी सी अवधि के संगठन_को चलाते हुए भी इसे विश्व व्यापक वनाने एवं हमारी टूटी हुई कडियों को फिर से जोडने का सराहनीय कार्य किया है । इस काम के प्रति मैं उनको हृदय से धन्यवाद देता हू‘‘ ।

वहुत से लोग हमें अंग्रेज समझते हैं और आपके देश की जनता इस वात को सुनेगी तो थोडा ना‘‘क भौ सिकोड सकती है आखिर अध्यक्षता तो किसी अंग्रेज ने ही किया । परन्तु मैं कह दू‘‘ कि हम अंग्रेज नहीं है । सदियों पहले हमारे दवे एवं कुचले लोग कैसे अमेरिका में जाकर स्वतन्त्रता का अनुभव करते थे एवं अपने ही देश में भयग्रस्त एवं प्रताडित रहते थे इसका जिक्र हिन्दस्तान के स्वामी विवेकानन्द के करुण उदगारों में भी प्रकट हुआ है । यहा‘‘ तक कि मेरे देश की एक युवती उनसे प्रभावित होकर उनकी शिष्य वन गयी थी । जिसका नाम सिस्टर निवेदिता था और जिसने वाद में भारत की क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर वहा‘‘ अपनी अहं भूमिका का परिचय दिया । अतः मैं कहना चाहता हू‘‘ कि हम खुद अंग्रेजों के द्वारा प्रस्ताडित लोग हैं ।

आज वे अंग्रेज, जिनका देश इंगलैण्ड है और अमेरिका, जो अपने को प्रजातन्त्र का सरगना मानते है, हमारे एवं हमारे असली प्रजातनत्र के विरोधी हैं । आजतक इन अंग्रेजों ने अपना गुलाम बनाकर रखा है और सच पूछो तो अभी भी एक वदली हुई गुलामी

DO NOT COPY

के अन्दर ही हमें सा“स लेना पडता है । मैं चाहता हू“ कि इस गुलामी के सम्पूर्ण जाल को काटकर फेंक दिया जाय और इसके लिए हमारे इस प्रकार के सम्मेलन वहुत लाभदायी होंगे ।

आज हमारे बीच वहुत से दोस्त नहीं आये हैं एवं वहुत से लोग शुभकामनायें भेजकर छुट्टी कर ली है । मैं आशा करता हू“ कि दूसरे सम्मेलनों में वे लोग भी आयें, अपने दुखडे सुनायें एवं हमसे मदत लें । वे क्यों नहीं आये ? उनको आना चाहिए था । वे सोचते होंगे कि हमारे रास्ते उनसे विल्कुल भिन्न है । ऐसी वात नहीं । जिस सरकार के विरुद्ध हमें जिस समस्या के लिए लडना है उस पर यहा“ आकलन होगा और उसी के अनुसार कार्य । दूसरी वात हमारी एक विश्वस्तरीय कार्य पालिका और सरकार गठन होगी , कुछ सिद्धान्त होंगे तथा हमारी सहयोगात्मक गतिविधिया“ उसी के अनुरुप संचालित होगी । अगर हम आयेंगे ही नहीं तो कैसे पता चलेगा कि किसका संगठन किस वात के लिए लड भी रहा है और उसे क्या सहयोग चाहिए ?

हा“ प्रतिक्रियात्मक क्रान्तिकारियों की हमारे बीच कोई जरुरत नहीं । अगर खालीस्तानी आदि हमारे विरोध में वनायी गयी शक्तिया“ है तो फिर हमें उनकी कोई जरुरत नहीं । उन्हें सोचना पडेगा कि हमारी लडाई कुछ और है । हम यह प्रतिक्रिया स्वरुप नहीं लड रहे हैं वल्कि यह उसी क्रान्ति का एक हिस्सा है जिसे गा“धी, मार्क्स, लेनिन एवं माओं ने आगे बढाया था ।

DO NOT COPY

दूसरी एक और वात जो मैं कहना चाहू“गा वह यह है कि हमारे वहुत से अर्न्तविरोध भी हो सकते हैं पर हमें आज प्रतिज्ञा करना पडेगा कि हम उन अन्तरविरोधों के चलते उसी तरह नहीं उलझेंगे जिस तरह विभिन्न देशों की सरकारें करती हैं । हमारा मिशन वहुत व्यापक है और हमें इसकी व्यपकता के लिए अपने-अपने क्षुद्र स्वार्थो को त्यागना होगा । हमें प्रतिज्ञा करना होगा कि कुछ भी हो जाय हम आपस में एक दूसरे की गोपनियता को भंग नहीं करेंगे, हम एक दूसरे के कार्यकर्ताओं को नहीं मारेंगे जैसा कि कुछ घटनायें इधर तमिल विद्रोहियों में देखने को मिली है । यह वात वहुत अशोभनिय है और अन्तत: यह हमारा सर्वनाश कर देगा । अगर यही वात है तो फिर न सम्मेलन की जरुरत है न सहयोग की । पर नहीं ,जरुरत है इसकी , पर जरुरत इसकी नहीं है कि हमें क्षुद्र स्वार्थो के लिए अपने व्यक्तिगत दोषों से, एक ही मिशन के लिए लड रहे अपने अन्य भाइयों को मारें । कदापि हम यह मूर्खता नहीं करेंगे ।

जरा सोचिए, हमारे असंगठित विद्रोहों से तवाह होकर इसके विरुद्ध मजवूरन सार्क संगठन वन जाता है, यू.एन.ओं. में आतंकवादी विरोधी वहसें होने लगती हैं तो संगठित शक्तिया“ इन जनता विरोधी शक्तियों को कितना तवाह करेगी । हम संगठित होकर समूची दुनिया“ में अपनी अलग एक सरकार वनायेंगे, जिनका मौजुदा सरकारों से कोई ताल्लुक नहीं होगा, हम अपना अलग इतिहास लिखेंगे । आनेवाले समय बतायेंगे कि हम किस चीज के लिए अपना वलिदान कर रहे हैं । भविष्य की पीढिया“, हमारे

इतिहास की पूजा करेगी, हा“ हमारे इतिहास को, जिनको आतंकवादी कह कर उसका दमन किया जाता है, आगामी पीढिया“ इस दमन को आश्चर्य से देखेगी अैर कहेगी कि दमन तो इन सरकारों का होना चाहिए था फिर उस दुनिया“ में हमारा दमन क्यों हुआ , यह एक आश्चर्य की वात है ।

मेरे भाइयों, आइए हम सव मिलकर आज की जनता की पीडाओं को दूर करने का, दुनिया“ के विभिन्न देशों, विभिन्न जातियों एवं विभिन्न समुदायों के विरुद्ध हो रहे दमन के विरुद्ध अपने वलिदान का दिया जलायें एवं सारी दुनिया“ में प्रखर प्रजातन्त्र की स्थापना करें ।

जय आइ.आर.ए । जय विश्व क्रान्ति

× × ×

दूसरे दिन निश्चित समय पर फिर मिटिंग बैठी । आज सबके बीच काफी छलफल होना था एवं उस छलफल के निचोड का एक प्रारुप तैयार करना था । काफी सौहार्दपूर्ण वातावरण में छलफल शुरु हुआ एवं करीव दोपहर के वाद इसका एक प्रारुप तैयार किया गया । यह प्रारुप इस प्रकार था :-

“काफी लम्बे समय के वाद हम विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के विद्रोही संगठनों के लोग एक सौहार्दपूर्ण वातावरण में एक साथ वैठें । यह बैठना इसलिए भी आवश्यक हो गया था कि विश्व के विभिन्न

DO NOT COPY

देशों की मौजूदा दमनकारी, अप्रजातंत्रिक एवं प्रतिक्रियावादी सरकारों ने हमारे विरुद्ध संगठित रुप से हमें खत्म करने का जेहाद छेड दिया है । राष्ट्रसंघ में हमारे विरुद्ध सभी लोग एक हो रहे हैं । हाल ही में सार्क संगठन भी अपना रुप ले ही लिया । श्री लंका में भारत शान्ति सेना भेजकर श्रीलंका के दमन–कारी सरकार के झा“से में आ गयी । कुर्दिस डेमोक्रेटिक पार्टीयों के विरुद्ध रासायनिक हथियारों का प्रयोग हो रहा है । दक्षिण अफ्रिका सरकार को आज अगर दुनिया के कतिपय देश ठीक कह रहें हैं तव हमें क्या करना चाहिए, यह सोचना विल्कुल जरुरी हो गया था । अगर हम लोगों ने संगठित होकर इनसभी देशों के विरुद्ध काम नहीं किया तो धीरे धीरे हमारे लोगों को मौत के घाट उतार दिया जायेगा । हमारा आन्दोलन कमजोर पड जायेगा और लोगों को हमारे प्रति सहानुभूति होते हुए भी, इसके प्रति विश्वास उठ जायेगा । अत: अब हमें अपनी क्रान्ति को आगे बढाने एवं अपने अस्तित्व को वचाने के लिए यह सम्मेलन अति आवश्यक हो गया था । इस सम्मेलन में उपस्थित होकर निम्न–लिखित निर्णय लिए गये :-

निर्णय :

१. सभी देशों के विद्रोही संगठनों को मिलाकर एक अन्तरराष्ट्रिय विद्रोही संगठन वनाया गया । जिसका नाम रहेगा विश्व क्रान्ति संगठन ९धचइ०

क) इस धचइ का सिद्धान्त यह होगा कि यह विश्व में प्रखर प्रजातन्त्र के लिए लडेगा ।

ख) यह किसी भी रंग भेद एवं जाति भेद के विरुद्ध लडेगा ।

ग) किसी भी देश के सैनिक तानाशाही, राजशाही या किसी प्रकार के तानाशाही के विरुद्ध लडेगा ।

घ) प्रत्येक देश अपना संगठन अपने तरीके से करेगा और जरुरत पडने पर धचइ लडेगा ।

ङ) प्रत्येक संगठन शान्तिपूर्ण एवं हथियार वन्द दोनों होगा । शान्तिपूर्ण संगठन एवं हथियार वन्द संगठन अलग अलग काम करेंगे परन्तु दोनों अपने को अलग संगठन दिखलाते हुए भी, दोनों एक दूसरे की भर्त्सना करते हुए भी, एक रहेंगे । यह सरकार को झा“सा देने का तरीका होगा ।

च) जरुरत पडने पर एक देश के क्रान्तिकारी दूसरे देश में भी कार्यरत होंगे । अगर वह संगठन अपने देश के लोगों को सक्ष्ँम नहीं समझता है तो उसके लिए दूसरे देशों के संगठन के लोग वहा“ जाकर काम करेंगे ।

छ) एक ही देश में मत विभिन्नता होने पर कई विद्रोही संगठन हो सकते हैं पर अनिवार्य रुप से एक दूसरे की गोपनीयता को भंग नहीं कर सकता अथवा एक दूसरे के सदस्यों को नहीं मार सकता ।

ज) हमारे विरुद्ध वनाये गये प्रतिक्रियात्मक संगठनों से हमारा कोई ताल्लुक नहीं होगा । हम उसके विरुद्ध भी लडेंगे । उदाहरण के लिए निकारागुआ में सांदिनिस्ता सरकार के

विरुद्ध लड रहे का“न्ट्रा विद्रोही प्रतिक्रियात्मक हैं । हम उनके विरुद्ध भी लडेंगे ।

झ) हम विभिन्न देशों के मतलव के अनुसार किसी भी सरकार से सहयोग ले सकते हैं , परन्तु इस आधार पर वह हमारे अन्दर फूट नहीं डालेगा । अगर हमारे फूट की कीमत पर वह हमारी मदत करना चाहता है तो हम उसे ठुकरा देंगे ।

ञ) हम किसी भी सरकार से अपनी मा“गे मनवा कर उससे थोडे समय के लिए सम्भौता कर सकते हैं पर अपनी संस्था एवं संगठन को खत्म करके हम किसी भी सरकार से समभौता नहीं करेंगे । अथवा सरकार में शामिल नहीं होगें । यह हमारी क्षणिक नीति मात्र होगी पर हमारा संगठन सम्पूर्ण क्रान्ति की दिशा में हमेशा काम करता रहेगा ।

ट) अगर किसी देशका सदस्य दूसरे देश में जाना चाहे तो उसके पासपोर्ट एवम्, भीसा, के प्रयासों में मदत किया जायेगा ।

ठ) पैसों को इकठ्ठा करने के लिए हम विभिन्न सरकारों से सहायता लेंगे तथा खुद भी पैसा इकठ्ठा करेंगे । यह पैसा अपने सदस्यों एवं जनता से भी इकठ्ठा करेंगे ।

ड) राष्ट्रिय स्तर पर प्रत्येक देश अपना संगठन करने के लिए स्वतन्त्र है पर अब हरेक स्तर पर क्रान्तिको

संचालित करना होगा । प्रत्येक संगठन के चार विंग होंगे ।

:र्षीष्तियचथधष्लन ़ ज्ञ। :र्षीष्तियचथ धष्लन द्द। ष्लतभर्ीभिनभलअभ धष्लन।ॅ
ऋष्खर्ष धष्लन ़ घ। उयष्तिष्अबर्ा धष्लन द्ध। ब्मखभचतष्कष्लन धष्लनॅ

चारों विगं का रुप मौजूदा सरकार के विगों से विपरित होगी ।

सभी विंग के लोग अनिवार्य रुपसे :र्षीष्तियचथ त्चबष्लष्लन लेंगे । सभी को हथियारों का ज्ञान होगा । सभी लोग सादे वस्त्रों में रहेंगे । सभी लोग गोप्य रुप से रहेंगे । पता नहीं कि कौन किसका सदस्य है । जब जरुरत होगी अध्यक्ष उन्हें देश के अन्दर भेज सकता है , ब्अतष्यल करने के लिए कह सकता है, पर अध्यक्ष मिटिंग बुलाकर सदस्यों की स्वीकृति लेगा ।

ढ) अगर केन्द्र से यह सूचना आये कि अमुक समय में यह एक्सन रोक दिया जाय तो रोक देना होगा और अगर प्रत्येक देश में कभी एक साथ व्यापक रुप से हमला करने का केन्द्र का निर्णय हो तो प्रत्येक देश को इसके लिए तैयार रहना होगा ।

इन सभी प्रस्तावों को पढकर सबको सुनाया गया एवं सभी लोगों से यह आग्रह किया गया कि अगर इसमें किसी को कोई एतराज हो अथवा किसी को कोई चीज जोडना हो वह बोले अथवा दूसरे दिन तक सोचकर आये ।

DO NOT COPY

तुरत अग्नि सिंह उठकर दो सुझाव दे डाले ।

१. हमारे सभी सदस्यों की जान काफी कीमती होगी और हम उसकी जान वचाने के लिए हर सम्भव प्रयास करने के लिए तत्पर रहेंगे । अगर किसी हालत में हमारा कोई सदस्य मारा जाता है अथवा उसकी स्वाभाविक मृत्यु होती है तो सम्पूर्ण देश के विद्रोही संगठन मौन रहकर उसकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थनायें करेंगे । गुप्तचरों एवं वायरलेसों से इसकी खबर विभिन्न देशों को पहु‘‘चायी जायेगी ।

२. अपने-अपने संगठनो के अपने अपने एक झण्डे होंगे, चिन्ह होंगे जो गोपनिय होंगे एवं अन्तराष्ट्रिय विश्व-क्रान्ति संगठन का भी एक झण्डा होगा जो गोप्य नहीं होगा । हमारे इस अन्तराष्ट्रिय झण्डे पर सूरज के गोले पर दहकता आदमी अपने एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कवूतर लिए होगा । सूरज हमारी क्रान्ति का प्रतीक, तलवार हमारे माध्यम का प्रतीक एवं कवूतर शान्ति का प्रतीक होगा ।

सभी लोगो ने अग्नि सिंह के इस वात को सहर्ष स्वीकार किया, मिटिंग समाप्त हुई ।

× × ×

दूसरे दिन संशोधन, छलफल मेलमिलाप, एवं खानपान के साथ सम्मेलन की समाप्ति हुई । सम्मेलन में एक वात यह आयी कि इस तरह का सम्मेलन प्रत्येक वर्ष एक वार किसी देश में हो जो पहले सम्मेलन में तय हो जाय तथा किसी देश में इसका एक स्थायी एवं

DO NOT COPY

गोप्य सचिवालय खोला जाय । तय हुआ कि अगला सम्मेलन क्यूवा में होगा तथा अन्तराष्ट्रिय सचिवालय भी क्यूवा में ही खोला जायेगा । इससे लाभ यह होगा कि वहा“ के विद्रोही संगठन अब सत्ता में हैं और जिससे किसी प्रकार के खतरे से वचाव आसानी से होगा ।

इस प्रकार ध्चइ का सम्मेलन समाप्त हुआ । यह सम्मेलन गोप्य था । किसी प्रकार के पत्रकार आदि को जाने की अनुमति अथवा जानकारी नहीं थी इसकी ।

Copyright @ 2022 by Dr Shiva Shanker Yadava

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or used in any manner without permission of the copyright owner except for the use of quotations in a book review.

DO NOT COPY

६

इस सम्मेलन के वाद सभी देशों के विद्रोहियों की गतिविधिया" काफी तेज हो गयी । गोरखालैण्ड शान्ति सम्झौता कर चुका था । इसलिए उसकी गतिविधि ज्यों कि त्यों रही फिर भी उसने अपने आदमियों को ट्रेनिंग देना वन्द नहीं किया था । इस रुप में नेपाल के रास्ते चीन एवं अमेरिका से उसे काफी सहयोग मिल रहा था । श्रीलंका में और लोग तो चुप थे परन्तु "तमिल टाइगर" ने अपनी गतिविधि व्यापक करते हुए भारत के शान्ति सेना के विरुद्ध भी जंग छेड दिया । परन्तु भारतीय शान्ति सेना की विशाल क्षँमता का विरोध करना उसके लिए मुश्किल हो रहा था । उसने क्यूवा से सम्पर्क साधा तो उसे निर्देश दिया गया कि उसे भारत के विरुद्ध तो नहीं लडना चाहिए परन्तु भारत सरकार की मौजूदा रवैयों से हमें आश्चर्य होता

DO NOT COPY

है । वह श्रीलंकाई चाल में उलझकर रह गया है । ऐसी हालत में जवकि वह तामिल टाइगर्स के लोगों का सफाया करना चाहती है उसे भारत के शहरों पर अपनी गतिविधिया“ चालू करना चाहिए । अच्छा तो यही होगा कि अधिक से अधिक संयम वरतते हुए काम किया जाय । फिर भी अगर भारत सरकार नहीं मानती है तो उसे श्रीलंका को छोडकर भारत के शहरों में अपनी गतिविधिया“ तेज कर देनी चाहिए । तत्काल इसके लिए केवल एक वक्तव्य देकर सरकार की प्रतिक्रिया जानना चाहिए । इस निर्देश के अनुसार तमिल टाइगर्स के विभाकरन साहव ने अपना व्यक्तव्य देकर भारत सरकार को चौकन्ना किया । भारत सरकार इस व्यक्तव्य से इसलिए चौकन्ना एवं परेशान हुई क्योंकि वह पहले ही खालीस्तानियों जैसी प्रतिक्रियात्मक आन्दोलनों से तंग आ चुकी थी ।. । अगर तमिलों ने ऐसा करना शुरु किया तो भारत के तमिल इनसे मिल जायेंगे और हो सकता है कि कालान्तर में वे खालिस्तानियों की तरह भारत के अन्दर ही अलग तमिल राष्ट्र का झण्डा मा“गने लग जा“य । अतः हिन्दुस्तान सरकार, श्री लंका सरकार को अपने घर की आग में स्वयं जलने के लिए छोड कर अपनी शान्ति सेना को वापस बुला लेने के बारे में सोचने लगी ।

इसी तरह दूसरे देशों के विद्रोही भी भले ही अपने कार्य के रुप में अधिक सफलता प्राप्त न कर पायें, पर ट्रेनिङ्ग के रुप में उनकी गतिविधि वहुत ही व्यापक हो गयी थी । वापस लौटकर अग्नि सिंह ने संजय को उन नवयुवकों के विंग का विग कमाण्डर वना

दिया एवं रचना को उन नवयुवतियों की विंग का विंग कमाण्डर । संजय को यह भी वताया गया कि इन दो विंगों के अलावा पूरे भारत के विभिन्न जंगलों में करीव २० विंग अपने ट्रेनिङ्ग में पारंगत होकर क्रियात्मक आन्दोलन के निर्देश के लिए तैयार खडा है । परन्तु उचित अवसर के अभाव में इसका निर्देश हम अभी नहीं दे सकते । क्योंकि भारत सरकार भी अभी हमारे विरोध में है और हमें तमिलों की तरह उसका विरोध नहीं करना चाहिए क्योंकि एक तो नेपाल लैण्डलौक्ड देश है और हमें भारत को छोडकर दूसरा कोई पनाह नहीं हो सकता तथा दूसरे तमिलों की तरह का कान्ससनेस हमारे देश के लोगों में विकसित नहीं हो सका है । तराईवाले इसमें काफी पिछडे हैं । जब हम अपने लोगों को तराई क्षेंत्र में भेजते हैं तो डर क्या रहता है कि कहीं उनके अपने वन्धु वान्धव ही उनको पकडवाने में मदत कर देंगे । ऐसी कई घटनायें हुई भी हैं एवं कई लोग जेल की हवा भी खा चुके हैं । यहा“ तक कि फकीरचन्द का भाई ही सहजनाथ को मरवा दिया । इसलिए हमें उचित अवसर तक रुकना चाहिए ।

इस सम्मेलन के वाद से नेपाल के विद्रोहीयों की सवसे वडी समस्या का हल हो चुका था । वह यह कि अब निपट गरीबी एवं कष्ट में उनका कैम्प संचालित होने से वच गया था । अब काफी धन आने शुरु हो गये थे और अब दुवारा फूट के आसार वन्द हो गये थे । इसके पहले वह एक वार टूट चुका है “इस फूट का कारण क्या

था पर ?" संजय ने अग्नि सिंह से पूछ डाला। अब वह उनका काफी विश्वास पात्र हो गया था।

"मैं इस फूट का कारण इसलिए जानना चाहता हू‘‘ क्योंकि हमारी इतनी कम उम्र संगठन में फूट हमारी शक्ति को काफी कमजोर वना सकती है। आगामी फूट को भी वचाने के लिए भी हमें यह वताना आपको उचित लगना चाहिए।"

अग्नि सिंह ने वडी गम्भीरता के साथ उदास होकर कहा :-

"तो सुनो। इस फूट का कारण वताने से पहले मैं अपने संगठन के दुखद दिनों को वताना चाहता हू‘‘।

"मैं शुरु शुरु में नेपाली का‘‘ग्रेस का ही एक सदस्य था - एक सक्रिय, उत्साही सदस्य पर अन्तिम दिनों में अपने नेताओं को निष्क्रिय एवं प्रतिक्रियावादी होते हुए पाया। वे अपने मूल उदेश्य से हटकर अन्तराष्ट्रिय गुटवाजी की नीति में एवं एक दूसरे से वडा वनने में विताने लगे। इधर क्रान्ति की मूल रचना एवं आकार प्रकार ही वदलने लगा था जिसमें फिट होने में वे असक्षम होने लगे थे। मैं यह देख देखकर क्षुब्ध रहने लगा कि हमारे नेता कभी अमेरिका कभी चीन के चंगुल में फ‘‘सते जा रहे हैं। वे लोग कभी राजा के साथ मिलकर पौष के राष्ट्रद्रोही दिवस में भाग लेने लगे तो कभी कभी बैंक डकैतियों के द्वारा अपनी कमजोरी को छिपाने का प्रयत्न करने लगे। कभी इन्दिरा गा‘‘धी और जवाहर लाल नेहरु से अपने को वडा समभ्कने लगे तो कभी जयप्रकाश नारायण के मुख की ओर देखने लगे। इन लोगों से सहयोग लेते हुए अपने मूल एवं मुख्य काम

को वे भूल गये । राष्ट्रिय खतरे की झुठी वात करके वे लोग राजा से मिलकर अन्त में घास खायेंगे, ऐसा मैंने पहले ही बोल दिया था और ठीक ऐसा ही हुआ भी । इतिहास किसी को क्षमा नहीं करता । अपनी उपेक्षा करनेवालों को वह वडी निर्ममता से मारता है । आनेवाले इतिहास में वी.पी. कोइराला एवं सुवर्ण शमशेर को इतिहास कभी क्ष्ँमा नहीं करेगा । और तो और वी.पी. कोईराला जैसा व्यक्तित्व भी जीवन भर जब साम्प्रदायिकता एवं पहाडी मधेशी जैसी कुंठाओं से ग्रसित हो गये तो उनसे हमारा मोह भंग होना स्वभाविक था । इतना वडा नेता, इतना संकीर्ण हो गया था ।

इस तरह मैं धीरे-धीरे इन लोगों से दूर हटता गया और उस समय मैं फिदेल कास्त्रो एवं चीग्यूरेरा की क्रान्ति से काफी प्रभावित हुआ था । मैंने धीरे धीरे उन लोगों से अकेला सम्पर्क साधा एवं नेपाल की ओर से अकेला प्रतिनिधित्व करना शुरु किया । परन्तु उस समय साम्राज्य वी.पी. कोईराला का था और नेपाल में उनकी आज्ञा के विना कुछ हो नहीं सकता था । कई वार जब नेपाल में आन्दोलन करने एवं आने के लिए मेरे द्वारा उनलोगों ने वी.पी. कोइराला को पूछवाया तो वी.पी. कोईराला ने अपने अहंकार में इसे नहीं माना । उनको ऐसा लग रहा था कि ऐसा करने से नेपाल खत्म हो सकता है परन्तु अपने मन के किसी कोने में उन्हें उन लोगों का विद्रोह वचकाना लग रहा था और वे उनलोगों को मान्यता देने में अपना सुपरमेसी दिखलाने लगे ।

तब मैं विल्कुल अकेला हो गया और उनलोगों से अपना सम्पर्क साधे रहा । तब तक फिदेलकास्त्रो क्युवा में सफल हो गये । मैंने सोच लिया कि अब नेपाल में तभी कुछ हो सकता है जब वी.पी. कोईराला को नकार दिया जाय अन्यथा कुछ नहीं हो सकता । अत: मैं अपनी योजना के पहले कदम के रुप में काठमान्डू में हवाई जहाज से उतरा । मैं वहा" परमीसन लेकर हाइकोर्ट में वकालत करने लगा, पर मेरा ध्यान अगामी चुनाव पर था । आगामी चुनाव आया और मैं ग्रेजुएट कन्सटीच्युएन्सी" से खडा हो गया । हमारी योजना के अन्तरगत हमें अपार सफलता मिली । एवं वहा" के नेवार एवं पहाडी वर्ग जो राजाशाही की निरंकुशता से तंग आ चुके थे, हमें जिताया । वी.पी. कोईराला यह देखकर अवाक रह गये कि वर्षो से वाहर रहकर जो काम वे नहीं कर सके उसे उन्हीं की पार्टी का एक नवयुवक करके दिखला रहा है । उन्होंने इस कदम को किसी चुनाव को क्रान्ति में परिवर्तित कर देने का खिताव दिया । और वास्तव में वह मेरी क्रान्ति का पहला कदम था । यह मेरे अपने देश के लोगो की टोह लेने की एक प्रक्रिया एवं अपने आन्दोलन का पहला कदम था ।तत्कालिन राजा इस वात पर आश्चर्य चकित थे और जब हमने सपथ नहीं लेने को कहा तो फिर हमें जवरदस्ती सपथ लेने को कहा गया । हांलाकि मेरा लक्ष्य न शपथ लेना था न अधिवेशन में भाग लेना था पर इस जवरदस्ती के कारण मैं भी कुछ और तमाशा करने को ठान लिया । मैंने सपथ लिया और संसद में इस वात के लिए विरोध करना शुरु किया कि वहुदलीय व्यवस्था एवं

संसदीय व्यवस्था ही नेपाल में होना चाहिए । इससे चिडकर अहंकारी एवं नासमभ्क राजा ने मुभ्के जेल में डाल दिया । इसने मेरी ख्याति और वढायी । अहंकारी राजा का सोचना यह था कि मैं दूसरे लोगों की तरह जेल जाकर ठीक हो जाउ‘‘गा और हमें किसी तरह रिश्वत एवं भय दिखाकर तोड दिया जायेगा । परन्तु वे विस्फारित आ‘‘खों से देखते रह गये थे जब हमने उनके सामने ही उनकी वातों को ठुकरा दिया था । तबतक वे कई राजनितिक हत्यायें करवा चुके थे और अब वे मुभ्के मेरी हत्या न करवा कर सिर्फ मेरा दा‘‘त तोड देना चाहते थे । उस बेवफूक को यह पता नहीं था कि कैसा दा‘‘त । जिसको वे हमारा दा‘‘त समभ्क रहे थे वह हमारा दा‘‘त नहीं था । उन्होंने ग्रेजुएट कन्स्टीच्युएन्सी” को ही समाप्त कर दिया ताकि मैं खुद ही समाप्त हो जाउ‘‘ । न रहेगी वा‘‘स न वजेगी वा‘‘सुरी पर उनको क्या पता कि हम वा‘‘स से वा‘‘सुरी नहीं वजाते, हम हथियारों से वा‘‘सुरी वजाते हैं ।

वहा‘‘ से हम यहा‘‘ आ गये और अपना संगठन करने लगे । शुरु शुरु में हमें धन एवं हथियारों की कमी थी । फिर भी हम आधे पेट खाकर, कम हथियारों से ही काम चलाते थे । इसी बीच अपना कार्य व्यापक वनाने के लिए हमने ३६ साल का आन्दोलन किया कि हमारे कार्य को इससे सुविधा होगी । परन्तु उस समय तक वी.पी. कोईराला जिन्दा थे और इस आन्दोलन को उन्होंने फेल कर दिया । जो कुछ उन्होंने ने किया उससे आज सारा नेपाल, सारे नवयुवक

परिचित हैं, सारी दुनिया“ परिचित है । अगर हमारे देश में बहुदलिय व्यवस्था होती, प्रजातन्त्र होता तब हम अपना काम शान्तिपूर्ण तरीके से कर सकते थे । पर आज संसार के सभी तानाशाह शान्ति पूर्ण तरीकों से अपने अधिकारों की मांगों को विल्कुल वेकार वना दिया है और हमें उस ईंट का जवाव पत्थर से देना पडता हैं । और उसी जवाव को देने के लिए हम यहा“ आ गये हैं । तब से हमने अपनी यहा“ तक की यात्रा पूरी की है ।

इसलिए उनलोगों को नित नये भरती हुए रंगरुटों को ट्रेनिंग देना भर है । .... परन्तु संजय और रचना को यह नहीं वतलाया गया कि ये विंग कहा“ किसके कमाण्डरसिप में कार्यरत है । उनको केवल इन्हीं दो विंगों की जानकारी है । उनको यह भी पता चला कि इन दो विंगों के बारे में तथा अन्य विंग है यह पूछने का न अधिकार है न उनको वताने की आवश्यकता है । जब हम देश के अन्दर सवको भेंजेंगे तो विभिन्न चिन्हों एवं विभिन्न भाषाओं से वे एक दूसरे को पहचान लेंगे एवं एक दूसरे की सहायता सहयोग में जूट जायेंगे ।

शुरु शुरु में पैसों के अत्यधिक अभाव में गुजारे । इसके कारण भी लोग तवाह हो रहे थे, फूट रहे थे । इसी वीच हमें न्यूट्रलाइज करने के लिए सरकार ने फूट की अंग्रेजी राजनीति की चाल चलकर हमें कमजोर वनाने की कोशिश की । वी.पी. कोईराला की सलाह भी सरकार की इसी नीति में है । सरकार ने पहाडी एवं मधेशी लोगों में काफी फूट के वीज वोये ताकि कम से कम पहाडी

लोग तो हम से कट जा‘‘य और सिर्फ मधेशियों को लेकर मैं एक साम्प्रदायिक रुप में अपना आन्दोलन चला सकू‘‘ । नेपाल में मधेशियों का शोषण तो पहले से ही हैं, परन्तु हम इसे दूसरे रुप में लेते हैं । उन्होंने इस अन्तर को वढाकर मधेशियों को राजनीतिक धारा एवं सुविधाओं से काटना शुरु कर दिया । वह प्रकिया पूर्वराजा के समय से शुरु किया गया पर इधर उसकी व्यापकता एवं भयानकता काफी बढायी गयी । मधेश के कुछ लोग हमारे कुछ साथियों से आकर अपने उपर हो रहे जुल्म एवं डिस्पैरिटी का वयान करते । फिर भारत सरकार एवं कुछ अन्य लोग भी इसमें दिलचस्पी ले रहे थे । उसने हमारे लोगों से वातचीत करके प्रोत्साहिन करना शुरु किया । हमारे पास की कमी, सरकार के फूट से उत्पीडन एवं भारत सरकार की सह ने हमारे कुछ साथियों को हम से तोड दिया हा‘‘लाकि शुरु शुरु में “रा” के लोग उनको ऐसा करने से मना करते रहे । अब वे लोग अपनी क्रान्ति को विल्कुल तराई के लोगों के लिए समर्पित करते हुए हमसे टूट चुके हैं । वे अपने कार्य में सफल हों पर हम तो एक व्यापक अर्थ में अपनी क्रान्ति कर रहे हैं । हम इस संकीर्णता से उपर उठकर भी सरकारों एवं जासूसों से अपने को वचाते , नेपाल को पूर्ण स्वतन्त्रता दिलाना चाहते हैं ।

“और कोई कारण ?”

“एक दो और कारण भी हैं । पहला कारण तो यह कि वे लोग पैसे के लिए लोगों के घरों एवं बैंकों में डकैतिया‘‘ डालने के पक्ष में थे तथा दूसरा यह कि वे लोग चाहते थे कि हमलोग देश में अपना काम शुरु

DO NOT COPY

कर दें । परन्तु मैं उनसे सहमत नहीं था । मैं किसी भी प्रकार की डकैती के पक्ष में नहीं था । लोगों के घरों में अगर हमें डकैती डालना पडे तो मैं इस आन्दोलन को त्याग देना ही वेहतर समझू‘‘गा । किसी भी शर्त पर हम साधाण जनता के मन में अपने प्रति घृणा भरना नहीं चाहता हू‘‘ । जिन लोगों के घरों में हम डकैतिया‘‘ डालते हैं वे हमेशा हमेशा के लिइ हमारा विरोधी हो जाते हैं । हा‘‘ पैसों के लिए बैंको आदि में डकैतिया‘‘ डाली जाती हैं और इसके लिए वे वी.पी. कोईराला की बैंक डकैती का भी उदाहरण दिया करते थे । परन्तु मैं उन्हें समझाना चाहता था कि मैं अपनी क्रान्ति का श्री गणेश किसी बैंक की डकैती से नहीं करना चाहता ।

“तो”?

“तो क्या, इतने महत कार्य का श्री गणेश मैं इस तरह से करना चाहता था कि सारी दुनिया में तहलका मच जाय , हर राष्ट्र के मन में मेरे प्रति महती विचार धारा का प्रवाह हो जाय । मैं जन जन की जुवान पर बैंठ जाउ‘‘, मैं जन जन के ह्रदय में समा जाउ‘‘ । क्या यह काम एक छोटी सी वैंक डकैती से सम्भव है ?

“नहीं ”

“इसलिए मैंने उसके लिए एक अलग समय चुना था, एक अलग योजना बनाई थी । सिर्फ उचित अवसर की तलाश थी । यह अवसर आने ही वाली थी कि तबतक हमलोगों को छोडकर उनलोगों ने अलग दल का निर्माण कर लिया । अत्यधिक गोपनियता के कारण वहुत सी वातों को किसी से बतलाई नहीं जाती, वहुत सी वातें तुम

DO NOT COPY

देखोंगे कि तुझे भी नहीं बतलाई जायेगी। वह हमारे काम करने का निराला तरीका है और हम अपने इसी तरीके एवं गोपनियता के वलपर अपनी लडाई जितते हैं। ...... और वह समय पूरे एक वर्ष के वाद आया। वे लोग हमलोगों को छोडकर जा चुके थे। हमलोगों ने सम्पूर्ण नेपाल में एक संगठित क्रान्ति का वह श्री गणेश किया जिसका कोई इतिहास नेपाल में नहीं है। और जब ऐसा किया गया , जो लोग हमे छोडकर गये थे, उन्हें ही यह अच्छा नहीं लगा। जो लोग हमें वार वार हमला करने को कह रहे थे वही लोग अब इसे विभिन्न तरीकों से छुरा मारने लगे। कुछ लोग मारे गये, कुछ लोगों के परिवार के लोगों को परेशान किया जाने लगा तो वे लोग सारा दोषारोपण हमारे उपर थोपने लगे। वाह ! क्या खूव ? जो लोग हमले के लिए उतावले थे वही लोग कितने कायर निकले, अथवा उनकी कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं हुआ ? .... जो भी हो हम इतिहास का पहला पन्ना लिख चुके हैं अब जो भी हमारे साथ रहना चाहते हैं, जो भी हमारे साथ आना चाहते हैं वे खुशी से आ सकते हैं, पर उन्हें हमारे क्राइटेरिया में फिट होना पडेगा।

“क्या क्या क्राइटेरिया“ हैं, आपके ?”

“यही कि यहा“ साम्प्रदायिकता के लिइ कोई जगह नहीं है। पहले हम अपनी स्वतन्त्रता के लिए लडेंगे। वाकी लडाई उसके वाद होगी। हमारे सभी लोग इस वात को जानते हैं , समझते हैं, पहाडी लोग भी, मधेशी लोग भी। दूसरी वात यह कि हमारी किसी भी गोपनियता को भंग करने वाले एवं सरकार को भेजनेवाले लोगों को

हम गोली से उडा देते हैं। कोई किसी जनता को नहीं सतायेगा एवं किसी प्रकार का चन्दा नहीं लेगा । कोई चोरी एवं डकैती नहीं करेगा। किसी लडकी के साथ अवैध सम्बन्ध होने पर उसे पार्टी से निकाल दिया जाता है । सबको सादगी, सफाई, इमान्दारी एवं भाई चारे के साथ रहना पडता है । किसी प्रकार के माद्रक द्रव का व्यवहार नहीं होता। फिर उन्होंने कहा :-

"अच्छा संजय बोलो, तुम्हारे दल का क्या समाचार हैं ? कहा" तक प्रगति हुई है ? सभी लोग आज्ञा पालक तो हैं ? सभी अपने काम में सक्षम तो हैं ? किसी प्रकार की कोई त्रुटि ?"

"नहीं सर ऐसी कोई वात नहीं है। हम सभी तरह से पूर्ण सक्षम हैं। हमें उस दिन का इन्तजार हैं जब हम सर के एक इशारे पर अपने देश में इधर उधर विखर जायेंगे और अपने अपने काम में लग जायेंगे । सवने सर को अपना सलाम भेजा है । सर आप चलकर एकवार उनका निरीक्षण कर लीजिए न ।" संजय ने वडी आज्ञाकारिता के साथ यह कहा ।

"नहीं संजय तुम्हारे विंग का निरीक्षण करने से पहले मैं तुम्हारी रचना के विंगका निरीक्षण करना चाहता हू" । मैं महिलाओं को पहले एक काम में देश भेजना चाहता हू" । उसके वाद ही और लोगों को भेजा जायेगा ।

"मेरे विचार में सम्पूर्ण लडकियों को एक साथ नहीं भेजना चाहिए ।"

DO NOT COPY

"क्या चाहिए, क्या नहीं चाहिए इसके लिए तुम कह सकते हो पर करने न करने का अधिकार मेरा रहने दो । कुछ वैसा ही काम है । वाकी वात वाद में समभ्कायेगें ।"

"जी सर " संजय ने जैसे भूल सुधारते हुए बोला ।

"बुरा न मानना ।

उसके वाद वे लोग जंगल के उस जगह पर पहु‘‘चे जहा‘‘ पर लडकियों का ट्रेनिङ्ग चल रहा था । रचना वाद में आकर दल का कमाण्डर वन गयी थी । इस वात की चीढ यहा‘‘ के दो चार लडकियों को तो थी परन्तु रचना की क्रियाशीलता विनयप्रियता एवं दक्षता ने सवको शान्त करके रखा था । जब वे लोग वहा‘‘ पहु‘‘चें, लडकिया‘‘ जुडो कराटें की विशेष लडाई में मस्त थी । सरदार को देखते ही वे लोग अभिवादन की मुदा में खडी हो गयी ।

"गो आ‘‘न" हम यहीं देखने आये हैं । सरदार ने कहा और लडकिया‘‘ पहले की तरह क्रियाशील हो गयीं । थोडी देर में सभी लोग अपने अपने स्टेनगनों को उठाकर केहुनी के वल रेंगने लगी । तब उस महिला ने अपने बच्चे को पीठ पर बा‘‘ध लिया । वन्दुक चलाते समय वह अपने बच्चे को पीठ पर ही वा‘‘ध लेती हैं । रेंगते रेंगते थोडी दूर जाकर सवने फायरों का अम्वार लगा दिया । यह भ्कूठा वार सामने वालू से भरी वोरियों पर जाकर अन्धाधुन्ध पड रही थी । थोडी ही देर में सभी बोरियों की लाशे ढेर हो गयीं । इस प्रकार वगल की नदी में तैरना, पुल वा‘‘धना, पेडों पर चढना आदि से

लेकर वन्दुक, स्टेगन आदि सभी हथियारों के करतब देखकर सरदार काफी खुश हुए । उन्होंने रचना को बुलाकर पूछा :-

“क्या तुम अपने विंग के काम से पूरा संतुष्ट हो ?”

“जी हा“, मैं सन्तुष्ट हू“ ।”

“क्या इन्हें पूरी तरह एक्सन में उतारा जा सकता हैं ?”

“पूरी तरह सर ।”

“इनमें कोई मुखविर तो नहीं ।

“जी नहीं सर, पर दो चार लडकिया“ मुझसे ईर्ष्या रखती हैं ।

“नाम ?”

“नम्बर ६, १०, १५, २१ सर ।”

“और वह लडकेवाली औरत ?”

“जी वह काफी अच्छी हैं सर ।”

“तुम्हारी कोई इच्छा ?”

“जी सर मैं चाहती हू“ कि मैं भी अपने बच्चे को इसी तरह से लाकर रखू“ । मैं उनके विना काफी तरसती हू“ सर ।” कहते कहते रचना की आ“खों से पानी निकल गयी ।”

“क्या इस पानी को तुम्हारी कमजोरी समझा जाय ?”

“ नहीं सर ! यह मेरी कमजोरी नहीं, यह मेरी शक्ति हैं । बच्चे की याद की यही ममता मुझसे हर वह काम करवाती हैं जिसे मैं यहा“ कर रही हू“, अधिक दक्षता एवं कठोरता के साथ । इसे मेरी शक्ति समझा जाय सर ।”

DO NOT COPY

“वाह हम खुश हुए ।”

“शुक्रिया सर ।”

“तो तुम तैयार हो जाओ, तुम्हारी परीक्षा की घडी आ रही हैं और उसकी भी जो तुम चाहती हो ।

“मैं समझी नहीं ।”

“अरे इसमें समझना क्या हैं । आगामी वरसात में तुम सबको देश में प्रवेश कर जाना हैं । तीन तीन लडकियों का दल १० जगहों पर विखर जायेंगे । विखर कर वहा“ जो काम करेंगे उसकी सूचना तुम लोगों को वाद में दी जायेगी । जाने से १० दिन पहले मिटिंग में टाइम एवं कार्य तय कर लिए जायेंगे । तुम्हारी टोली काठमाण्डू जायेगी । कार्य सम्पन्न करने के वाद तुम अपने बच्चे को लेती आना । तुम पर किसी का शक भी नहीं होगा । इस वार हमने महिलाओं को इसलिए चुना है कि सरकार समझेंगी कि कार्य कोई मर्द ने किया होगा और वे अंधी की तरह अधिराज्य भर लोगों को पकडेगी । जबकि तुम लडकिया“ अपना काम करके आसानी से यहा“ पहु“च जाओगी ।

“मैं समझ गयी सर । आप अपना सम्पूर्ण प्लान अपने तरीके से खवर करें । आज्ञा हो तो अब मैं अपना नीजी अभ्यास करने जाउ“ ?”

“अरे हा“, तुम्हारा अपना नीजी अभ्यास । पर हमलोग तो इसमें विश्वास नहीं करते फिर भी तुम्हें अपने विंग का कमाण्डर वनाया हैं । तुम क्या इस दकियानूस विचार को लिए घूमती हो ?” अग्नि

सिंह ने संजय की ओर कनखियों से देखते हुए कहा पर संजय को इस पर विश्वास था और वह अपने सरदार के इस वात से सहमत नहीं था । रचना उनकी ओर देखते हुए बोल पडी :-

“नहीं सर, आप भूलते हैं । यह दकियानूस विचार नहीं । यह पूरातनपंथी नहीं है वल्कि, यहा“ तक हमारा विज्ञान पहु“च ही नहीं पाया है । अब जाकर इसपर विज्ञान की एक नयी धारा ने अपना विचार करना शुरु किया है । जिसे कहते हैं परामनोविज्ञान । निश्चित रुप से हमारा यह प्रयोग ग्रामीण तंत्रमंत्र से भिन्न रुप में होगा । पर अपनी मां के द्वारा दी चीज को विज्ञान की वैज्ञानिकता में ढालकर मैं इसे अपने ग्रुप के लिए प्रयोग करना चाहती हू“ ।”

सुनकर संजय और अग्नि सिंह दोनों ही आश्चर्य मिश्रित मौन धारण करते हुए उसे अपने यथास्थान पर जाने का इशारा किया । रचना ने कुछ लडकियों को दोनों की खिदमत में लगाकर खुद जंगल में वीलिन हो गयी ।

खाना पीना खाकर उनलोगों ने आराम किया । करीव एक घंटे के वाद वे लोग उत्सुकता वस रचना को देखने के लिए चले । दूर जंगल में एक जगह रचना एक शीला के उपर बैठकर ध्यान की मुद्रा में अभी तक पूरव दिशा की ओर मु“ह करके बैठी हुई थी । उसके वदन के चारों तरफ जंगली हीरण, खरगोस आदि चहलकदमी करते हुए विचरण करते थे, मानों उन्हें इस शिला र बैठी रचना से कोई डर नहीं वल्कि दोस्ती हो गयी हो । इतने में ही हाथियों का एक झुण्ड आया और अग्नि एवं संजय दोनों एक झाडी में छुप गये ।

DO NOT COPY

वे लोग डर रहे थे कि हाथियों का झुण्ड रचना का अनिष्ट कर सकता है पर रचना का निर्देश था कि ध्यानमुद्रा की अवस्था में उसे कोई नहीं जगाये । झाडियों में छुपकर उनलोगों ने देखा जंगली हाथियों का झुण्ड रचना की ओर बढे जा रहे थे । दोनों दम साधे पेड से सटे रहे । थोडी देर में हाथियों का झुण्ड उस शिला पर गया, शिला पर अपना सूढ रगड रगड कर उस शिला से प्रेम किया और चलते वक्त रचना के गाल छु कर लौट गये मानों उनलोगों ने रचना का चुम्बन लिया हो । संजय यह सब देखकर दंग रह गया । अग्नि सिंह ने भी सुना था रचना की ध्यान मुद्रा के वारे में, पर देखा नहीं था । आज प्रत्यक्ष देखकर वे कुछ सोचने पर विवश हो गये । रचना कहती है कि अपनी इस शक्ति को हमारी क्रान्ति के लिए उपयोग करेगी । क्या हैं यह शक्ति ? आजतक इस शक्ति का प्रयोग, मैंने किसी क्रान्ति में न देखा है, न सुना है । अजीव वात है । पर रचना की आग्रहशीलता और नये प्रयोग को वह कैसे नकारे ? क्या इसलिए कि आजतक किसी ने इसका प्रयोग नहीं किया है ? नहीं अगर यह एक विज्ञान है और इस विज्ञान को कोई प्राप्त कर इसका प्रयोग करना ही चाहता हो तो उसमें बुराई क्या हैं । उसने मन ही मन सोच लिया कि रचना को अपनी शक्ति का प्रयोग करने की इजाजत वह देंगे पर इसके पहले वह इसे देखना पसन्द करेंगे ।

थोडी देर प्रतीक्षा करने के वाद जब रचना का ध्यान खुला उन्होंने पास जाकर पूछा :-

DO NOT COPY

“पर रचना मेरी समझ में यह नहीं आया कि तुम्हारा यह ध्यान का प्रयोग किसलिए है ? यह तो एक अजीब प्रकार का वशीकरण शक्ति हैं जिससें जंगली जानवर भी तुम्हारे पास आकर पालतू वनते नजर आते हैं, पर हम तो अस्त्रों का प्रयोग करनेवाले क्रान्तिकारी हैं ।”

“यह वशीकरण भी तो एक परामनोवैज्ञानिक अस्त्र हो सकता है सर । अस्त्र तो किसी प्रकार के भी हो सकते हैं । जब मनोवैज्ञानिक अस्त्र हो सकते हैं तो उसी प्रकार किसी प्रकार का परामनोवैज्ञानिक अस्त्र भी तो हो सकते हैं । जब हम विचारशक्ति से वडे वडे कारनामें करने लगेंगे तो यह हमारे विकास की पराकाष्ठा होगी । क्या आप हमारे धार्मिक लडाइयों में माया की लडाइयों के कारनामें नहीं सुने हैं ?”

“सुना है, पर आज का विज्ञान इसे कल्पनामात्र मानता है ।”

“कल्पना भी आदमी के पहु‘‘च के वाहर की चीज नहीं हैं । आज आदमी जो कल्पना करता है उसे कल मानव जीवन में उतार कर दिखला देता है । रेडियो, टी.वी. वेतार का तार, स्पुतनिक ये सब के सब एक दिन के मानव की कल्पनाओं के साकार रुप ही हैं ।”

संजय और अग्नि ने आश्चर्य से रचना के इस अद्‌भूत रुप को देखा ।रचना ने हाथ जोडकरं जाने की इजाजत मांगी और एक नजर संजय पर डाला ।

“हा‘‘-हा‘‘, अब तुम जा सकती हो और हा‘‘ संजय भी तुमसे कुछ वातें करना चाहता था । इसे भी साथ लेती जाओ ।” अग्नि समझ गये कि संजय की ओर देखने का मतलव था कि रचना संजय के

साथ अब एकान्त चाहती है । रचना और संजय को वह जानता था और उनके प्रेम को वह भरपुर फलने फुलने का मौका देता था । अपने क्रान्तिकारियों के बीच वह कडा पर नेक दिल इन्सान था । एक तानाशाह का ताव उसके पास फटकती भी नहीं थी । वह सवके साथ दोस्ती से पेश आता । पर किसी क्षण ऐसी शख्ती भी वरत सकता था जिसमें सबके सब का‘‘प जाते थे । जब अपने किसी साथी को मुखविर होने का आरोप सिद्ध हो जाता था तब उसकी शख्ती से इन्सान तो क्या जंगल के जानवर भी का‘‘प जाते थे । पर वही इन्सान रचना और संजय को एक साथ जाते देख प्रेम से झुमने लगा था । शायद वह अपने देश में इसी प्रेम को देखने के लिए जंगल का यह निर्वासन सह रहा था ।

DO NOT COPY

७

चारों ओर से टूटा हुआ घर, वर्षो से छाजन नहीं चढा था । चारों तरफ के टाट उजड कर या तो गिर पडे हैं या गिरनेवाले हैं । कुत्ते कही से भी घुस कर कहीं से भी निकल सकते हैं । दरवाजे हैं, पर दरवाजे का होना न होना वरावर है । रात को सोते समय कमरे में दरवाजा लगाकर सोने की कोई जरुरत नहीं । चार कमरों का घर । एक में संजय के वडे भाई रहते थे जो इस गरीबी से अपना पिण्ड छुडाकर अपने बच्चों के साथ शहर चले गये । दूसरे कमरे में धुऐं के बीच संजय के पिता सोते थे । उसने भी संजय के जाने के पहले ही वडे बेटे के साथ हो लिए । संजय उन्हें नालायक और कपूत वेटे के वरावर लगा था । तीसरे कमरे में बैल सोते थे जो छोंटे भाई की शादी में कर्ज उतारने के लिए बाजार में विक गये । उन्हीं वैलों के कमरे में छोटा सा टाट लगाकर किचेन वनाया गया था जिसमें निरन्तर धुए अभी भी उठते हैं । पा‘‘चवे कमरें में संजय की औरत अपने चार बच्चों के साथ सोती है । भाई द्वारा छोडे गये कमरे में संजय का वडा वेटा सोता है जिसे भरी जवानी में ही टी.वी. हो गया है और इलाज करने के लिए पैसे के अभाव में वेदम हुआ जा रहा है । सवसे छोटे लडके को जब मृगी का दौरा पडता है तब उसकी मा‘‘ अपनी गोद में लेकर नाक दाव दाव कर ठीक करती है । इसके अलावा उसके पास कोई उपाय नहीं है ।

DO NOT COPY

सारा गा“व है भरा पूरा । एक भाई सरकार में मंत्री है । दूसरे भाई के यहा“ दूध दही की नदिया“ वहती है । सैकडों बीघे जमीन हैं और हर रोज जमीन खरीदी जाती है । सारा गा“व अपने अपने तरीके से तरक्की पर है, पर किसी के पास जाकर कुछ मा“गिये तो टका सा जवाव मिलता है । सारे गा“व की इस वेरहमी के बीच संजय की औरत उसके विद्रोह एवं उसकी क्रान्ति या उसकी लडाई से कोई कम लडाई नहीं लड रही है । कहीं से भी उसका मन उसको अपनी लडाई से कम करके आ“क पाने में असमर्थ हो जाता है । परन्तु इसी बीच उसकी वेवफाई याद करके उसका मन भर जाता है । फिर वाद में अपने मर्म को वहुत तरीको से आश्वस्त करके, समझा बुझा कर उसकी लडाई के वारें में सोचने लगता है । नहीं उसकी लडाई अपनी जगह पर ठीक है, पर सिर्फ उसकी लडाई से कुछ नहीं होगा । इस तरह की लडाईयां सदियों से आदमी लडता आ रहा है । सदियों से आदमी अपने दुःख अपने कष्टों को भाग्य एवं भगवान के माथे थोपते आ रहा है । सदियों से वह इसी चक्की में पीसते आ रहा है । अब उसको उस लडाई की जरुरत हो गयी है, जिसके लिए हम घर से निकल पडे हैं ।

उसी समय पुलिस ने छापा मारा । फूस के उस टूटे हुए घर को विसियों पुलिस ने घेर लिया । टार्च की रोशनी से चारों ओर उजाला हो गया । पर संजय भी कम थोडे ही था । फूर्ति से उठा और वगल में पडे रिवाल्वर से तीन चार पुलिस कर्मियों को घालय करता हुआ भागा । पुलिसवालों ने उसका पीछा किया तबतक वह

अंधेरे में विलिन हो गया । एक वार व्यूह से निकलने के वाद उसे पकड पाना कम से कम पुलिसवालों की वस की वात नहीं । चक्र व्यूह के बीच से तो उसने एक वार निकलना सीख लिया था, ऐसी अवस्थाओं से निकलना तो उसके लिए आसान था। टर्च वाले अंधेरे में उसे पहचानते रह जायेगे और वह दफा हो जायेगा।

पर भागते हुए वह सोच रहा था कि पुलिस ने छापा मारा कैसे ? कैसे पता चला कि आज वह अपने घर पर आया है ? तभी उसे अपने चचरे भाई अम्विका का चेहरा याद आ गया। उसने शाम के धू‘‘धलके में व्रह्मवावा के पास ही उसे पहचान कर टोका था। संजय मु‘‘ह से कुछ भी न बोलकर ठिठका था, परन्तु अमिका ने भी उसे पहचान लिया ही था, दुवारा टोकना अच्छा नहीं समझा था। वह उसी समय वगल के पुलिस चौकी में पहु‘‘च गया था और अपनी शंका जाहिर कर दी थी। गा‘‘व और पडोस के सभी लोग मिलकर संजय के खिलाफ उसे वागी हो जाने का वयान दिया था। जबतब वह घर पर आता पर किसी से विना कुछ कहे, विना कुछ बोले जाना लोगों के मन में संदेह पैदा कर दिया था। सरकार को इस वात का पक्का सवूत नहीं मिल पाया था पर अग्नि का गप आजकल जोरों पर था। कई नौजवान अपना काम छोड कर उधर जा चुके थे और संजय को भी अपने घर एवं अपने काम से भागे हुए कई वर्ष वीत गये। वह भी कहीं दूसरी जगह नहीं जा सकता था। वह भी पहले सरकार की आलोचना किया करता था। काफी सोच विचार कर पुलिसवालों ने छापा मारने का निर्णय लिया था । छापा

मारकर पुलिस को अपना संदेह पक्का हो गया था। अब उसकी वीवी बच्चों की और अधिक नसीहत होगी .... क्या वह ऐसे समाज, ऐसे लोगों के लिए लडाई कर रहा है ? जो लोग उसके जान के पीछे पडे हुए है उन्ही लोगों के वेहतर जीवन के लिए वह अपना जीवन होम कर रहा , वलिदान कर रहा है क्यों ? ..... फिर वह अपना सिर झटक कर इस विचार को परे झटक देता है । ऐसे ही लोगों के लिए, ऐसे ही समाज की पुनः संरचना के लिए तो उसको कुछ करना है, उसके जीवन की वलिदान की जरुरत है । सैकडों, हजारों वर्षों से जो अपने कर्तव्य अपने अधिकार भूल गये हैं ऐसे ही लोगों के पुनरुथान एवं इनके अधिकारों को वापस दिलाने के लिए उसकी जरुरत है । उसने अपने सरदार को स्मरण किया जौर रचना को स्मरण किया, अपनी वीवी को स्मरण किया, अपने बच्चों को स्मरण किया । इसी तरह कितनी वातों को, इतिहास को स्मरण करता वह सीमा पार हो गया था ।

जब से संजय गया है वह अपने परिवार को भूला नहीं है । अपने बच्चों को भूला नहीं है, अपने लोगों को अपने समाज को वह भूला नहीं वल्कि इन्हीं की संरचना के लिए तो उसने घर छोडा था । वह जाहिलों की तरह वैठा नहीं था वल्कि इस समाज के पूनर्निमाण एवं इस देश के क्रूर, अत्याचारी व्यवस्था को समाप्त कर देने के लिए वास्तविक कर्म स्थल में उतर पडा था । रचना थी उसकी प्रेरणा, अग्नि सिंह थे उसके गुरु उसका ग्रुप उसका कार्यस्थल एवं अपना देश उसका लक्ष्य था ।

DO NOT COPY

अपनी वीवी बच्चों को दुर्दशा से वचाने के लिए उनका मदद करना पत्येक क्रान्तिकारियों का निर्णय था । तय था कि जब तब मौका, बेमौका जिस किसी परिस्थिति में पैसों की जरुरत हो उन्हें कुछ न कुछ पैसे पहु‘‘चाया जाय । वह काम किसी के द्वारा भी हो सकता था । संजय तो इस वार पहली वार आया था । इसके पहले तो कोई न कोई किसी न किसी तरह उसकी वीवी के हाथ में कुछ न कुछ पैसा रखकर चला जाता था । उसकी वीवी पूरे प्रमाण के साथ कि वह उसके पति के द्वारा भेजा गया है स्वीकार करती आ रही थी । इस वार अपने पति को आया देखकर वह फूली नहीं समायी थी । पर रात्रि के अन्धकार में वह कुछ भी नहीं कर पायी थी । उसने एक अपूर्व मानसिक उत्सव मनाया था जिसको दैहिक उत्सव में वदल कर उसने रात्रि के गहन अन्धकार में चारों ओर से टूट गये फूस के उस घर में संजय को समर्पित कर दिया था । पर उसे तब कहां पता था कि इतनी जल्दी उसके उत्सव समाप्त कर दिये जायेंगे, वह भी अपने ही भाइयों के द्वारा, अपने ही गा‘‘ववालों के द्वारा । उसे यह भाई विरादरी, यह गा‘‘व, यह समाज, चारों ओर जल्लाद की जल्लाद नजर आने लगे थे ।

इस घटना के वाद फूस के उस घर में पहरेदारी का शिकंजा कस दिया गया । संजय की घरवाली को पकड कर पुलिस थाने में ले जाया गया । कोई भी उसे वचाने नहीं आया । उसके चारों छोटे छोटे बच्चे उसके साथ किसी हिरनी की भयभीत बच्चों की तरह उससे लिपटे हुए थे । वडा लडका भाग कर अपने वडे

चाचा के पास चला गया था । वडे चाचा की भिडकी खाकर वह अपने एक दोस्त के पास जाकर छुप गया था । पुलिस थाने में संजय की घरवाली का बयान लिया गया ।

“तो हरामजादी, तुम अपने खसम को अपने पास बुलाती रही हो और हमें खवर भी नहीं ? वोल कव से वह तुम्हारे पास आता है ?”

“हजूर , मेरे खसम ने क्या किया, मैं कुछ नहीं जानती । वह तो आज रात ही मेरे पास आये रहे । इसके पहले तो वे कभी भी नही आये । वर्षों हो गये थे, उनका घर से निकले हुए । आज आये तो यह क्या से क्या हो गया ? मैं कुछ भी नहीं जानती ।”

“तु कुछ भी नहीं जानती ? बोल हरामजादी, तुम कव से पैसे लेती रही हो ? हमें पता चला है कि वह तुम्हारे पास हमेशा पैसा पहु“चाता रहा है ।”

संजय की घरवाली की गले का थूक सूख गया । यह तो सब था , फिर भी वह हिम्मत करके बोली ।”

“कैसे पैसे हजूर ?” पैसे कौन, कहा“ से ? मैं कुछ समभी नहीं ?”

“सटाक ! सटाक !! सटाक !!! कोडे पडने लगे उसकी पीठ पर “शाली कुछ समभी नहीं, अब बोल इस कोडे को समभी कि नहीं हरामजादी ?”

वह क्या जवाव दे ! डरी, सहमी हई वह सब कुछ समभ रही थी । कुछ भी जवाव नहीं देना है, वस यही जानती थी । वह जानती भी तो नहीं थी कि उसका पति कहा“ रहता है, कैसे रहता है

DO NOT COPY

। वर्षो वाद घर में आये हुए पति को कोई भी पुलिस के हवाले क्यों करेगा ? वह इतना जानती थी की उसका पति इन्हीं जल्लादों के विरुद्ध लड रहा है जिनके कोडे उनकी पीठ पर वरस रहे हैं । उसे दुख था तो वस यही कि ये अपने कहलाने वाले लोगों में से किसी ने भी आकर उसका हाल नहीं पूछा । अपने दो छोटे बच्चे भी वह साथ लेती गयी थी जो अपनी म‘‘ा की पीठ पर कोडे की मार को टुकुर टुकुर देख रहे थे । वहुत पहले रो धोकर वे शान्त हो गये थे और अब मृगशावक की तरह भयभीत एवं सहमे हुए थे । संसार के इस अजूवे को अपनी फटी फटी आ‘‘खों से वे देखते एवं हृदय में उतारते जा रहे थे । गनीमत यही थी कि उनको कोई मार नहीं रहा था वल्कि कुछ भद्दी भद्दी गालियों से ही काम चला लेता था ।

शाला, सा‘‘प का वेटा स‘‘पोला ।

वे दोनों बच्चे उनकी इस भाषा को नहीं समझते हुए चुपचाप थे । काफी पीट पाट कर संजय का पता ठिकाना उगलवाने में असफल होकर पुलिसवालो ने उसको उन दोनों बच्चों के साथ एक कोठरी में वन्द कर दिया ।

थोडी देर के वाद अपने श्वसुर को एक पुलिस वाले के साथ गुजरते हुए उसनें देखा । उसने उस कोठरी की ओर देख कर अपना मु‘‘ह फेर लिया । बच्चों को भी नहीं देखा उसने । श्वशुर को देखकर वह थोडी आस्वस्त हुई थी परन्तु उनके उस ताव को देखकर, वह बुझ सी गयी । दोनों बच्चों को सबकुछ एक अज्ञात अचम्भा लग

रहा था । थोडी देर के वाद इन्सपेक्टर साहव के सामने श्वसुर को गिडगिडाते हुए उसने सुना ।

“हजुर , माई वाप, वेटा नालायक हो गया, वागी हो गया । हमने उससे उसी समय से रिश्ता तोड लिया । असमन समझता हू“ कि हमारा लडका मर गया । उसकी औरत उससे रुपया लेती रही है तो उसको सजा दिजिए हजूर अपने साथ छोटे छोटे बच्चों को भी दुख दे रही है । गाय को छोडकर वछडा कहा“ जायेगा ? पर मैं क्या कर सकता हू“ ? मुझे इस हरामजादी से भी कोई ताल्लुक नहीं है । हजुर सच कहता हू“, मेरे वडे, लडके से पूछ लीजिए । वही मेरा असली लडका है । सरकार जो कहती है, वही करता है वह हजूर । इतनें चोर, डाकुओं को वह पकडवा चुका है कि अब सरकार उसे वागियों को पकडवाने के लिए कहती है । वह इसे भी कर दिखायेगा । हजूर मेरा असल लडका है । एक न एक दिन वह अपने छोटे भाई को भी पकडवा देगा हजूर । सच हजूर विल्कुल सच ।”

संजय की पत्नी की आ“खों में आ“सु ढलके । इन्सपेक्टर ने उसके ससुर को छोड दिया । वे उनके पैरों पर पडते, नमस्ते करते हुए, वहा“ से भाग खडे हुए । संजय का वडा भाई दुर्जय पंचायती व्यवस्था को अपनाकर उसके पिठुओं के साथ तन, मन , धन से लगा हुआ था । वह इलाके भर में दवंग व्यक्तित्व का मालिक था । संजय के वागी होने के वाद सरकार ने दुर्जय का महत्व और अधिक वढा दिया था । भाई भाई में दुश्मनी जो पहले से चली आ रही थी अब

पराकाष्ठा पर पहु‘‘च चुकी थी । कितने चोर डाकुओं को पालते, कितने चोर डाकुओं को पकडवाते वे अपनी यात्रा यहा‘‘ तक तय कर चुके थे । अव सरकार उनसे किसी भी तरह उनके छोटे भाई को पकडवाने के लिए कहती थी । इसके लिए वे कठिन प्रयास कर रहे थे । पर सफल नहीं हो रहे थे । एक वार जब वह पकडा गया था तो उसके पास वे फटकने भी नहीं गये । १० दिनों तक भूखा वह हिरासत में पडा रहा । परन्तु दुर्जय ने प्रयास किया कि उन्होंने ही संजय को छुडाया था । उसके कुछ दिनों के वाद संजय भाग चला था । संजय और दुर्जय की दूरी अत्यधिक वढती चली गयी थी । दुर्जय संजयको अपना दुश्मन नम्बर १ समझने लगा था । उसने चाटुकारिता का जो बीज बोकर अपने बच्चों के लिए जो सपने देखे थे, उन सव पर, संजय पानी फेरता हुआ नजर आया था । वह दिन रात उसे परेशान करने लगा और अन्त में. संजय घर छोडकर चला गया । वही दुर्जय आज थाने में हाजिर हुए । पुलिसवालों ने उन्हें वैठने के लिए कर्सी दी और थोडी देर इधर उधर की वातें करने के वाद उस कमरे के पास ले गये जहा‘‘ अपने ही वछडों के साथ संजय की पत्नी वन्द थी । बच्चे अपने चाचा को देखकर उसी तरह सहमें खडे रहे और जब उन्होंने उन्हें अपने पास बुलाया तो वे अपनी मा‘‘ के साथ और अधिक चिपक कर देखने लगे । वे बच्चे अपने चाचा की हर भाषा को समझते थे, उनका हर व्यवहार उनका हर अत्याचार उनलोगों ने घर पर देखा था । दुर्जय ने संजय की पत्नी को अपने पास बुलाया और बोला :-

DO NOT COPY

"देखो छोटी, पुलिस जो कुछ पूछती है उसका सही सही जवाव दे दो तो वे तुम्हें छोड देंगे । ....   और फिर उसका पता बताने में तुम्हें हर्ज क्या है ? वह कहता तो होगा कि वह कहा" पर रहता है ? तुम वतला दोगी तो कौन सी पुलिस उसे पकड लेगी । वह तो हिन्दुस्तान में जायेगी नहीं । अगर पुलिस को नहीं बताओगी तो मुझे ही वता दो । आज तक वह कितने पैसे देता रहा है, किसके द्वारा गा"व में पहु"चा रहा है ? वे एक दूसरे को कैसे पहचानते एवं यहा" तक पहु"चते हैं ?"

वह कुरेदकर क्लु लेना चाहता था, पर उस वेवकूफ को यह पता नहीं था कि वागी उसकी तरह वेवकूफ नहीं होते कि वे अपने क्लू किसी को भी वतला देंगे । न संजय की पत्नी जानती थी और न उसे झूठ बोलने आता था । वह बोली :-

"पर मुझे मालूम नहीं तो क्या बताउ" भाई साहव ! वस मैं इतना ही जानती हू" कि कभी कभार नया नया चेहरा आकर हमें थोडे वहुत रुपया दे जाता है । मैं उसे अपने बच्चों के लिए ले लेती हू" क्योंकि आपने तो हमें अलग करके हमें मरने के लिए छोड दिया है । जब वह आदमी कहता है कि उन्होंने भेजा है , तो फिर मैं क्यों नहीं लू" ? सरकार के लिए वे क्या हैं, मैं नहीं जानती , पर मेरे बच्चों के वही वाप हैं । और उनके द्वारा भेजे गये रुपये लेने में कोई हिचक नही । जो सरकार रुपया लेने के लिए मना करती है वह सरकार मेरे भूखे बच्चों को खाने के लिए नहीं देती ।"

DO NOT COPY

अपने जेठ के कपटयुक्त वचन को सुनकर संजय की पत्नी विफर पडी थी । वह उसे छुडाने नहीं वल्कि अपनी सफाई देने एवं उसके द्वारा उसके पति का कोई क्लु जानकर उनका अनिष्ट करने आया है । उसने उनके वारे में कुछ भी पता नहीं है कहकर मु‘‘ह फेर लिया और जाकर एक जगह बैठ गयी ।

“तो वहू, मैं जाउ‘‘ ? फिर सोच लेना पुलिसवाले कितने दिनों तक तेरी दुर्गति करेंगे इसका कोई पता नहीं ।”

“अरे भाई साहव, आपकी इस वहू की कौन सी दुर्गति वाकी है ? एक बलात्कार वाकी रह गया है वह भी कर लेंगे । इससे अधिक तो वे कुछ नहीं कर लेंगे ? जान ले लेंगे, इससे अधिक तो वे कुछ नहीं कर लेंगे ?”

“तो इसके लिए तुम मुझे दोषी कहना चाहती हो ? जो दोषी है वह तुम्हें इस हवालात में पहु‘‘चा कर दफा हो गया और गाली मैं खा रहा हू‘‘ ?”

“भाई साहव, वे तो केवल दफा हो गये, पर आपकी तरह मुझे हवालात में भेजवाकर जश्न नहीं मना रहें हैं । कहिए आपके जश्न में क्या कमी है तो मैं उसे पूरा कर दू‘‘ ? क्या आपके सामने मैं पुलिस वालों के पास जाकर प्याले में शराव ढालू‘‘, उनके आगे ना‘‘चू, उनके आगे कपडे खोल दू‘‘ ? वोलिए क्या करने से वे मुझे छोड देंगे ? मैं वहीं करु‘‘गी और आप मुझे छुडवाने का श्रेय लेकर घर पर चलें ?”

“ अरे अपने लिए नहीं तो इन दो मासूम बच्चों के लिए तो तुम हवालात से वाहर निकलने का उपाय करो । ”

“मैं जहा‘‘ हू‘‘, ये बच्चे वही ठीक हैं ” वह विफर पडी और बच्चों की ओर मुडकर बोली “ऐ अन्टू-कन्टू, तुम लोग दरवाजे पर जाकर थूक आओ तो ।”

अन्टू-कन्टू उठे और दुर्जय को दिखला कर दरवाजे पर थूक कर चले आये । यह देखकर दुर्जय का कान गरम हो गया । वापरे वाप, सा‘‘प का बेटा स‘‘पोला । सब के सब वागी बनेंगे । वह वापस मुड गया । संजय की पत्नी वही उस कमरे में सुवकती पडी रही । सास है, ससुर हैं, भसुर हैं , पति है, प्रभु है, फिर भी वह कितना असहाय, कितनी अकेली है, इस हवालात में । दिन भर वह इसी तरह पडी रही ।

सूर्यास्त हुआ, अंधेरा घना होने लगा । किसी सिपाही ने थोडा खाना लाकर उसे दे गया । उसने उसे बच्चों को खिला दिया खुद उसी तरह भूखी पडी रही ।

किरिर्र चुई चू‘‘

आधी रात को किसी ने दरवाजा खोला और भीतर आया । बच्चे हवालात के उस गन्दे घर में भी उसी तरह सो गये थे जैसे घर में सो जाते थे । किसी को भीतर प्रवेश करते ही वह सहम कर उठ बैठी । वत्ती जल रही थी और उस पुलिसवाले को किसी का कोई डर नहीं था । वह आया और इसके पहले कि संजय की पत्नी उठकर भागने की कोशिश करे उसे दवोच लिया । संजय की पत्नी ने सोच

लिया कि वही होगा जो अपने जेठ से उसने कहा था , वलात्कार । इन पुलिस वालों के बीच बलात्कार को इज्जत की रक्षा कहते हैं । ये रक्षक लोग किसी औरत की इज्जत की रक्षा इसी तरह करते हैं । जब कोई औरत फरियाद लेकर इनके पास आती है तो इसी तरह पहले उसकी इज्जत से खेलते हैं और फिर दूसरों के द्वारा उसकी उसी इज्जत की रक्षा करते हैं । पर वह भी ग्रामीण संस्कारों में पली अपनी इज्जत से वढकर किसी चीज को नहीं मानती थी । वह चिखने, चिल्लाने से पहले, उसे ही छोड देने को कहने लगी ।

“ऐसा मैं हरगिज नहीं होने दू“गी , जालिम, तुम छोड दो मुझे ।”

“अरे मैं कैसे छोड दू“ ? जाते समय तेरे जेठ ने भी कह दिया था कि हम तेरे साथ जो करना हो करें । मैं उसके लिए कुछ सिफारिस नहीं कर सकता ।”

“क्या वकते हो तुम ? क्या वह अपनी इज्जत तक से खिलवाड करने के लिए कहेगा ?”

“अरे छोड , ओ शाला कहे अथवा नहीं कहे तो भी हम तुम्हें नहीं छोडेंगे । वह शाला क्या ? सरकार का पैसा खाता है, सरकार का तलुवा चाटता है ? वह कायर ।

सुनकर संजय की पत्नी को अपनी जेठ की दशा पर तरस आया । पर इस समय वह अपने को कैसे वचाये ? अचानक वह चिल्लाने लगी ।

“बचाओ । बचाओ ॥ छोड दो मुझे , यह मेरी इज्जत लूटना चाहता है ।”

उसने सोचा था कि यह अकेला पुलिस अपने वहसीपन में यहा“ चला आया है । दूसरे पुलिसवाले सुनकर उसे ऐसा करने से रोकेंगे । परन्तु उसका सोचना गलत निकला ।

“अरे क्या चिल्ला रही है, हरामजादी । यहा“ सब कोई जानते है कि मैं यहा“ यह करने आया हू“ और मेरे जाने के वाद दूसरे आयेंगे ।”

सुनकर संजय की पत्नी के होश उड गये । बच्चे तबतक जग चुके थे । वे सहम कर कोने में खडे अपनी मा“ के साथ हो रहे वलात्कार को देख रहे थे, रो रहे थे । यह था इस व्यवस्था की देन, यह था इस देश का अन्याय । अपने भावी वच्चों के सामने मा“ पर वलात्कार । इसी व्यवस्था के घमण्ड में, इसी व्यवस्था के लिए वागी हो गये लोगों को दण्ड देती है सरकार । उसे आतंकवादी कहती है सरकार ,उसे फिरकापरस्त कहती है सरकार ।

असहाय पर फुफकारती हुई संजय की पत्नी रक्षा करती हुई उस पुलिस भेडिये से अपने को वचाने का प्रयास करती छटपटाती जा रही थी । वह अच्छी तरह जानती थी कि अगर यह दरिन्दा मेरे शरीर के साथ अपना मुह“ काला करने आया है तो अवश्य वह मुझे जान से तो नहीं मारेगा । ऐसी नौवत तो तभी आयेगी जब मेरे साथ वलात्कार करने में यह हर तरह से अक्षम हो जायेगा । इसलिए लगातार वह चिखती, चिल्लाती एवं छटपटाती हुई वेदम हुई जा रही थी ।

DO NOT COPY

तभी अचानक विजली गुम हो गयी एवं एक क्षण को चारों ओर सन्नाटा छा गया ।। यह विजली केवल पुलिस थाने की ही नहीं थी वल्कि सारे शहर में घुप्प अंधेरा छा गया था। फुर्ति से एक छाया इस अंधेरे से लाभ उठाकर उस कमरे में घुसा जहा‘‘ संजय की पत्नी अपनी इज्जत की रक्षा करती छटपटा रही थी। वह व्यक्ति जो भूखा भेडिया हो चुका था, इस अंधेरे में भी अपने प्रयास को रोकने का प्रयत्न नहीं कर रहा था। पुलिस वाले इधर उधर भाग दौड करने को सोचा ही नहीं क्योंकि मध्यरात्रि के समय सारे शहर में विजली जाना और फिर तुरत आ जाना लगा ही रहता था । सभी लोग या तो सोये थे या ड्यूटी वाले वैसे ही फिर विजली आ जाने का इन्तजार कर रहे थे।

पर विजली थी कि कुछ अधिक देर लगा रही थी। इस घूप अंधेरे में एक वडा सा चाकू उस पुलिस वाले के पेट में समा गया। चाकू चलानेवाले ने अपने मजवूत हाथों से उसका मु‘‘ह वन्द कर चुका था। चू‘‘ से भी उसके मु‘‘ह से आवाज वाहर निकलने नहीं दिया। पुलिस वाले का काम तमाम हो चुका था। इतने में एक दूसरी छाया गेट पर तैनात दो पुलिस कर्मियों का काम तमाम करने वहा‘‘ पहु‘‘च चुकी थी।

“वाहर निकलो, चलो हमारे साथ। ” कहते हुए पहली वाली छाया ने संजय की पत्नी का हाथ पकडा। उस हाथ के स्पर्श ने संजय की पत्नी को उपर से नीचे तक शरीर झनझना दिया था। वह उसके स्पर्श एवं आवाज दोनों को पहचान गयी थी। दूसरी छाया

ने बच्चों को उठाया और फूर्ति से वाहर निकल गया। गेट पर कोई खतरा नहीं था। दोनों पहरेदारों का काम पहले ही तमाम हो चुका था। भाग कर थोडी दूर पर खडी एक कार में सभी लोग बैठकर हवा हो गये। यह काम इतनी फुर्ति एवं इतनी सफाई से हुआ कि किसी को कानों कान खबर नहीं हुआ।

सुवह थाने के सभी लोग दंग रह गये। तीन तीन पुलिस कर्मियों का खून करके वागी संजय की पत्नी को छुडा ले गये थे। इस वात को जब संजय के पिता एवं भाई ने सुना तो वे किसी अनिष्ट की कल्पना करने लगे। जब लोगों ने सुना तव कुछ को जलन हुई एवं कुछ को मन ही मन खुशी हुई। पुलिसवाले हरकत में आ गये। सभी थानों एवं बोर्डर के इन्चार्ज के पास इस वात की इत्तला दे दी गयी थी एवं सावधान कर दिया गया। परन्तु वागी सवकी आ"खों में धुल झोंककर थाने में यह चीट छोड दिया था :-

"अब से अगर हमारे साथ , हमारे लोगों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है तो पूरे अधिराज्य भर के थाने को वम से उडा दिया जायेगा।" पढकर इन्सपेक्टर एवं उपरीक्षक के थूक सूख गये। वे अपनी नब्ज पर हाथ रखकर यह गिनने लगे कि दिल की धडकन कितनी तेज हो गयी है। इसके पहले तो इन वागीयों ने कभी ऐसी हरकत नहीं की थी। पर इसके पहले तो हम लोगों ने भी तो ऐसी हरकत नहीं की थी। वे हमारा अच्छा जबाव दे गये हैं। ऐसा लगता है दुश्मन हमे हर तरह से शिकस्त देने के लिए तैयार हो चुका है। कौन रहेगा, हम अपनी तवादला करवा लेते हैं।

DO NOT COPY

आतंकवादियो का गढ और नाम से भी प्रसिद्ध गढ यही है । शाला, यहा‘‘ के सभी लोग पुलिसवालों को तीरछी निगाहों से देखता है । यह सोचकर कलैया थाने के इन्सपेक्टर एवं उपरीक्षक महोदय इस घटना को छुपाने एवं अपनी तवादला करवाने में लग गये । सारे इलाके भर में उनलोगों की वदनियनती एवं असफलता का डंका बज गया था ।

संजय के पिता एवं भाई के पास यह पत्र पडा मिला कि संजय के और तीन बच्चों को कल सुवह होते ही रक्सौल रेलवे स्टेशन पर पहु‘‘चा दिया जाय । अगर ऐसा नहीं हुआ तो हम तो संजय के बच्चों को ले ही जायेंगे । रात की तरह कुछ पुलिस कर्मियों की तरह इसमें कुछ निरीह लोग भी मारे जा सकते हैं । हो सकता है कि इसमें संजय के पिता एवं वडे भाई भी मारे जा‘‘य क्योंकि हम उन्हें पुलिसवालों का आदमी समझते हैं । सुनकर दुर्जय का थूक सूख गया । सुवह होते ही वह संजय के तीनों बच्चों को, सेर भर मिठाई के साथ रक्सौल स्टेशन पर छोड आया । इससे अधिक न उसे कुछ करना था, न पूछना था । स्टेसन पर छोडकर वह इधर उधर देखने लगा कि कोइ आयेगा और इन वच्चों को ले जायेगा । तभी पीछे से किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा और वे वेहोश होते होते बचे । उन्हें लगा कि कोई उसका गर्दन दवाने के लिए उसका गर्दन अपने पंजों में जकड लिया हैं ।

“घवडाइये मत भाई साहव, मैं हू‘‘ संजय ।”

DO NOT COPY

“हा‘‘ हडवडा कर दुर्जय अपने छोटे भाई को देखकर सम्भलने का प्रयास करने लगा। दोनों की आ‘‘खें दोनों से मिली। एक ही कोख से जन्मे संजय एवं दुर्जय, पर दोनों में कितना अन्तर।

“संजय , मैंने कितना छुडाने का प्रयास किया। .... पर .... पर तुम कहा‘‘ रहते हो ? .... छोड दो यह .... ।

“सट अप” संजय के रोवीले एवं भारी भरकम आवाज को सुनकर दुर्जय की सिटी पिटी गुम हो गयी।

“मैं सब कुछ सुन चुका हू‘‘। इसकी मा‘‘ ने सबकुछ वता दिया है। .... हा‘‘ अगर आप यह जानना चाहते हैं कि हमलोगों ने कैसे इन्हें थाने से छुडा लाया और इसमें कितने लोग थे तो सुनिये हम केवल दो लोग थे। एक मैं और दूसरी एक लडकी। इतना कह कर उसने एक तरफ इशारा किया। तुरत एक नौजवान आया और दुर्जय से हाथ मिलाने को आगे वढाया और दूसरे हाथ से अपने सिर पर का विग उतार दिया। नागिन से केशों के लट चारों तरफ विखर गये। एक अप्रतिम सौन्दर्य , एक नारी पुरुष भेष में संजय का सहयोगी बनकर, पुलिसकर्मियों को मारकर हवालात से संजय की पत्नी को छुडा ले गयी।

हाथ मिलाकर वह औरत संजय के बच्चों को समटने आगे बढ गयी।

“हो सके तो आप अपनी खैरियत मनाइएगा और हमारे वारे में अथवा हमारे विरुद्ध आइन्दा कुछ भी मत करियेगा। भाई साहव।

इस वार आपको छोड दिया जाता है ।" यह कहते हुए संजय आगे वढ गया ।

यन्त्रवत खडा दुर्जय यह सब देखता रह गया । उसे मानों काठ मार गया हो । अपना ही छोटा भाई कितना रोविला और गर्वीला हो गया है, जंगल के शेर की तरह स्वच्छन्द, स्वतन्त्र । उसे लगा कि उसके सामने वह विल्कुल वौना हो गया है । वह भी इलाके भर में काफी दवंग समझा जाता था, परन्तु उसे आज समझ में आ रहा था कि उसका सारा दवंगपन, उसका सारा रौव, एक कायरता मात्र थी । असली रौव , असली स्वतन्त्रता तो संजय के पास है । वह भारी कदमों से घर वापस लौटा था ।

उसके वाद से संजय के परिवार को हिन्दूस्तान के ही एक शहर में गोप्य रुप से रख दिया गया एवं उनके खाने पीने की व्यवस्था कर दी गयी । इस अज्ञातवास को भी नेपाल की पुलिस अपने मुखविरों से पता करेगी, इसलिए सवके नाम वदल दिये गये । संजय का वडा लडका अब जवान हो गया था । उसे भी क्रान्तिकारियों ने अपने दल में शामिल कर लिया । उसे संजय के विंग में ही भर्ती किया गया । अब वह वही कालेज में पढ्ने लगा एवं ट्रेनिङ्ग लेने लगा । पार्टी के पास अब इतने पैसे हो गये थे कि वे अपने सभी क्रान्तिकारीयों को उचित परवरिस करते हुए अपनी क्रान्ति का संचालन कर सकते थे । इस तरह संजय के परिवार के रुप में उस क्रान्ति को पा‘‘च प‘‘ाच क्रान्तिकारी मिल चुके थे । एक जो जवान होकर शामिल हो चुका था एवं वाकी बच्चों के रुप में भावी उम्मीदवार के रुप में पल रहे थे ।

वे सब क्रान्तिकारी ही नहीं होंगे वल्कि वास्तविक क्रान्तिकारी होंगे। कौन रोक सकता है इन्हें क्रान्तिकारी वनने से ?

"ठक ! ठक !! ठक !!!"

दरवाजे पर दस्तक हुई

"कौन ?" भीतर से आवाज आयी।

"ठक ! ठक !! ठक !!!

फिर दस्तक हुई

"कौन ? " पूछती हू" कौन है वावा ? आई।" कहती हुई संजय की पत्नी ने दरवाजा खोला। दस्तक देनेवाली के दरवाजा ढकलते ही उससे चिपट गयी और बोली :-

"पहचाना मुझे ?"

"अरे , आपको कौन नहीं पहचानेगा ? परन्तु उस दिन तो आप विल्कुल मर्दो जैसी लग रही थी। क्या स्पीड से गाडी चलाकर भागी थी। परन्तु क्या आपको डर नहीं लगता ? पकडे जाने पर जो मेरे साथ वीत रहा था, वही आपके साथ भी ...... ।"

"अरे दीदी वह तो संजय था कि तुम्हारे चलते आग ववूला हो गया और नहीं मानकर खुद हमारे साथ तुम्हे छुडाने चला गया। नहीं तो इस पुलिस थाने के लिए हम दो लडकियां ही काफी थी, और इसके लिए प्रोग्राम वन भी चुका था। पर संजय जब खुद जाने की जिद करने लगा तब एक लडकी को कैसिंल कर दिया गया।"

"पर पकड में आ जाने पर तो वे आपके साथ वलात्कार कर सकते थे ?"

“अरे क्या कहती हो दीदी ? वलात्कार और हमारे साथ ? ऐसा होना विल्कुल मुश्किल है और फिर जो हमारे साथ वलात्कार करना चाहेगा वह समझो वेमौत मर गया ।

“वह कैसे ?”

“हम अपने साथ ऐसे प्वाइजन लेकर चलती हैं जिसे चेहरे एवं ब्रेस्ट पर मलती है । फिर वलात्कार करने वाले उसे चाटते ही मिन्टों में साफ । पोटासियम साइनाइड । ....”

“बाप रे ?”

“हा“ , हा“ ।”

पर जो भी हो, आपका वहुत उपकार है हमारे एवं हमारे बच्चों के उपर । मैं वहुत आभारी हू“ आपकी ।”

“शर्मिन्दा कर रही है आप ।”

“कैसी शर्मीन्दगी ?”

“आपके इतने बच्चे हमने वचाये । यहा“ पर लाकर उनको खाना दे रहे हैं पर ये सब के सब हमारी क्रान्ति के कल होने वाले नायक हैं । हम जो कर रहे हैं उसका फल कल मिलेगा । आप हमें कल के लिए हमारा नायक दे रही हो । इसलिए हम आपके आभारी हैं दीदी ।”

DO NOT COPY

पशुपति विकास क्षेत्र, अरेवियन वैंक स्थापना एवं सम्पूर्ण सामाजिक संगठनों में यहा‘‘ तक कि रेडक्रस जैसे पवित्रतम संस्था में भी वस लूट मचा हुआ था । लोगों से चन्दा लेना और उस चन्दा का कोई भी हिसाब जनता को न देना राणाकालीन शासन से लेकर आज तक निर्वाध गति से चला आ रहा था । सब अपने अपने ढुकुटी को भर लेने की होड में दौड रहे थे । निरीह जनता इस तमाशे को मूक दर्शक वनकर देख रही थी । देश के सर्वोच्च रानी को अपनी ढुकुटी में औरों के वनिस्पत कम नजर आया । वह राजा के उपर नाराज होकर इस कमी के लिए उन्हें दोषी सावित करते हुए तू-तू मैं-मैं करने लगी । थोडी वहुत अपनी प्रजा की भलाई चाहने वाला राजा भी इस चख चख से तंग आ गया । इधर गा‘‘जा, अफीम, हिरोइन, स्मैक की स्मगलिंग एवं मूर्तियों की चोरी से सारे देश की छवि धूमिल पड रही थी । वैंकक में देश के लोगों को देखते ही वहा‘‘ के लोग घृणा से म‘‘ुह फेर लेते थे । खेलकुद के सामानों में स्मैक एवं हिरोइन भर कर विदेश जाने लगा था और ओलम्पिक खेलों में देश के खिलाडियों की क‘‘पक‘‘पी छूटने लगी थी । नैन्सी रेगन का उत्तेजित स्वर सुनाई पडा था कि इस देश की सव प्रकार की सहायतायें वन्द कर दी जाय । तब जाकर कुम्भकरण की निन्द खुली एक दिन । वे अपने छोटे भाई को खाने के लिए निमन्त्रित किये ।

भव्य टेवल पर आमने सामने दोनों भाई खाना खा रहे थे । बडे भाई ने ही वात छेडने की पहल की :-

" मैं जो कुछ भी सुनता हू‘‘ वह विल्कुल सच है, पर आज मैं यह पूछने के लिए तुम्हें यहा‘‘ बुलाया हू‘‘ कि यह सब तुम क्यों करते हो ?"

"क्या करता हू‘‘ ?"

"यही गा‘‘जा, अफीम, स्मैक, मूर्तिचोरी। यह सब जानते हो देश को कहा‘‘ ले जा रहा है ?"

"देश जहा‘‘ कहीं भी जा रहा हो उससे मेरा क्या मतलव ?"

"क्यों तुझे कोई मतलव नहीं ?"

"नहीं ? हमें भला क्या मतलव हो सकता है ? देश जहा‘‘ कही भी जाय उसका उत्तराधिकारी आपका वेटा होगा, मेरा तो नहीं ?

"तो क्या इसलिए तुम देश को ले डूवोगे ?"

"तो क्या मैं अपने लड्के को आपके लडके का ड्राइवर बनाउ‘‘गा ? आपका लडका तो इस देश का वादशाह वनेगा और मेरा लडका क्या होगा ? क्या इसीलिए आपने इस खाने की मेज पर बुलाया है ?"

"बुलाया हू‘‘ इसलिए कि सारे संसार में अब हमारे उपर दवाव आ रहा है कि मैं तुम्हारा लगाम खिंचू अन्यथा अब हमारे पूर्खो की कमाई सब खत्म होने जा रही है।"

"तो हो जाय खतम, मैं जो कुछ कर रहा हू‘‘ सब ठीक कर रहा हू‘‘। और कौन नहीं कर रहा है ?"

"और कौन कर रहा है ?"

DO NOT COPY

"अरे भाई साहव, यह पूछिये कि कौन नहीं कर रहा । आपकी मा‘‘, आपकी वीवी, आपके सारे खून सब के सब यही कर रहे हैं फिर भी मुझे इस टेवल पर वुलाकर डा‘‘ट पिलायी जार ही है, अकेले क्यों ? ओ भाई साहव, क्या आप इस देश पर जुल्म नहीं कर रहे हैं ? सबसे वडा जुल्मी आप हैं क्योंकि आप इस देश का एकछत्र तानाशाह वनकर बैठे हुए हैं । मुझसे मेरी कमाई बन्द करने वाले से मैं कहता हू‘‘ कि क्या आप इस देश की छाती पर से उतरेंगे ? क्या आप इस गद्दी को छोड देंगे ?

"अवज्ञा , क्या वकते हो । सटअप"

"यू सट अप । सच इतना कडवा लगा ?" इस तरह से अवज्ञा ने क्रोध में खाना छोडते हुए चमच अपने वडे भाई के देह पर दे मारा । जूठा चमच वादशाह के कपडों को गन्दा कर गया । वह क्रोध से का‘‘पते, तिलमिलाते हुए अधूरा खाना छोडकर चला गया । इधर अवज्ञा भी अधूरा खाना छोडकर चला गया ।

इस घटना के वाद से राजा का अहंन्कार वहुत आहत हो चुका था । उधर सारे विश्व में दवाव बढता ही जा रहा था । यहा‘‘ तक कि अमेरिका जैसे देश से ऋण सहयोग वन्द होने की आशंका बढ गयी । इन्टरपोल अवाक था इस देश के शाशकों पर । वह कार्वाई करने के लिए इजाजत मांग रहा था । अन्त में राजा कुछ कदम उठाने पर बाध्य हुए । उन्होंने अपने विश्वस्त लोगों को इशारा

DO NOT COPY

दिया । सी.वी लामा, सरत गुरु‘‘ग और मुदिम गौचन को पकड लिया गया । सारे देश के स्मगलरों में आतंक मच गया ।

क्षेम बहादुर मल्ल को वम के घोटाले में पकड कर खोर में रख दिया गया । जनता में खुशी की लहर दौड गयी । अवज्ञा जी व्रिश्वेन में देश मण्डप का उद्घाटन कर रहे थे । सुनते ही वापस देश को रवाना हुए । तब तक चिडिया खेत चुग गयी थी । वे तिलमिला कर रह गये पर ....

पर उसने वीरभद्र पर अब अपना वास्तविक शिकंजा कसना शुरु कर दिया । सारे देश में उसकी समानान्तर सरकार तो चल ही रही थी अब उसने उसे और सक्रिय कर दिया । सभी विरोधी पार्टीयों को भी विरोध करने के लिए वह उकसाने लगा । पार्टीया‘‘ भी इस लडाई का भरपूर फायदा उठा लेने के लिए कुलबुलाने लगी । इसी सन्दर्भ में उसका आदमी अग्नि के पास एक गुप्त भयंकर योजना लेकर पहु‘‘ची । अग्नि मन ही मन मुस्कुराये एवं अपने विश्वस्त साथियों को वतलाये कि किस प्रकार सारे के सारे लोग उसके जाल में खुद चलकर पहु‘‘चने वाले हैं । वीरभद्र अपने उपर कसते शिकंजे को देख कर घवडाने एवं तिलमिलाने लगा । उसकी गति अब सा‘‘प और छुछुन्दर की तरह हो गयी थी ।

“भई गति सा‘‘प छुछुन्दर की री ”

अब वे कोई वहाना वनाकर क्षेम बहादुर मल्ल को छोडने के पक्ष में हो गये । सुरेन्द्र और राजेन्द्र की कहानी दोहराने से उन्हें कोई

फायदा नजर नहीं आया । उधर जागृत आदि कई नेताओं ने देश के अन्दर सुरेन्द्र और राजेन्द्र की कहानी दुहरायी जा रही है का वक्तव्य दे चुके थे । सब लोग जिसको जो मन में आता, उलजलूल वक्तव्य देने लगा था । उस वक्तव्य से किसको क्या फायदा होगा, किसको नहीं उसका किसी को ध्यान नहीं था । कम्यूनिष्टों के उपर सरकारी आदमी होने का आरोप लग रहा था ।

इसी सन्दर्भ में अब क्षेम बहादुर मल्ल को विमारी के वहाने वीर अस्पताल में भर्ती होने की इजाजत दे दी गयी । एक वार किसी वहाने रानी साहिवा भी उनसे मिल आयी थी । सब लोग सोचने लगे थे कि अब वह छूट जायेगा । परन्तु एक पत्रकार ने पासा पलट दिया । उसने क्षेम बहादुर मल का अन्तरवार्ता छाप दिया जो इस प्रकार था :-

पत्रकार सुकेश्वर -"क्षेम बहादुर जी, आप शेरे धनुषा कहलाते हैं । आप अपने को तराई का भी नेता कहते हैं । जब तक आप जिस विभाग में रहे उसी विभाग को खा गये का आरोप लगता है । इतने दिन हो गये, कोई भी आदमी आपको जमानत देने नहीं आया । अब आप राजा की असीम अनुकम्पा से यहा" पर भर्ती किये गये हैं । इस सम्बन्ध में आप को कुछ कहना है ?"

क्षेम बहादुर मल्ल : कहना है और बहुत कुछ कहना है । शेरे धनुषा तो हम हैं और हमेशा रहेंगे । शेर को पिजडें में वन्दर कर देने से क्या वह गीदड हो जाता है, पत्रकार महोदय ? आप की वातों से तो यही लगता है, जैसे हमें खोर में वन्द कर दिया गया तो मैं शेरे

धनुषा से गीदडे धनुषा हो गया । महोदय मुझे छुडाने के लिए लाखों व्यक्ति अपना अपना लालपूर्जा लेकर आये और चले गये क्योंकि सरकार उन्हें भी खोर में रख देने की वात कहने लगी । अब बोलिए कौन हमारी तरह खोर में आना चाहेगा ? एक तो ऐसे भी मदेशी शाला डरपोक होता है, उपर से काठमाण्डू आना उसके उपर से खोर में रखे जाने का डर, शाले गीदड भाग नहीं जायेंगे तो क्या करेंगे ? शाले भाग गये । पर सुनिये, उन शाले गीदडों के वल पर हम शेर नहीं वने हैं । हम शेर वने हैं क्योंकि भगवान ने मुझे शेर बनाया है । भगवान माने ..... आप समझ ही गये होंगे ......उपर वाले । तो हम इन हरामजादे गीदडों के वल पर शेर नहीं वने हैं ..... । देखिये अब वे लौट आये हैं और अपना शिकंजा कसने लगे हैं । हम पर शिकंजा कसने वाले के उपर हमारे उपरवाले का शिकंजा मजबूत होते जा रहा है । मैं छुट‘‘ूगा, नहीं तो ...... ?

“नहीं तो ? .... आप कुछ कहना चाहते हैं ? हा‘‘ हा‘‘ कहिए जो भी कहना चाहते है कह डालिए । मन के गुब्बार मन में नहीं रखे जाते ।”

“अरे हा‘‘, हा‘‘, हम गुब्बार रखने वाले भी नहीं है । शालों ने तीन महीनों से हमें खोर में वन्द कर दिया । अब हम क्या मानेंगे ? हमको जिसने वन्द किया है, हम भी उसको वन्द कर सकते हैं वल्कि वन्द करने का सारा प्रोग्राम भी वन गया है ।”

“क्या प्रोग्राम वन गया है ?”

DO NOT COPY

“हाइली कन्फीडेन्सियल । चुप । हम नहीं कहेगा । छूटने के वाद कहेगा । ओ तो जमानतदार लोगों ने थोडा धोखा दे दिया । ..... अच्छा, सरकार अगर नहीं छोडेती हैं तो वह जानेगी ।

“क्या जानेगी ? आप सरकार को धमकाना चाहते हैं ?”

“अरे, धमकाना क्या है । यह तो शत प्रतिशत सही हैं कि अगर सरकार हमें नहीं छोडेगी तो सारे तराईवासी लोग अग्नि सिंह के हाथों में चले जायेंगे । ओ तो हम हैं कि सम्पूर्ण तराई को अपने पाकेट में रखकर सम्भालते हैं ।”

“अच्छा, तब तो आपको छोड देना ही चाहिए । अच्छा छोड देने पर आप क्या कीजिएगा ?”

“अब छोडने ओडने पर भी कुछ नहीं होगा । मैंने सोच लिया है, जब सरकार इतना गुहगोबर निकालने के वाद छोडेगी तो मैं भी क्यों मानू‘‘गा ? मैंने जब कहा तव सरकार ने नही छोडा तो अब छोडेगी भी तो मैं नहीं मानू‘‘गा ।”

“तो क्या करेंगे आप अब ?”

“अब मैं भी इस देश को छोड दू‘‘गा । मैं डाक्टर अरोडा का घर खरीद ही लिया है, वही रहू‘‘गा । इस देश में किसी का भविष्य सुरक्षित नहीं हैं । शाले खाली उन्हीं लोगों का सुरक्षित हैं ।”

“खैर छोडिये, दरभंगा रहकर आप जी पायेंगे ?”

“क्यों वहा‘‘ जीने में क्या हर्जा है ?”

“नहीं मैं सोच ही नहीं रहा था वल्कि यकीन कर रहा था कि आदमखोर वाघ विना आदमी का खून पिये कैसे रहेगा ?

“बहुत वकते हो पत्रकार । पहले का समय होता तो मैं तुम्हारा ही खून पी जाता पर अब तुम्हारी वात मुझे प्यारी लगने लगी है । काश मेरी आ‘‘खें पहले ही खुल गयी होती । पर अब खुली है और तुमसे कहता हू‘‘ तुम इस वात को लिखना मत । मैं वहा‘‘ रहकर अग्नि सिंह की पार्टी में मिल जाउ‘‘गा । वहुत भटका अब तक । अब देश के लिए कुछ करके मर जाउ‘‘गा तो मेरे उपर से वदनामी का दाग मिट जायेगाी । सच पूछिये तो एक यही मेरी चाह है, अब इस जहालत के वाद । पर तुम इस वात को लिखना मत मैं तुम्हारी प्रार्थना करता हू‘‘ । ” ऐसा कहते हुए क्षेम बहादुर मल्ल की आ‘‘खे गीली हो गयी थीं । पत्रकार ने उसकी आ‘‘खों में सत्य उतरते हुए देखा था और आश्यर्च से उसके चेहरे को देखते रहा था । एक क्षण के लिए वह इतने बडे घटिया स्तर के व्यक्ति से भी चमत्कृत हो गया था ।

पर दूसरे दिन उसने सब कुछ पत्रिका में निकाल दिया था । निकालने से पहले उसने बहुत कुछ सोचा था । इतने घटिया स्तर के व्यक्ति का रुप कही स्थायी नहीं हो तो वाद में यह अग्नि सिंह को भी ले डूवेगा । इस व्यक्ति को उसके साथ नहीं मिलने देना चाहिए । वस यही सोच कर उसने सबकुछ अपनी पत्रिका में निकाल दिया । इस पत्रिका के निकलते ही तहलका मच गया । अवज्ञा को भी थोडा रोष उठा पर उससे मिलने के वाद वह अपने गैंग वेशिस पर सब कुछ सुलझा समझा लिया था । पर जब राजा के पास इसकी खबर गयी

DO NOT COPY

तब क्षेम बहादुर मल्ल के छूटने की सारी आशाओं पर पानी फिर गया । यह सपोंला कहीं सा“प के साथ मिल गया तो ? डवल विष की आशंका से उसको छेडने की वात पर विचार करना छोड दिया गया उधर अग्नि मंडली में सबकुछ तय हो चुका था । अवज्ञा और क्षेम बहादुर मल्ल से भी लोगों ने सम्पर्क किया था । अवज्ञा का भी मन्तव्य अपने पक्ष में पाते देखकर सब लोग खुश थे । योजना अनुरुप सभी लडकिया“ देश के भीतर छोड दी गयी थी । वे सव के सब अपने कार्य क्षेत्र में फैल गयी थीं । कोई कहीं पर चाय की दूकान खोलकर बैठ गयी थी । तो कोई किसी का पी.ए. वनकर अफिस ज्वाइन कर लिया था , कोई भीखारिन, कोई गिरहकट तो कोई टुरिस्ट का रुप धारण कर लिया था ।

विरभद्र की जहा“ पर यात्रा हुई थी वह जगह भूकम्प से धराशायी हो गयी थी । अब सारी जनता के मन में खौप समा गया था कि विरभद्र की यात्रा जहा“ पर होगी वहा“ पर महाविनाश होगा । आगामी यात्रा सुर्खेत में होने वाली है इसलिए सुर्खेत के लोगों के मन में इस वात का खौप समा गया था कि अब उसका क्या होगा ? इधर विनिष्ट जगहें की यात्रा करके लोगो को राहत कार्य की वू“दें पिलायी जा रही थी । सुर्खेत की यात्रा के वारे में अभी कुछ सोचा नहीं गया था पर अभी तक वह कैंसिल भी नहीं हुआ था । सभी लोग इसी यात्रा पर अपना सारा ध्यान केन्द्रित कर चुके थे ...... भगवान की ईच्छा, ऐन वक्त पर यह यात्रा कैंसिल कर दी गयी । सभी लडकिया“ एक दूसरे को देखती रह गयी । कही अवज्ञा और क्षेम

बहादुर ने ही तो यह सब गुडगोवर नहीं कर दिया ? वा‘‘स से मिलकर इस बात की सत्यता का पता लगाना चाहिए । सभी लडकिया‘‘ एवं कुछ लडके जो मू‘‘गफली एवं तरकारी वेंचकर काम किया करते थे मिलकर पता लगाये । पर अग्नि ने उन्हें कहा कि इसमें किसी का कोई हाथ नहीं हैं । यह महज एक संयोग की वात है । तुम लोगों को धैर्य से काम करना चाहिए और वही रहना चाहिए । इधर एक नयी योजना भी शुरु हो गयी है । समझो सबकुछ एक साथ चलकर हमारे साथ हमारी झोली में आने लगी हैं ।

“क्या आने लगी है सरदार ?” सभी लोगों ने अचम्भित होकर उनसे जानना चाहा । सभी लोगों को आश्चर्य था कि इस व्यक्ति को सारी जानकारिया‘‘ लाकर हम तो देते हैं, परन्तु जब भी इसके पास आते हैं तो हमेशा ये हमसे ज्यादा जानते होते हैं । कैसे सूचनायें इकठ्ठा करते हैं ये ?

“समय आने पर सबकुछ वता दिया जायेगा । अब कोई एक शब्द कुछ नहीं पूछेगी । यह सुर्खेत की यात्रा रद होना एक संयोग मात्र है । हमारे किसी भी आदमी ने हमसे धोखा नहीं किया है वल्कि और मजबूती से हमारे साथ आया है । तुम सब लोग अपने अपने काम पर वापस लौट जाओ और सुर्खेत की यात्रा का इन्तजार करो । हा‘‘ .... जरा तुम इधर आओ ।” रचना की ओर इशारा करके सरदार ने उसे एक कोने में बुलाया ।

“हा‘‘, बोलो सरदार ।”

“इस यात्रा से पहले तुम चाहों तो अपना प्रयोग कर सकती हो ।”

DO NOT COPY

“कैसा प्रयोग ?”

“वही अपने परामनोविज्ञान का ।”

“वह कैसे ?”

“ दीवाली का समय आ रहा है । भाई टीका के समय सभी लोग वहा“ जायेंगे तो तुम्हें भी कोई नहीं रोकेगा । यह एक अच्छा अवसर हैं अपने विज्ञान का प्रयोग करो । अगर सफल हो गया तो समझो हमारा सारा काम सुलझ गया । नहीं हुआ तो फिर हमें सुर्खेत यात्रा का इन्तजार करना होगा । उसमें तो सब लोग खटे ही हैं । समझी नहीं ?”

“समझ गयी सरदार और आपकी कावलियत भी समझ गयी । प्रयोग मेरा और उपयोग करने का उपाय आपका । मैं समझ गयी कि सरदार कोई ऐसे ही नहीं हो जाता है । मैं इसका कैसे कहा“ प्रयोग करु“गी दिनरात सोचती रहती थी, पर यह वात कभी मेरे खयाल में नहीं आयी । धन्यवाद सरदार, वैसा ही होगा जैसे आप कहते हैं । भगवान हमें शक्ति दे ।”

“गुडलक” कहते हुए सरदार ने उसे विदा किया । वहा“ से सभी लोग फिर अपने अपने कार्य क्षैत्र में फैल गये । तभी सुर्खेत यात्रा की नयी तारीख भी आ गयी । सब लोग प्रसन्न हुए । और प्रसन्न हुई रचना भी क्यों कि टीका के दूसरे दिन ही यह यात्रा रखी गयी थी । रचना के प्रयोग का मौका और उस मौका के चुकने के वाद तुरत दूसरे उपायों के लिए भी अवसर था । ....

ताता लगा हुआ था । सब लोग अन्दर जाते और तुरत वापस चले जाते । किसी को भी नजर उठाने की इजाजत नहीं थी । कुछ लोगों पर तो सामुदायिक रुप से ही टीके को छीट दिया जाता था तो सभी लोग धन्य धन्य कहते हुए वापस चले आते थे । कुछ सामान्य और कुछ विशिष्ट लोगों को ही एक एक कर टीका प्राप्त हो रहा था । अपने सिपाही भाई से कह कर अपने लिए अकेले टीका प्राप्त करने वाले लोगों में रचना ने अपना नाम समावेश करा लिया । रुप सौन्दर्य का जादू तो है ही । वाकी का काम वह इस जादू से सम्भाल लेगी ।

निश्चित समय पर वह अन्दर गयी । चमत्कृत रह गये सब । ऐसे रुप सौन्दर्य को वह अपने हाथों से टीका देने के लिए लालायित हो गये । तो रचना ने भी इस उतावलेपन एवं चाह को भा‘‘प लिया । पर चू‘‘कि नजरें पर उठाना वर्जित था , इसलिए वह करवद्ध हाथ जोडे नजरें नीचे ही किये रही । विरभद्र को यह कुछ अच्छा नहीं लगा पर कुछ कह भी कैसे सकते थे ? अगल बगल अठपहरिया लोग कवाव में हड्डी का काम कर रहे थे ।

हाथ ने टीका उठाया और धीरे से नजर अपनी ओर उठाने के लिए दवाव डाला । यह भाई टीका है, भाई को वहन का टीका या वहन का भाई को टीका । परन्तु यह कैसा भाई वहन का रिस्ता है । रचना ने थोडा उस दवाव और वहुत अपने प्रयोग के लिए नजरें उपर उठायी । दोनों की आ‘‘खें चार हुई और विरभद्र की आ‘‘खें एवं मन घायल हो गया । शरीर की वारी वाद में आयेगी । उनकी आ‘‘खों

के उठाते ही वगल के अठपहरिया लोगों ने आ‘‘खें तरेर कर उस लडकी को देखा और नियमविरुद्ध होने पर उसे पकडना चाहा । पर पता नहीं उससे आ‘‘खें मिलते ही कैसा चमत्कार हुआ । सबके सब घायलों की तरह कट कर रह गये । रचना गुस्ताखी माफ, गुस्ताखी माफ कहती हुई वापस लौट गयी । किसी ने किसी को कुछ नहीं कहा पर सब के सब घायल हो गये । रचना अपना सफल प्रयोग देखकर गद्‌दग हो रही थी ।

इस प्रयोग के वाद, हवाई जहाज से सब के सब सुर्खेत उड गये । रचना अपना प्रयोग सफल देखकर वापस लौट गयी । सभी लडकिया‘‘, अपना अपना काम करने के लिए तैयार वैठी थी । दूसरे दिन होते ही विरभद्र और उसके अठपहरिया लोगो ने विछावन पकड लिया । यह सामूहिक अस्वस्थता कैसे हुई, इस पर सभी लोग ताज्जूव कर रहे थे । लोगों को इसके कारणों का पता लगाने एवं इसका उपचार करने के लिए कहा गया । पर न कोइ कारणों का पता लगा सका न कोई उपचार कर सका । उधर पूर्वनिर्धारित समय के अनुसार दीपू लन्दन के लिए रवाना हो गया था । यह रवानगी, अवज्ञा के वढते शिकंजे के कारण रोक दी गयी थी । पर वाद में निर्णय किया गया कि वहुत सावधानी के साथ उसे भेजना ही उचित होगा । वह दिल्ली में रुका था और दूसरे दिन उड जाना था । दूसरे दिन ही सुर्खेत में इस तरह की सामूहिक अस्वस्थता की घटना हुई ।

जाते ही रचना ने अपना प्रयोग सफल होने की वात वोली । सरदार ने अपनी योजना अनुसार पंजाव में चार हिन्दूओं को मार

DO NOT COPY

गिराया । इस घटना को लोगों ने टी.वी. पर देखा । देश के अन्दर प्रवेश हुई सारी लडकियों एवं लडकों ने इस घटना को टी.वी. पर देखा । देखते ही सब के सव ने अपनी अपनी हरकते वढा दी । जब काम १० दिन वाद होने वाला था, वह अचानक इतना जल्दी कैसे हो गया । उन्होंने सम्पर्क साधा और पुष्टि की । वस क्या था, सब कुछ योजनावद्ध तरीके से तैयार हो गया ।

देखते देखते सारे कैम्प में हडकम्प मच गया था । दो लोग मर गये थे, और लोग मरने मरने को थे । विरभद्रं को काठमाण्डू पहु‘‘चाना अति आवश्यक था । पर उपर से खवर आया कि वे नहीं आयेंगे । सारी सेना अब उसके कब्जे में थी । उधर दीपू का हवाई जहाज दिल्ली से उडा और पता नहीं चला कि कहा‘‘ चला गया । वहुत देर के वाद पता चला कि जहाज कर्नल गद्दाफी के देश में हाइजेक करके उतार लिया गया है । सबकुछ योजनावद्ध तरीके से हो गया था । यह खबर सुनकर यहा‘‘ विरभद्र वेहोश हो गये थे । वहुत कोशिश करके उन्हें होश में लाया गया ।

“तो क्या, यह सब तुमने किया है मेरे भाई ? वाह क्या खूव । क्या यह सब तुमने किया है ?”

“इसके पहले तो सबकुछ आप करते आये हैं मेरे भाई । मैंने तो इस तरह कभी नहीं पूछने आया कि यह सब किसने किया है ? फिर आप ही क्यों पूछते हैं यह ?”

“इसलिए मेरे भाई कि अब अन्तिम समय आ गया है । ओ मेरे भाई, मेरे लडके को बचालो । मैं नहीं होने पर अपने वेटे को तुम्हें सौंपकर

DO NOT COPY

जाना चाहता हू“ । तुम उसको जिन्दा रख कर भी तो अपना राज्य कर सकते हो ?”

“यह वात काश ! आप पहले वताये होते । पर भाइ साहव पहले आपने भी तो मेरा एक भी नहीं सुना । मै करता भी क्या ? यह सब मैंने ही किया है । अब भी मैं हुकम देता हू“, पर इतनी जल्दी वह कैसे हो गया , मेरी समझ में नहीं आती ?”

उसने वही से आज्ञा दिया कि दिपू को छोड दिया जाय । यह मेरा हुकम है ”

“अब आपका हुकम नहीं चलेगा अवज्ञा साहव । अब आप भी वही मरिये । हमारा काम हो गया । हमने आपको अपने साथ इसलिए नहीं लिया था कि आप हमें उपयोग करके अपने भाइयों को अपने कदमों पर झुकाइए वल्कि मैं आपका उपयोग अपनी क्रान्ति में करना चाहता था । वह सफल हो गया । अब चुप चाप आप भी वही मरिए । तभी आवाज आयी :-

धडाम ! धडाम !! धडाम !!!

वगल में ही कहीं विस्फोट हुआ था । क्रान्तिकारियों के इस प्रोग्राम को अवज्ञा नहीं जानता था । लेकिन जबतक वह बचा था तब तक वह अपने आपको बचा लेना चाहता था । क्या करने से ठीक रहेगा ? थल मार्ग से भागे ? कोई नहीं जानेगा । आकाश मार्ग से जाने पर खतरा है । तभी एक आदमी ने आकर कहा कि यहा“ से कहीं जाने का रास्ता नहीं है । चारों ओर के पुल उडा दिये गये हैं । एक व्यक्ति

DO NOT COPY

का तो यह भी कहना था कि सारे अधिराज्यभर के मुख्य पुलों एवं कारखानों को उडा दिया गया है ।

“क्या वकते हो, तुमने उस व्यक्ति को पकडा क्यों नहीं ?”

“हजुर मैं वदहवास भागते हुए, सरकार की सुरक्षा में चला आया । इसका मुझे कोई होश ही नहीं रहा ।

“हरी अप, चलो, तुम मेरे शुभचिन्तक लगते हो ।” कहते हुए अवज्ञा अपने हेलीकोप्टर की ओर वढा । अब उसकी योजना प्राण वचाकर किसी तरह काठमाण्डू पहु‘‘चना और गदी पर बैठना था, नहीं तो सब गुड गोवर हो जायेगा । यह अग्नि वच्चू को मैं देख लू‘‘गा ।

“अवज्ञा ” विरभद्र ने भाई को भागते हुए देखा और चिल्लाया” मुझे छोड कर कहा‘‘ चले जा रहे हो ? मुझे भी ले चलो भाई । यहा‘‘ अकेले प्राण छोडना पडेगा ।”

“तो मैं क्या करु ? ” कह कर अवज्ञा ने उसे देखा और मु‘‘ह फेर लिया । इतना सब होने के वाद भी उसे गदी पर वैठना जरुरी लग रहा था । इधर विरभद्र की विमारी वढती जा रही थी ।

उधर अवज्ञा का हेलीकोप्टर उडा । उधर विरभद्र के प्राण पखेरु उड गये । अपना ही खून अपने ही खून को अकेला छोडकर उड चला था ।

एक गदी की ओर दूसरा उपर के दरवार की ओर । लिविया में भी हिजैकिंग हुए विमान में भी ठीक उसी समय विस्फोट हुआ था जिस समय देश के अन्दर के सभी पुलों एवं फैक्टरियों को उडा दिया गया था । देशवासी एवं दरवार सकते में आ गये थे । इसके पहले कि

DO NOT COPY

अवज्ञा काठमाण्डू पहु‘‘च कर दरवार में जाता, विक्रम राजगद्दी पर विराजमान हो गया था ।

“तो विक्रम, तुमने मेरे साथ गद्दारी किया ?”

“हा, हा ” जोर से ठहाकों की आवाज आयी फिर चारों ओर से ठहाकों की आवाज आयी । अवज्ञा अचंम्भित होकर चारों ओर देखने लगा । कोइ उसे अपना नजर नहीं आया ।

“एक गद्दार के साथ गद्दारी करने में क्या हर्ज है, अवज्ञा महाराज ?”

“अरे अपने भाई के साथ का गद्दार, अग्नि का गद्दार कहना पडेगा क्या ? भाई को तडपते , मरते छोडकर यहा‘‘ गद्दी पर बैठने आ गया । थूक .... सिपाहियों, पकड लो इस हराम खोर को ....”

अवज्ञा को चारों ओर से सिपाहियों ने घेर लिया । देखते देखते तख्ते ताज पर बैठने वाले के हाथों मे हथकडिया‘‘ लग गयी । वे वहा‘‘ पर पहु‘‘चा दिए गये जहा‘‘ पर वे सैकडों कैदियों को केवल वन्द ही नहीं किया था वल्कि उन काल कोठरियों में जान से मरवाया भी था । अब उसी काल कोठरी में वन्द पडा वह धीरे धीरे एक साधारण इन्सान की तरह सुवुक रहा था ।

विरभद्र महाराज को राजकीय सम्मान के साथ दफनाने की तो वात ही दूर कोई उनके अन्तिम समय तक भी साथ नहीं रहा । सब उनको छोडकर अपनी अपनी जान वचाने के लिए भागे थे । विरभद्र की सडी लाश कई दिनों तक गिध और कौवे खाते रहे । दिपू

भूच हो गया था तथा दिपू की मा" के साथ कैदखाने में सिपाही वलात्कार का महाभोज कर रहे थे ।

पर अग्नि धोखा खा गया था । इसी धोखे से वचने के लिए उसने विरभद्र के विरुद्ध अवज्ञा को खडा किया था एवं अवज्ञा को गद्दी की लालच देकर अपने पक्ष में काम करने पर राजी किया था । फिर चुपके से उसने विक्रम को अवज्ञा के विरुद्ध भडका कर गद्दी विक्रम को देने का वादा करके उसे अपने पक्ष में किया था । सेना का प्रमुख विक्रम अग्नि की जाल में आसानी से आ गया था । पर अब गद्दी पर बैठकर उसने अग्नि को धत्ता वतला दिया था । एक वार जनता की लडाई लडने वाला अग्नि फिर मात खा गया था और जनता अपनी जगह पर पहले से असुरक्षित हो गयी थी । अग्नि का भेजा हुआ एक दूत विक्रम से वातें कर रहा था ।

"तो तुमने भी आखिर गद्दारी कर ही दी ? अरे मुर्ख, अभी भी समय है, तुम इस गद्दी को छोड दो । इस पर जनता का अधिकार है । अब प्रखर प्रजातन्त्र का जमाना आ गया है ।"

"अरे मित्र, जाकर कहो अपने सरदार से कि मैंने कोई गद्दारी नहीं की । मैंने वही सब किया है जो सारे संसार एवं खास कर दक्षिण एशियन देशों में होता रहा है । वर्मा में, पाकिस्तान में, वंगला देश में, सब जगह । अब गद्दी मेरे हिस्से में आ गयी है और अग्नि कोई धृष्टता करेगा तो मैं उसको नहीं छोडूगा ।"

"अरे मूर्ख, जरा अपने जमीर से पूछकर देखो । जो आदमी प्रखर प्रजातन्त्र की लडाई लड रहा है वह गद्दी लोलूप नहीं है । उसे दुख तो सिर्फ इस वात पर है कि जनता हमारी एक वार फिर से प्रखर प्रजातन्त्र से वंचित रह गयी । तुम जानते नहीं हो उसने इस तरह की चाल चलकर तुम्हारे ही पास गद्दी क्यों रहने दी ?"

"क्यों रहने दी उसने ?"

"इसलिए कि राजवंश से किसी को रखने पर यहा'' की जनता एवं सेना दोनों उसके प्रति ल्वायल हो जायेंगे । अब तुमने गद्दारी भी कर दिया तो तुम्हारे जैसे गद्दार को गद्दी से उतारना उसके वायें हाथ का खेल है । जब सदियों से स्थापित राजवंश को उन्होंने एक ही दिन में जड मुल समेत समाप्त कर दिया तब तुम किस खेत की मूली हो ? तुम्हारे उपर तुम्हारी सेना ही खुद विश्वास नहीं करेगी ।"

"क्या वकते हो ?" सिपाहियों, आगे वढों और इस गुस्ताख को पकड लो और सारे अधिराज्य में जितने इसके साथी लोग विखरे पडे हैं, सवको पकड लो ।

सिपाहियों ने आगे वढकर उसे पकड लिया पर और कौन विखरा पडा है वह तो उनलोगों को पता हो तब न ? वे कुछ समभ्क नहीं सके ।

"अरे दोस्त क्यों पकड कर खतरा मोल लेते हो ? जो भी चार दिन का राज्य लिखा होगा वह भी तुमसे छीन जायेगा । मैं दूत वन कर आया था और यहा'' की खबर मुभ्के पहु''चा लेने दो ।"

विक्रम सकते में आ गया । वह उसकी आ‘‘खों की चमक से चौधिया जाता था । उसे छोड देने का इशारा करके वह गद्दी पर बैठ गया ।

“........... अब तो यह गद्दी उसे नहीं दू‘‘गा ।”

“उसे गद्दी चाहिए भी नहीं । लेकिन जो चाहिए, वह तो वे लेकर ही रहेगे ।

“क्या मतलव ?”

“मतलव इस देश की जनता । जनता अब गद्दी वगैर मानेंगी नहीं । तुम अपनी मृत्यु की घडिया‘‘ गिनों, मैं जाता हू‘‘ ।”

इतना कहकर वह गजराज की तरह वहा‘‘ से चल दिया । अग्नि के सभी क्रान्तिकारी अपने अपने काम करके वापस लौट गये थे । सभी लोग पटना में एक साथ मिले थे और सभी के सभी इस विक्रम गद्दार से क्षुब्ध थे । अग्नि ने इसका निराकरण सुझाया । उसने कहा :-

“साथियों, निराश एवं हताश होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि हमने कभी गद्दी एवं ताज के लिए संघर्ष नहीं किया है । हमेशा हमने जनतन्त्र एवं जनता के लिये जंगलों में भूखे पेट भटका है । जनता हमें खूव जानती है और अब समय आ गया है कि जनता को अपने साथ सडकों पर उतार ले चले । देश ही अव्यवस्था से जनता में त्राहि त्राहि मचा हुआ है । चीजों के दाम आसमान छूने लगे हैं । व्यापारी अपने माल चुराकर इस अव्यवस्था के गुजर जाने का इन्तजार कर रहे हैं । जिन लोगों ने कभी मेरे एक आह्वान पर मुझे

DO NOT COPY

भारी वहुमत से जिताया था उन्हींलोगों का आह्वान करने पर मामला सुलझेगा । जव जनता सडकों पर उतर आयेंगी तब सेना के अधिकांश भी जनता का साथ देगा । हमें खबर मिली है कि विक्रम के साथ सब के सब सेना नहीं हैं । राजा के साथ यही सेना होने के चलते हमारी एक नही चलती थी । अब ऐसी वात नहीं है । सेना समझ चुकी है कि राजा का दिन समाप्त हो गया और अब जनता को छोडने पर वह खुद भी मार खा जायेगी । ...... तय हुआ कि ऐसा ही हो ।"

दूसरे दिन , दिन के विदेशी प्रसारणों से पहले काठमाण्डू की जनता सडक पर आयी । विक्रम ने सेना को इसे कुचलने का आदेश दिया । पर अधिकांश सेना ने भी वगावत कर दिया । इसके देखा देखि सारे देश की जनता सडक पर उतर आयी । समुचे देश में हत्या, बलात्कार एवं अव्यवस्था का साम्राज्य छा गया । परिस्थितियों की नाजूक स्थिति को देखते हुए भारत सरकार ने वही किया जो अग्नि सिंह ने वतलाया था । अधिक सोंच विचार यहा" पर करने का मतलव पूरा नेपाल का हाथ से चला जाना था । वर्मा में अमेरिका के आग्रह पर भी जिस भारत ने नहीं माना वह पूरे हिमाली साम्राज्य पर पलक झपकते छा गया ।

अग्नि सिंह राष्ट्रपति वने । सारी सेना को वरखास्त कर दिया गया । उसकी जगह पर उनकी सैनिक शालिनता से सारे देश में छा गये ।

...........O..............

९

इस घटनँ से चीनी सेनायें हरकत में आ गयी । चीनी प्रशाशकों ने सम्पूर्ण तिब्बत क्षैंत्र की सीमाओं , वर्मा की सीमाओं तथा हिन्दूस्तान एवं पाकिस्तान से मिली सिमाओं पर अपनी असंख्य सेनाओं को तैनात कर दिया । कुछ लोगों का विचार तो यह था कि पाकिस्तान के साथ मिलकर दोनों ओर से भारत पर एक वार फिर हमला बोल दिया जाय और इस सम्बन्ध में वर्मा और वंगला देश से भी वातें की जाय । परन्तु वंगला देश अपनी प्राकृतिक विपदाओं में इतना फ‘‘सा हुआ था कि इस प्रकार के युद्ध सम्बन्धी विचार भी लाना उसके वस के वाहर की वात थी । वह तो किसी तरह हिन्दूस्तान सरकार के द्वारा सिमाओं पर वाड लगाने एवं फरक्का में पानी के वटवारे को लेकर भारत का विरोध कर लेता था पर उसकी माली हालत इसके लायक भी नहीं थी । वल्कि हाल ही में आये असंख्य वाढ जिसके चलते सम्पूण वंगलादेश एक झील में वदल गया था और २०३० तक उसके पूरे समुद्र में चले जाने की भविष्यवाणिया‘‘ की जा रही थी । इसके कारण वह भारत ही नहीं सम्पूर्ण संसार से साहयता की अपील कर चुका था और इस स्थिति में भारत ही सवसे वडा सहयोगी वनकर उभरा था । वह इस प्रकार के आक्रमण करने की स्थिति में नहीं था । पाकिस्तान में जियाउल हक का वैसा ही अन्त हो चुका था जैसा हरेक तानाशाह का होता है । उतना वडा धूर्त, उतना वडा चालाक एवं जावांज राजनीतिज्ञ यह सोच भी नहीं सका कि वहावलपुर जैसी छोटी सी जगह पर उनका ही नहीं वल्कि उनके पूरे

पिठ्ू भी सभी के सभी मारे जायेंगे । अब गुलाम इसहाक को किसी तरह जनतंत्र समर्थकों एवं जिया समर्थकों को संगठित करके चलने एवं किसी तरह चुनाव करने की चिन्ता थी । इस स्थिति में युद्ध की तो वात ही अलग वल्कि अपने घर में लगी आग को बुझाने का समय था । यहा‘‘ तक कि जिस आग को जियाउल हक ने अफगान मुजाहिदिनों एवं खालिस्तानी आतंकवादियों के रुप में लगायी थी वह भी बुझती हुई लगी थी । एक एक करके खालिस्तानी हतास होकर पाकिस्तान छोड रहे थे जिनका धर पकड पंजाव में शुरु था एवं नये जोश एवं उत्साह में प्रधानमंत्री राजीव गा‘‘धी ने पंजाव यात्रा तक कर डाली जो जियाउलहक के जीते जी सम्भव तक नहीं था । अफगान मुजाहिदिन भी हताशा में किसी तरह चल रहे थे । वर्मा की स्थिति उससे भी नाजुक थी । २६ वर्षों की एकदलिय सरकार ने वहा‘‘ के लोगों को दो जून खाने तक का जुगाड नहीं कर पायी थी । इतने दिनों के भारत विरोध एवं चीनी तुष्टिकरण एवं घुडकी नीति ने उसे कुछ नहीं दिया था और अब लोग सडकों पर उतर कर एकदलिय पद्धति को विल्कुल नकार दिया था । भारत सरकार ने अमेरिकन अनुरोध पर भी वहा‘‘ इसलिए हस्तक्षेप नहीं किया कि ये जर्जर देश जब खुद टूट कर विखर रहे हैं तब हमें खामखाह उनमें दिलचस्पी एवं हस्तक्षेप करने की क्या जरुरत ? मसाल जला हुआ है, फतिंगे खुद चलकर आयेंगे । मशाल को जाने की कोई जरुरत नहीं । श्रीलंका में अपनी सेनायें भेजकर ही हमने क्या पाया ? वह तो श्रीलंका के हित में ही ज्यादा निकला । नेपाल में हस्तक्षेप करने की

DO NOT COPY

इसलिए जरुरत हुई क्योंकि उसके सामने चीन बैठा हुआ है । पर ये देश खुद हमारी झोली में आयेंगे आग्रह करेंगे तब ही जाकर हस्तक्षेप किया जायेगा ।

(और सचमुच इस पंक्ति के लिखने के दो महीने वाद मालद्वीप ने ऐसा ही आग्रह किया । सेनायें म‘‘गायी गयी ।)

इस तरह इस उपमहाद्वीप के अन्य देशों को भारत के खिलाफ उकसाने एवं भडकाने में चीन विल्कुल मात खा गया था । अब वह अकेले किधर किधर से लडेगा यह सोंच नहीं सकता था । इधर चीन के साथ मिली विशाल सोभियत सिमाओं पर सोवियत सेनायें हरकत में आ चुकी थी । भारत सरकार से १९७१ की संधि के अनुसार एक दूसरे के साथ सीधा सैनिक सहयोग की संधि १९९० तक थी और वंगला देश की लडाई के समय रुस यह सावित कर दिया था कि रुस भारत का सच्चा हितैषी है । इधर चीन और रुस के सम्बन्धों में इतना तनाव आ गया था कि देंग सियाओपिंग के जी तोड मेहनत एवं कोशिश के वावजूद भी सफल नहीं हुआ था । रुस ने अपनी सेना सिमाओं पर तैनात करने के साथ ही एक वक्तव्य देकर भी चीन का हौसला पस्त कर चुका था । उधर अमेरिका में नेतृत्व परिवर्तन हो रहा था । रीगन के स्टारवार को गोर्वाचोभ का गलास्नोस्त और पेरीस्त्रोइका ने वडी खुवी के साथ पस्त कर दिया था । जैक्सन के नाम फिर्ता लेने के वावजूद भी बुश की हालत खास्ता थी । खुद चीन भी सोचने लगा कि अपने १० वर्षो के

DO NOT COPY

सुधारवादी कार्यक्रमों को लेकर अगर वह भारत से सीधा टकराता है तो वह फिर २० वर्ष पीछे जा सकने की स्थिति में आ जाता है ।

इस तरह एक भी तात्कालिक परिस्थिति चीन के पक्ष में नहीं था । भारत का हौसला इसलिए बुलन्द था , फिर भी उसके साथ दोस्ती का हाथ वढाने के लिए राजीव की चीन यात्रा होने की वात चली थी । इस स्थिति में भी चीन अपनी धमकी देने में पीछे नहीं हटा । उसने भारत सरकार को एक कडा विरोधपत्र लिखा पर किसी प्रकार का सैनिक टकराव नहीं किया । उसने निम्नलिखित पत्र लिखा :-

“भारत सरकार को इस कडे पत्र के साथ यह जतलाया जाता है कि नेपाल में सत्ता परिवर्तन कराकर एवं अब वहा“ पर अपना सैनिक भेजकर हमें खुलेआम ललकारा गया । हमारे होते हुए जबकि अंग्रेज भी इस प्रकार का हस्तक्षेप करने की जुर्रत नहीं की तो अभी की कायर एवं निकम्मी सरकार ऐसे कैसे और क्यों कर वैठी ? कुछ भी कडा कदम उठाने के पहले हम इसका स्पष्टीकरण चाहते हैं और अविलम्ब अपने सैनिक वापस बुला लेने का हुक्म देते हैं । यह किसी भी स्वतन्त्र एवं सार्वभौम देश की स्वतन्त्रता पर सीधा प्रहार है और राष्ट्रसंघ में हमारी स्वतंत्रता एवं अहमियत का भी प्रश्न उठाता है । इस लिये राजीव सरकार अभी और अभी अपनी सेना वापस बुला ले अन्यथा मजबूर होकर हमें वही करना पडेगा जो वियतनाम में अमेरिका के खिलाफ करना पडा था ।”

DO NOT COPY

इसके जवाव में हिन्दूस्तान सरकार ने भी इसी तरह का पत्र लीखा क्योकिं वह इस भभकी को अच्छी तरह जान पहचान रही थी ।

"चीन सरकार को समभ्क लेना चाहिए कि यह १९६२ नहीं १९८२ है । इन २६ वर्षो में हम घास नहीं छीलते रहे हैं कि ऐसी धमकियों में आ जायेंगे । चीन सरकार को जिसने खुद शान्तिप्रिय एवं धर्मप्राण देश तिब्बत के अस्तित्व को विल्कुल डकार कर भी किसी को ऐसा पत्र लिखने का साहस कैसे हुआ ? एक सार्वभौम एवं स्वतन्त्र देशका ख्याल कैसे आया उसे ? जो देश खुद विस्तारवाद एवं साम्राज्यवाद के विरुद्ध खडा हुआ, जागा, लडा , सफल हुआ, वही देश तिब्बत को हडप कर अपना विस्तारवाद सावित कर चुका है । हमें डर था कि वह देश नेपाल के साथ भी वही करेगा जो हम करने नहीं देंगे । तुम हिमालय के उस पार रहो, हम हिमालय के इस पार रहते हैं । अन्यथा मजवूर होकर हमें तिब्बत के मुजाहिदिनों को खडा करना पडेगा । जब चीन यह वात कहता है कि हमने नेपाल की स्वतन्त्रता पर कुठाराघात किया है तब पहले वह खुद तिब्बत को आजाद करे और अभी भी जीवित दलाई लामा को उसपर राज्य करने दे अन्यथा इस प्रकार का कोई पत्र भारत सरकार तो क्या दुनिया के किसी भी देशको नामंजुर होगा । आखिर यह चीन कौन है जो हम आर्यो को यह हुक्म दे रहा है कि हम उसके इशारों पर चले ? हम शान्तिप्रिय आर्य लडाई को नहीं वल्कि शान्ति और स्वतन्त्रता एवं वसुधैव

DO NOT COPY

कुटुम्बकम को ही महत्व देते हैं । आपको पता होना चाहिए कि इसी सिद्धान्त पर आपसे वचाने के लिए नेपाल में हमने ऐसा किया है ।

पढकर चीन सरकार खून का घू‘‘ट पीकर रह गयी । वात वाजीव भी थी । इस तरह के हस्तक्षेप से चीन के मनसूवों पर पानी फिर गया था । वह तिब्बत की तरह नेपाल के अपार जलस्रोत पर नियन्त्रण करना चाहती थी और यहा‘‘ पर आकर अपनी विशाल जनसंख्या के लिए पूरे भारत को अपना कार्य क्षेत्र बनाना चाहती थी । पर बीच में हिमालय एवं नेपाल इसे रोकता था ।

जब उसकी एक भी नहीं चली तब वह भीतरघात करना शुरु कर दिया । खुफिया एवं खडयन्त्रों की जाल विछाना उसने शुरु किया । उसने विल्कुल चुपी साध लिया । इधर अग्नि सिंह की सरकार अपने नेपाल के पुननिर्माण में क्रियाशील हो गयी । उसे सोवियत संघ एवं भारत का मजवूत सहयोग मिलने लगा । उसने इस विकास को करने के लिए सवसे पहले नेपाल को इस तरह के चार भागों में वा‘‘ट दिया न कि आज की तरह । इससे नेपाल में तराई एवं पहाड की समस्या पूरी तरह सुलझ गयी । लोग भी अपने अपने क्षेत्र की उन्नति करने में जी जान से जूट गये । अपने धुन में अग्नि सिंह को पता भी नहीं चला कि कुछ ही दिनों में वह पूरे खडयन्त्रों से घिर गया है । एक समय का सफल नायक यह गणना करने में विल्कुल चूक गया कि चीन के खडयन्त्र जाल में वह पूरी तरह फ‘‘स चुका है क्योंकि आखिरकार चीन भी कभी उसको सलाह देता था और वह माओत्सेदु‘‘ग ,लेनिन और मार्क्स के सिद्धान्तों पर ही अपना आन्दोलन

DO NOT COPY

आगे बढाया था । उसने गा“धी को विल्कुल नकार दिया था । अपने धुन में मस्त वह देश की आधुनिकीकरण एवं यूरोप वनाने में व्यस्त हो गया था । १० वर्षो में नेपाल को यूरोप वना देने का नारा तो उसने उसी समय दे दिया था जिस समय यहा“ राजा सार्क का अध्यक्ष हुआ था और् २०५७ साल तक देश को एसियन मापदण्ड में ला देने का नारा दिया था । उसी समय वह भी उधर विश्वक्रान्ति संगठनों का अध्यक्ष चुना गया था एवं तब उसने यह नारा दिया था । इसी बीच वह सब कुछ घट गया था और अब वह सत्ता मैं बैठकर अपना वादा, अपना नारा पूरा करने में लगा था । उसके सभी साथी उसको अपने अपने ओहदे एवं स्थान पर बैठकर सहयोग दे रहे थे जिनकी गिन्ती अब केल तीन हजार थे । उस समय उसके लोगों को यह पता था कि वे लोग मात्र ७०-१०० की संख्या में हैं । पर यहा“ पर आकर उन सबको सवके वारे में पता चला था तो वे अग्निा सिंह की कुशलता एवं गोपनीयता पर भौंचक रह गये थे ।

तभी अचानक एक हवा चली एवं उनके सहयोग का रुख मुड गया । वे अब खडयन्त्रकारी वन गये थे । चीन का पूरा असर उनपर छाने लगा था । कव अग्नि सिंह के अभेद्य व्यूह पर आक्रमण हो चुका था वह पता भी नहीं चला । आदमी जब अभाव में होता है तब उसके पास एक खास लक्ष्य, एक खास शालीनता, एक खास किस्म की एकता देखने को मिलती है । यही शालिनता सत्ता एवं धन प्राप्ति के वाद चरित्रहिनता एवं धनलोलुपता तथा सत्ता की भूख में कैसे परिवर्तित हो जाती है ? यह भी प्रकृति का एक विचित्र

नियम है । जो लोग अग्नि सिंह की पूजा करते थे वही लोग अब उन्हें देखना भी पसन्द नहीं करते थे परन्तु प्रकट रुप में कुछ नहीं कहते थे । अपनी इस चाल में चीन सफल हो गया था । राजनीति में असफल चीन कूटनीति में सफल हो गया था ।

बहुत कुछ विकाश हो चुका था । कई वर्ष वीत गये । जनता खुश थी, एक आदर्श कायम हो रहा था । प्रखर प्रजातन्त्र का पहला परिचय, मार्क्सवाद की नयी व्यवस्था अग्नि सिंह ने दुनिया को दिया था । इसी बीच चुनाव आया हौर ठीक समय पर ठीक तरह चुनाव कराने का फैसला लेकर सभी लोग चुनाव में कूद पडे थे । सवके सब चुनाव में व्यस्त, सवके सब चुनाव से खुश । जगह जगह पर अग्नि सिंह के भाषणों एवं लब्जों से जनता मन्त्रमुग्ध हो जाती । अनुमान था कि अग्नि को मात देने वाला कोई नहीं है हा''लाकि एक दो प्रतिद्वन्दी उनके विरुद्ध मैदान में उतरे थे ।

कहीं हवाई जहाज, कही मोटर एवं कही पैदल चलकर समूचे देश का दौरा जारी था । दिन प्रतिदिन चुनाव के दिन करीव आ रहे थे । परवेक्षकों का अनुमान था कि ९० से ९५ प्रतिशत बहुमत से जनवदी मोर्चा जीतेगा । उसके वाद सम्पूर्ण देश को सजाने, सवा''रने एवं विकसित करने का प्रोग्राम वनकर तैयार ही नहीं था वल्कि काम भी हो रहा था । चुनाव की सरगर्मी में अभी सबकुछ रुका हुआ था ।

अप्रैल की १८ तारिख, १९९० सारे देश में मतदान केन्द्रों पर सुवह से लेकर शाम तक लोगों का ता''ता लगा हुआ था । शाम

तक पता चला कि ९० प्रतिशत वोट गिराया गया है । यह इस देश में अपने आप में एक मिशाल था । यह हौसला, यह वात पूर्व व्यवस्था के जाने एवं नयी व्यवस्था के आने का परिणाम था । जब मन में खोट होता है तब वह खोट सारे देश में फैलकर सम्पूर्ण विकास को अवरुद्ध करता है । यही वात पूर्व के सत्ताधारियों में थी । उनके मन के खोट पूरे देश के कैनवास पर फैलकर देश के अस्तित्व को निगल रहा था जबकि यहा‘‘ के कर्णधारों ने वेकार का इसके लिए भारत एवं अन्य देशों के सिर पर इसके अस्तित्व की खतरा की जिम्मेदारी मढ रहा था । अब जबकि उस सत्ता परिवर्तन के वाद जो सत्ता में आये हैं उनके प्रति मन में किसी के प्रति कोई खोट नहीं था इसलिए सम्पूर्ण देश तनाव मुक्त एवं स्वतन्त्र था । कही पर किसी अस्तित्व का खतरा लोगों को महसूस नहीं होता था ।

मतदान के तीसरे दिन तक सम्पूर्ण देश के मतदान केन्द्रों से नतीजा आ गया था । जनवदी मोर्चा के सभी लोग ९० प्रतिशत वोटों से विजयी हुए थे । चारों ओर खुशिया‘‘ छायी हुई थी । सभी जगहों से, सभी देशों से अग्नि सिंह के पास उनके अभूतपूर्व विजय एवं प्रखर प्रजातन्त्र के अभूतपूर्व प्रयोग पर वधाइया‘‘ आ रही थीं । जनमोर्चा के सभी लोग अपनी अपनी जगह पर उत्सव एवं आनन्द मनाने में व्यस्त थे । हाईकमान की ओर से उनलोगों को सादगीपूर्ण उत्सव मनाने की स्वीकृति मिल गयी थी । पर वे अपने सादे निवास में इस

DO NOT COPY

उत्सव से दूर अपने देश के भावी कार्यक्रमों के वारे में योगी की तरह लीन थे ।

सादी धोती कुर्ता एवं जाडे से वचाव के लिए एक गर्म स्वेटर एवं कोट वे इस्तेमाल करते थे । कहीं कोई आडम्बर, कहीं कोई दिखावा उनमें नहीं था । वहुत वडे भवन में न रहकर वे एक छोटे से मकान में अपने परिवार के साथ रहते थे । और वही पर उनका छोटा सा दफ्तर था । देखने पर ऐसा लगाता था जैसे वह किसी विरोधी पार्टी का छोटा सा दफ्तर है जो जैसे तैसे चल रहा है । पास ही एक छोटा सा भवन बुलेटप्रूफ भी किया गया था क्योंकि यह वक्त का तकाजा था । चारों ओर अपनी सुरक्षा कमाण्डों से वे घिरे रहते थे । यह भी वक्त का तकाजा था जबकि उनके आन्तरिक मन में कहीं से यह भी आडम्वर लग रहा था । पर इस आडम्वर के विना वे जिस रास्ते पर चले गये थे, काम नहीं चल सकता था । फिर भी वे विल्कुल आडम्बरहीन एवं स्वतन्त्र होना चाहते थे । इसी धूमधाम एवं उत्सवों के बीच एक छोटे से गा‘‘व के कुछ किसानों की ओर से एक छोटा सा पत्र आया । यह पत्र पाकर अग्नि के कुछ लोग चिढ गये तो कुछ लोग उलजलूल वातें करने लगे । इतने मामूली लोगों के लिए भी अब वे अपना वक्त जाया कर रहे हैं तो इन्हें भगवान ही वचाये । इतने वडे ओहदे एवं एक छोटे से गा‘‘व को एक छोटे से स्कूल का उद्घाटन । यह भी कोई वात हुई ? पर किसानों ने ऐसा ही लिखा था ।

“माननीय अध्यक्ष जी को मालूम कि हम इस अहिरवा टोला के किसानों ने मिलकर एक मीडिल स्कूल का निर्माण किया है और इसे हम अपने ही श्रम एवं साधन से चलायेंगे । सरकार से कुछ नहीं लेंगे । वस हमारी तमन्ना है कि इस स्कूल का उद्घाटन हमारे हृदयसम्राट अध्यक्ष के कर कमलों द्वारा ही हो । हम मामूली किसान अधिक लिखना नहीं जानते । गलती सही क्षमा ।

अहिरवा टोला किसान संघ सुनकर लोग कानाफुसी करने लगे । उसी दिन तो क्यूवा के राष्ट्रपति का आगमन हो रहा है और उनके मेहमानवाजी में रात्रि भोज हो रहा है । फिर वे इस गा‘‘व में कैसे जायेंगे ? सभी लोग इसे कैन्सिल करने लगे । पत्रवाहक को डा‘‘ट फटकार कर वाहर निकालने लगे । तभी अध्यक्ष का आगमन अपने छोटे से कार्यालय में हुआ । इस दृश्य को देखकर उन्होंने उस किसान को बुलाया । पूछने पर वह सहमते हुए अपने हाथ में वापस लिए पत्र को अग्नि सिंह के हाथों मे थमा दिया । पढकर वे कुछ देर सोंच में पड गये । फिर होठों पर मुस्कुराहट विखेर कर उन्होंने उस किसान को अपने आने की हामी भर दी । किसान खुशी खुशी वापस चला गया ।

“पर सर उस दिन तो क्यूवा के राष्ट्रपति का आगमन .... रात्रि भोज ?”

“सब जानता हू‘‘ । क्यूवा के राष्ट्रपति का आगमन भी होगा, रात्रि भोज भी होगा और यह उद्घाटन भी होगा । अगर कुछ नहीं होगा तो केवल उद्घाटन ही होगा । क्यूवा के राष्ट्रपति आयेंगे , मैं

एयरपोर्ट पर उनकी आगवानी करु‘‘गा और रात्रि भोज का प्रोग्राम दूसरे दिन होगा पर किसानों के उद्घाटन में जाना होगा ।”

“पर सर .... ।”

“पर सर कुछ नहीं । आप नहीं जानते कि ये छोटे से किसान आपके लिए छोटे हो सकते हैं परन्तु न वे मेरे लिए छोटे हैं और न क्यूवा के राष्ट्रपति के लिए । अच्छा सेक्रेटरी साहव अगर हम भी वही सब करने लगे जो भूतपूर्व शाशक एवं सम्राट करते आये हैं तो फिर उनमें और मुझमें क्या फर्क होगा, क्या आप वतला सकते हैं ? अग्नि सिंह ने अपने सेक्रेटरी अच्यूत जी को फटकारते हुए कहा ।

“जी सर आप ठीक कहते हैं, गलती माफ ।”

“गलती माफ नहीं, उस जगह पर जाने की व्यवस्था के लिए हेलीकोप्टर की व्यवस्था होगी । मैं क्यूवा के राष्ट्रपति की आगवानी के वाद तुरत वहा‘‘ के लिए रवाना हो जाउ‘‘गा और घंटे भर वाद ही वापस आ जाउ‘‘गा ।”

“ जी सर ।” कहकर वह सेक्रेटरी चला गया ।

निश्चित समय पर सबकुछ तैयार था । सुवह १० बजे क्यूवा के राष्ट्रपति फिदेल कास्त्रों दिल्ली होते हुए काठमाण्डू पहु‘‘चे । उनकी आगवानी करने के वाद अग्नि सिंह ने बतला दिया कि वे किसी गा‘‘व में एक स्कूल का उद्घाटन करने जा रहे हैं । फिदेल कास्त्रों ने मुस्कुराया । प्रत्यूत्तर में अग्नि सिंह भी मुस्कुराये । दोनों ने दोनों की मन की वातें समझी, दोनों ही किसानों , श्रमिको सर्वहाराओं के नेता थे । तबतक फिदेल कास्त्रों के आराम की

व्यवस्था पूनम भवन में किया गया । अग्नि सिंह अपने निजी सचिव वैशाखी एवं एक ड्राइवर के साथ हेलीकोप्टर से रवाना हो गये ।

आश्चर्य ! सन्नाटा !! हाहाकार !!!

चारों तरफ दहशत का साम्राज्य व्याप गया । हेलीकोप्टर उडने के १५ मिनेट वाद अग्नि सिंह का हेलिकोप्टर ध्वस्त होकर जमीन पर गिर पडा । उस पर उनका नीजी सचिव एवं ड्राइवर भी था । ठीक उसी समय पूनम भवन में भी भारी विस्फोट हुआ और फिदेल कास्त्रों की इहलीला समाप्त हो गयी । यह पहली वार संसार की अनूठी एवं अन्यायपूर्ण घटना घटी थी । किसी दूसरे देश के राष्ट्राध्यक्ष को दूसरे देश में मारा गया हो । सारे संसार में भय, आतंक एवं घृणा की लहर छा'' गयी । किसी को अब इसमें कुछ पूछने एवं जा''चने की आवश्यकता नहीं रह गयी कि दोनों विस्फोट क्यों और कैसे हुए ? यह स्वतः सिद्ध था । अपने ही देश में अमेरिकी खुफिया एजेन्सीयों से अपने प्राण को वचाते आ रहे फिदेल कास्त्रो , दूसरे देश में उससे नहीं वच सके । चीन की सीमा में आकर वे पूरी तरह अमेरिकी एवं चीनी खडयन्त्रों के शिकार हो गये । चारों ओर से पस्त चीन एवं अमेरिका ने विश्व जनमत की अवहेलना कर, उनकी कटू आलोचनाओं को पचाने की क्षमता का विकास कर यह जघन्य काम कर डाला था ।

तुरत राष्ट्राध्यक्ष के पद पर करमचन्द बैठ गया । चीन ने इस सरकार का समर्थन आनन-फानन में कर डाला । तब तक

भारतीय सैनिक लौट चुके थे । इस घटना के वाद वे देखते रह गये । करम चन्द ने भारतीय सैनिकों को आने से विल्कुल मना कर दिया ।

दोनों राष्ट्राध्यक्षों की मृत्यु पर करम चन्द ने राष्ट्रिय शोक दिवस को मनाने का ऐलान किया एवं इनकी मृत्यु की खोज की जायेगी का वचन दिया । चू''कि ऐसी घटना आजतक कहीं सुनने को नहीं मिली , इसलिए देश एक संघातिक स्थिति से गुजर रहा है- ऐसा कह कर उसने पूर्ण इमरजेन्सी लागू कर दिया ।

नेपाल की सारी जनता फूल की माला लिए उदास खडी थी । वह किकर्तव्यविमूढ हो गयी थी । विकास के चरण उनके दरवाजे पर दस्तक देकर एक दम से वापस लौट गयी थी । अवाल वृद्ध मौन, भयातुर एवं क्षुब्ध थे , परन्तु किसी को इसका प्रतिकार करने का हिम्मत नहीं था । एक साथ क्यूवा एवं नेपाल दोनों की जनता में दहशत का साम्राज्य छाये हुए था । क्यूवा के राष्ट्रपति पद पर मोरात्रो वैठ गया था और बैठते ही उसने नेपाल के राष्ट्रपति की सरकार को मान्यता दे दिया था । वदले में करम चन्द ने क्यूवा के मोरात्रो सरकार को मान्यता दे डाली थी । सबकुछ साफ एवं स्पष्ट था ।

कुछ लोगों को गिरफ्तारीं का वारन्ट जारी था एवं कुछ लोगों पर वारन्ट जारी किया जा रहा था । अपनी अपनी गिरफ्तारीं से वचने के लिए सभी लोग फिर से हिन्दूस्तान की धरती पकड चुके थे । संरचना भी भूमिगत होकर संजय पर दवाव डाल रही थी कि वे लोग यहा'' से निकल जा''य । परन्तु संजय नहीं मान रहा था ।

DO NOT COPY

"तुम वेमौत मारे जाओगे संजय । मैं कहती हू‘‘ भाग चलो ।"

"भाग तो वहुत चुके हैं रचना । परन्तु अब मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहू‘‘गा ।"

"क्या ?"

"यही कि हम भागकर कहा‘‘ जायेंगे ?"

"भारत ।"

"फिर क्या करेंगे ?"

"अरे वही करेंगे जो हम करते आये हैं । हमारे पास अभी सबकुछ मौजूद है । भारत सरकार हमारे पक्ष में हैं । वह हमारी भरपूर मदद करेगी । हम फिर से शक्ति इक्कठा करके इस सरकार के खिलाफ हथियार उठायेंगे और इसे भी हम वैसे ही ध्वस्त कर देंगे ।"

"इसे भी फिर वैसे ही ध्वस्त करके क्या करेंगे ?"

"फिर हम अपना राज्य कायम करेंगे ।"

"हम अपना राज्य तो एक वार कायम कर चुके थे । फिर ऐसा क्यों हो गया है ?" मान लो हमारा राज्य ही नहीं होगा वल्कि हम खुद यहा‘‘ के राष्ट्राध्यक्ष भी हो जायेंगे । क्या तुम कह सकते हो कि हमारा वही हश्र नहीं होगा जो हमारे सरदार का अभी अभी हो चुका है ?"

"हा‘‘ ऐसा तो हो सकता है ।"

"तो फिर भाग कर क्यों जाय‘‘ कहा‘‘ जायें ?"

DO NOT COPY

तो वावा करें क्या ? आखिर कुछ तो करना ही होगा ? अब हमारी जान का खतरा है ।”

“वही तो सोच रहा हू‘‘ कि क्या करना होगा । क्या तुमने सोचा है कि ऐसा क्यों हो गया ? और ऐसा फिर क्यों हो जायेगा ? क्या कमी रह गयी हमारे अन्दर ?”

“क्या बताओं ? हमने कुछ नहीं सोचा है । हम तो लडना जानती है वस ।”

“नहीं रचना, हमें शक्ति को व्यर्थ खोना नहीं चाहिए । मुझे अपनी लडाई में एक वहुत वडी वुनियादी एवं भयंकर भूल नजर आ रही है ।

“भूल ? भयंकर एवं बुनियादी ? क्या कहते हो तुम ?”

“हा‘‘ रचना मैं ठीक कह रहा हू‘‘, भयंकर एवं बुनियादी भूल । यह वात अब आकर पता चला है मुझे । इसके पहले मैं भी तुम्हारी ही तरह सोचता रहा हू‘‘ । पर अब आकर मुझे अपनी भूल का एहसास हुआ ।” उसने आगे कहा‘‘ “हम इतिहास पढते हैं । राजा, महाराजाओं के अन्त:पुर के अनगिन झगडे, कलह एवं उस कलह को पारिवारिक एवं फिर सत्ता की लडाई में परिवर्तित होते हुए पढा है हमने । एक दूसरे की पीठ में छुरा भोंककर एक दूसरे को गद्दी पर बैठने की कहानिया‘‘ पढी हैं हमने । उसमें एवं हमारी इस लडाई में कोई फर्क नहीं हैं ।”

DO NOT COPY

“क्या वकते हो संजय ? हमारी लडाई एवं राजे महाराजाओं के अन्तःपुर की लडाई । इतना घटिया करार दिया तूने हमारी लडाई को ?”

“हा“ रचना, इतना ही घटिया करार देना पड रहा है । दोनों में इतना ही फर्क है कि वे राजे रजवाडों की लडाई होती थी और यह एक शाशक का दूसरे शाशक की लडाई है । राजा न भी हो तो जो गद्दी पर बैठता है वह राजा ही है और एक राजा दूसरे राजा को मार देता है तब इसमें कहना ही क्या है ? यह वही पुरानी लडाई हो गयी । इसमें सवसे वुनियादी एकता यही है कि तब राजे रजवाडों की लडाई में भी जनता भागीदार नहीं वन पाती थी और अब भी जनता इस लडाई में वंचित रह गई है । हमारी लडाई की यही कमी है कि हमने जनता को सडक पर उतरने की वात नहीं बतलायी । वस थोडे से हतियार उठाकर लडाई लड ली, सत्ता पा ली और ठीक हमारी तरह हमारे साथ दूसरों ने कर डाली । फिर हम उन्हें क्या दोष दें ? हमें ठीक नहीं लगा तो हमने एक से सत्ता छीन ली भले ही वह किसी मार्क्स, लेनिन की उदात्त भावनाओं से प्रेरित होकर हो फिर दूसरों को हमारी सत्ता ठीक नहीं लगी, तो उसने भी उसी रास्ते हमसे सत्ता छीन ली । यह इस तरह की सत्ता का खेल हमेशा से चलता रहा है । तो फिर हमें सोचना होगा कि हमारी क्या त्रुटि हैं और हमको क्या करना चाहिए ?”

मेरे खयाल में इस मामले में हमें अधिक सिर खपाने की आवश्यकता नहीं है । हमें दूर जाने की जरुरत नहीं है । महात्मा

गा‘‘धी ने हमारी समस्या का समाधान दे ही नहीं डाला है वल्कि अपने काम में सफल भी होकर इस दुनिया‘‘ से गये हैं । उसने सारी जनता को अन्याय के खिलाफ उतारा था और इसके अलावा मनुष्य जाति के पास दूसरा कोई उपाय नहीं है । हमलोगों ने जनता को नहीं जगाया, उसे हिम्मत देकर सडकों पर उतारने का काम नहीं किया । इसलिए यह हादसा हो गया । वही जनता जिसने हमें ९० प्रतिशत बहुमत से जिताया उसी जनता के सामने हमारी ऐसी दुर्दशा हो गयी तो फिर वह जनता आगे क्यों नहीं आ रहीं, क्यों नहीं आयी ? इसलिए कि उसे पर्दे के पीछे रहकर सत्य का समर्थन करने की आदत है । वह डर एवं भय से सडकों पर उतरना नहीं चाहती । महात्मा गा‘‘धी ने सवसे पहले उसे इस वात का प्रशिक्षण दिया और हमने इसका कोई प्रशिक्षण जनता को नहीं दिया । वह अभी भी अपने घरों में दुवकी सियासत का यह खेल देख रही है ।

“तो अब तुम क्या करोगे ?”

“वस मैं उचित अवसर का इन्तजार करु‘‘गा । इस समय तुम्हें कुछ भी नहीं बताउगा । वस मैं इतना ही कहु‘‘गा कि तुम इसमे मेरा साथ दोगी अथवा नहीं ? मैं देश छोडकर वाहर नहीं जाउ‘‘गा ।”

“नहीं जाओगे तो हमें गिरफ्तार कर लिया जायेगा ।”

“नहीं गिरफ्तार किया जायेगा । मैं विल्कुल चुपी ही नहीं साध लेना चाहता हू‘‘ वल्कि मैं इस सरकार का समर्थन करके अपनी निर्दोषिता सावित करु‘‘गा ।”

"इस सरकार का समर्थन करके ?"

"हा" रचना, यह मेरे कूटनीति का एक अंश हैं । हमें धैर्य पूर्वक उस दिन का इन्तजार करना पडेगा जबतक उचित अवसर नहीं आ जाता । फिर उनका विश्वास जितना हमें आसान होगा क्योंकि हमारी अपनी ही पार्टी के लोगों ने शत्रुओं से मिलकर यह खडयन्त्र रचा है । और अगर हम उनका समर्थन कर देंगे तो वे हम पर विश्वास करेंगे ।"

"पर आखिर संजय, हमारी अपनी पार्टी के लोगों को ऐसा करने का विचार आया ही क्यों ? क्यों उन्हें हमारे शत्रुओं से मिलना पडा ? यह एक विचारणीय प्रश्न नहीं हैं ?"

"यह विल्कुल मामूली वात है रचना । जब हम वाहर थे तब हमारे समाने एक उदेश्य था । हम उस उदेश्य के लिए लडते थे और उ"ची-उ"ची भावनाओं को अपने अन्दर पाल रखे थे । पर इन उदात्त भावनाओं का मनुष्य के मन में टिका रहना वडा मुश्किल है । जब हम लोग सत्ता पर जा चुके और सर्वोच्च सत्ता पर इस देश का एक मधेशी वैठ गया तब वह उन्हीं लोगों की आ"ख में किरकिरी की तरह चुभने लगा जो लोग पहले वडे वडे आदर्श की वातें किया करते थे । फिर हमारे सरदार ने उत्पिडित मधेशियों की प्रगति के लिए सारे कार्यक्रम बना लिए । यहा" तक कि संस्कृति के अन्तर के हिसाव से वे उपस्थित नेपाल को भी विभाजित करके बदल दिया ।

"फिर ?"

“पूर्व संस्कारित पहाडियों को यह वात पच नहीं सकी । वे इस वात को अपने अस्तित्व के प्रति खतरा समझने लगे हा‘‘लाकि ऐसा है नहीं । उनका सारा का सारा आदर्श धरा रह गया । वे इस वात से चिन्तित एवं परेशान रहने लगे । इधर सत्ताच्यूत लोगों ने इस वात का फायदा उठाया । वे अपने लोगों के बीच इस वात को प्रचारित किये एवं अपने पक्ष में हवा वनाये । रुख अपनी ओर मुडते देखकर उनलोगों ने हमारे अपने ही लोगों से सम्पर्क साधा । गोरखालैण्ड के लोगों ने इसमें अपनी अहं भूमिका निभायी । जिन लोगों ने अपने अस्तित्व की लडाई भारत सरकार से लडी उन्ही लोगों को मधेश के लोगों का आस्तित्व राश नहीं आया । यही विडम्बना है इस संसार का, लोग अपने विष्टा को भी सोना एवं दूसरे के सोना को भी विष्टा वताने की प्रवृति रखते है । हमारे सरदार इस विचार धारा से विल्कुल अलग एक उदात्त भावना के लोग थे । वे इन खडयन्त्रकारियों की जाल में बुरी तरह फ‘‘स गये । उस महापुरुष को यह गुमान भी न हुआ कि उनके अपने लोग ही इतने नीचे गिर जायेंगे । चीन की सरकार ने उन सवकी योजनाओं को कार्यान्वयन किया । सी.आई.ए. ने योजना बनाई एवं इस गोपनियताको बनाये रख कर एक नहीं दो दो महापुरुष को स्वाहा कर दिया गया ।

“पर संजय, तुम तो यह सब इतने इन्मिनान एवं अँत्मविश्वास से कर रहे हो जैसे तुम भी उनकी योजना में शामिल थे । इतनी वातें तुम कैसे कह सकते हो ?”

DO NOT COPY

"कह सकता हू" रचना , क्योंकि किसी भी जानकार आदमी का विश्लेषण इसी नतीजे पर पहु"चेगा । अगर तुम्हारी दूसरी कोई सोंच है तो बोलो । वह क्या है, मैं जानु तो ?"

"नहीं मेरा भी यही राय है । दूसरी वात होने की कोई सम्भावना नहीं । कोई उपाय नहीं । जालिमों ने ऐसा जंधन्य काम किया है कि मानवता का न्याय एवं आदर्श आज रो रहा है ।"

"तो फिर वोलो, तुम मेरा साथ दोगी ? तुम भी तो एक पहाडी औरत हो । क्या मैं तुम पर विश्वास करु" ? कही तुम भी तो वाद में चलकर ऐसा ही नहीं करोगी ?"

"तुमने मेरे बारे में ऐसा कहकर मेरे दिलको चोट पहु"चा दिया संजय । तुमने मेरे वारे में ऐसा राय क्यों वनाया ? तुम्हें तो सोचना चाहिए कि मैं एक पहाडी मर्द नहीं पहाडी औरत हू" और मैं यकीन के साथ कह सकती हू" कि जिन लोगों ने इस जघन्य काम को किया है उसमें पहाडी औरतों का नहीं पहाडी मर्दो का हाथ होगा । औरत इतनी कायर कभी नहीं होती ।"

"शावास रचना, यह वात तो तुम विल्कुल ठीक कह रही हो । मुझे तुमसे यही उम्मीद थी ।"

"और मुझे तुमसे यही उम्मीद थी कि तुम मेरे दिल पर चोट पहु"चाओगे । तुम मर्दो की जात होते ही ऐसे हो । अरे वरखुदार तुमको तो यह भी समझना चाहिए कि पहाडी औरत ही मैं नहीं वल्कि इसके साथ नेवार औरत हू" जिन लोगों ने मधेशियों की तरह

ही यातनायें सही है । मैंने तुम्हे अपने वारे में सबकुछ वता दिया है और तुम भी खुद जानते हो कि इन लोगों ने मुझे किस तरह बेंचना चाहा था । और तो और इन्ही लोगों ने मेरी गर्भ में एक विना वाप का बच्चा दे डाला जो हमारे साथ है और अब मैं तुम्हारे बच्चे की मा‘‘ वननेवाली हू‘‘ । तुम्हारी पहली पत्नी ने मुझे वहन कहकर प्यार दिया, तुम्हारे वच्चे को मैंने अपना बच्चा माना, मैं खुश , सब खुश , पर ...... तुमने ऐसा कह कर मेरे सीने को छलनी कर दिया” रचना सिसकने लगी थी ।

“अरे , तुम तो खामखाह नाराज हो गयी । मेरा इरादा तुम्हारे दिल को दुखाना नहीं था । मैं तो आक्रोश में हू‘‘ और इसी सिलसिला में तुम्हारी परीक्षा लेनी चाही थी । तुम मेरी परीक्षा में खरी उत्तरी हो । वोलो मुझे क्या सजा दोगी इसकी ?” उसने प्यार से रचना की ठोढी को उपर उठाया ।

रचना कुछ देर उसकी आ‘‘खों में ताकती रही मानो अपने बच्चे की पिता को पहचान रही हो, फिर वह धीरे से मुस्कुरा पडी । संजय ने उसे सीने से लगा लिया ।

“बोलो अब मुझे करना क्या होगा ? मैं वह सब करने के लिए तैयार हू‘‘ ।”

“हमें कुछ नहीं करना है रचना, वस चुनाव का इन्तजार करना है । तबतक थोडा बहुत सामाजिक एवं रचनात्मक काम करेंगे ।”

“क्या मतलव ? ये लोग चुनाव करायेंगे ?”

“हा‘‘ रचना ? ये लोग चुनाव करवायेंगे ।”

DO NOT COPY

“यह तुम यकीन के साथ कैसे कह सकते हो ?”

“ कह सकता हू“ रचना । ऐसे लोगों को मैं बहुत अच्छी तरह जानता हू“ । विश्वचक्र का विश्लेषण करके मैं यह कहता हू“ कि इनको चुनाव कराना होगा । जिस अमेरिकी एवं चाइनीज छुरी की कूटनीति के वल पर इन लोगों ने सत्ता हथिया लिया है उन्हें मालूम है कि सत्ता को वनाये रखना कितना नामुमकिन है । इसलिए ये लोग होशियारी करेंगे । अपनी वगल में पडे, नाराज शत्रु भारत को ये चुनाव कराकर खुश करेंगे जबकि चुनाव इनके लिए महज एक खिलौना होगा जो दिखाने के लिए होगा । वस इनकी इसी चुनाव का उपयोग करु“गा मैं । हमें तब तक धैर्य एवं शान्ति पूर्वक वैठना होगा ।”

“ठीक है, हम वैसा ही करेंगे ।”

फिर उन दोनों ने सरकार का दोहन करने लिए अपना वक्तव्य देकर सरकार का समर्थन किया । हिन्दूस्तान में भागे हुए साथियों को इनका व्यक्तव्य घुटने टेकने जैसा लगा । पर उन्हें पता नहीं कि संजय कितने वडे परिवर्तन का इन्तजार कर रहा था । उनके वक्तव्य के वाद सरकार उन्हें पकडने की वात तो दूर उनको बुलाकर उच्चस्तरीय लोगों ने वाते भी की और संजय एवं रचना को महत्वपूर्ण ओहदे देकर विभूशित करना चाहा । पर संजय ने इसे साफ इन्कार कर दिया । उसके लिए जिन्दा रहकर उस दिन का इन्तजार करना ही सवसे वडी वात थी । वे लोग अब घर जाकर चुपी साध

गये एवं बच्चों के साथ ह‘‘सी खेल में जिन्दगी गुजारने लगे। ऐसा लगा कि वे राजनीति से सन्यास ले चुके हैं।

....o...

DO NOT COPY

१०

पूरा देश फिर से आतंक एवं दहशत के साये में जी रहा था। दिन पर दिन वीतते जा रहे थे। सम्पूर्ण मानवाधिकार को डकार कर वैठ गया नेपाल मानवाधिकार के लिये अधिक चिल्लाने वाले राष्ट्र अमेरिका की आखों का तारा वना हुआ था। ऐसा क्यों था, यह किसी को भी समझ में आनेवाली वात न थी पर बुद्धिजीवी लोग इसका विश्लेषण इस प्रकार कर रहे थे। अमेरिका के दोनों शत्रु भारत और चीन के बीच में स्थित नेपाल अमेरिका के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह अपने इस एक ही तीर के द्वारा अपने दो शत्रुओं को मारना चाहता है। भारत इसलिए अमेरिका का शत्रु हो गया है क्योंकि भारत रुस का मित्र हो गया है। चीन इसलिए उसका शत्रु है क्योंकि कुछ भी हो चीन एक कम्यूनिष्ट देश है और किसी कम्यूनिष्ट के साथ अमेरिका की जनता का सम्बन्ध पूरव और पश्चिम का ही हो सकता है। यह वात चीन नहीं समझ कर, आ वैल मुझको मार वाली कहानी को चरितार्थ कर रहा था। अब बैल उसे मार रहा था। नेपाल के सभी कम्यूनिष्ट टुअर हो गये थे। हार कर वे सभी अब रुस के छाता के नीचे आकर संगठित हो रहे थे जिसे नेपाल के कुछ प्रलापी पत्रकार "सवै कम्यूनिष्ट रुस को छाता मुनि" नामक अपना प्रलाप निकाल रहे थे। वैसे प्रेस पर सम्पूर्ण पावन्दी लगी हुई थी। लोग अपने अधिकारों के लिए कुछ बोल, लिख नहीं सकते थे, सभा नही कर सकते थे। व्यापारी इसलिए तवाह थे कि उनको इस तानाशाही व्यवस्था के अन्दर उनके व्यापार

DO NOT COPY

को सरकार की ओर से कोई गारंटी नहीं थी । दिन रात डालिया‘‘ लगाना पडता एवं प्रशाशकों से भिडकिया‘‘ खाते रहना पडता था । वे सब के सब पैसे कमाते एवं उसकी सुरक्षा के लिए भारत के वैंकों में उसे जमा करते थे । शाशकवर्ग दोनों हाथों से लूटते थे एवं उस लूट के माल को पूर्व शाशकों की तरह दुनिया‘‘ के शान्ति क्षेत्र स्वीटजरलैण्ड के वैंको में जमा करते जाते थे । दुनियां के शान्ति का क्षेत्र कहे जानेवाले स्वीटजरलैंड का काम इतना भर था कि वह दुनिया भर के लूटेरों का स्वर्ग वन गया था । नेपाल के पूर्व शाशकों की तरह यह सरकार भी नेपाल को शान्ति क्षेत्र बनाकर लूटेरों के उसी स्वर्ग की तरह वनाने के सपनों को छोडा नहीं था ।

अमेरिकी और चीनी सहायताओं में अब बनिया देश जापान भी इस देश को सहायता देने की होड में शामिल हो गया था । पहले यह देश इसे कर्ज के रुप में देता परन्तु वाद में वे इसे माफ कर देते थे । जिस तरह से किसी को कोई देकर फिर उसे उसकी भीख में तव्दील कर देता है । पर इससे भीखारी भीखारी ही रह जाता है । न उसने अपने पा‘‘व पर खडा होकर जीना सीखा न उसने तपस्या एवं श्रम का कोई महत्व सीखा ।

इतने पैसों की वाढ के वावजूद, इस वाढ के पानी से खेतों को सींचा नहीं जा सका था । सब पैसे जैसे आते वैसे बाढ में इतरायी नदियों की तरह समुद्र में जा मिलती थी , स्वीटजरलैण्ड के वैकों में वापस चले जाते थे । गा‘‘व के किसान दिन पर दिन जर्जर

DO NOT COPY

होते जा रहे थे। उनके बच्चें भूख से विलविलाते इस देश के नाम पर मानवता का मजाक बने हुए थे। इस मानवता को खिलाने के लिए विकिरण भरे दूध एवं विकिरण भरे खादों का आना जारी था। इन वदनसीव लोगों के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का मानवाधिकार एक मजाक के सिवा कुछ नहीं था। न इस घोषणा पत्र की उन्हें जानकारी थी, न ये आशा कर रहे थे। वे दिन रात वस मरना खपना जानते थे। दिन पर दिन वीतते जा रहे थे। चुप चाप संजय उसे देखते हुए सारे देश का अकेला दौरा कर रहा था। लोगों से जान पहचान भर करना एवं मौका पडने पर फिर उसके पास आने का वादा वह करता रहा था। सभी लोगों के उपर वह अपनी सादगी एवं सत्य का प्रभाव छोडने लगा था। यह काम वह पैदल यात्रा करके कर रहा था। नेपाल जैसी छोटी सी जगह के लिए यह यात्रा सम्भव थी। सरकार इस वात को जान रही थी और करमचन्द ने संजय से इसका कारण भी पूछा था पर संजय करम चन्द को विश्वास दिलाने में सफल हो गया था कि उसका इरादा गलत नहीं था। वह तो अपनी वीवी, बच्चों के साथ ह''सना, खेलना चाहता है और अपने देश के जर्रे-जर्रे से परिचित होना चाहता है। इस बीच रचना का बेटा भी आ चुका था। वह अब १० वर्षों का हो गया था। सत्ता परिवर्तन होने के वाद वह सिपाही भी उन्हीं लोगों के साथ रहने लगा था। संजय के अपने वेटे भी जवान हो गये थे। रचना और पतसिया दोनों वहन की तरह मिलकर रह रही थी।

DO NOT COPY

इस सत्ता को वने हुए ५ वर्ष हो गये और देश ५० वर्ष पीछे चला गया । सारी दुनिया‘‘ में नित्य नयीं प्रगतिया‘‘ होती हुई यहा‘‘ की जनता वेवस होकर देख रही थी । पर उसे अपने नसीव में नहीं पा रही थी । परन्तु इसी बीच सारे संसार में कुछ ऐसी हवा वनने लगी थी कि अमेरिकी समर्थनवाली सरकार हर जगह पर समाप्त हो रही थी । ऐसा दो कारणों से हो रहा था । एक तो अमेरिका द्वारा प्रदत प्रशासन देश की जनता की कोई भलाई नहीं कर पा रहा था । वे लोग अमेरिका का अच्छा खासा जमीन्दार वनकर समूची जनता पर कहर ढाने एवं पीढी दर पीढीयों को विगाडने में लगे हुए थे । इसलिए कुछ जगहों पर वहा‘‘ की जनता उठ खडी होकर उन्हें सत्ता से च्यूत करती जा रही थी । जब कई जगहों पर ऐसा हुआ तो खुद उस देश की अमेरिकी समर्थक सरकार एवं अमेरिकी सरकार ने एक चाल चली । वे खुद अपने ही समर्थक संरकार से चुनाव करवा कर एवं किसी तरह उसे ही विजयी बनाकर उस पर जनता का ठप्पा लगवाना शुरु कर दिया । यह वात नेपाल के भी शाशकों ने समझा एवं इन लोगों ने भी अपने देश में इसी तरह एक चुनाव करवाने का दिन ऐलान कर दिया ।

“वस रचना, मुझे इसी दिनका इन्तजार था । अब मुझे साथ देने का समय आ गया” संजय ने चुनाव का दिन ऐलान होने के साथ ही रचना को बुलाकर कह दिया ” अब तुम तैयार हो जाओ ।”

“इसी दिन के लिए ? पर यह तो वडी घटिया वात हुई । तुम तो महात्मागा‘‘धी की वात कर रहे थे । क्या महात्मा गा‘‘धी चुनाव लडेगा ?”

“हा‘‘ रचना, महात्मागा‘‘धी इस चुनाव को एक अनोखी क्रान्ति में वदलेगा । अग्नि सिंह से भी अटल । चलो हम लोग जनता से मिलने चलें ।”

वस वे दोनों मिलकर चुनाव प्रचार में मगन हो गये । सरकार का उनपर कोई शक नहीं था । परन्तु जिस दिन चुनाव आया और उसने संजय का चुनाव घोषणा पत्र देखा तो चौंका पर इस एक सूत्री घोषणा पत्र को देखकर ह‘‘सने लगा ।

“पागल हो गया लगता है ।”

संजय का चुनाव घोषणा पत्र मात्र चार लाइन का था ।

“मैं जनता से वडी वडी वातें एवं वडे वडे वादे करना नहीं चाहता । मैं ईश्वर को साक्षी रखकर सवसे वादा करता हू‘‘ कि अगर आपलोग मुझे चुनाव में विजयी वनाते हैं तो मैं नेपाल के संसद में केवल धोती पहनकर जाउ‘‘गा । वाकी काम मैं आपके हौसले को देखकर करु‘‘गा । मैं आपका हौसला बुलन्द करु‘‘गा और आप हमारा हौसला बुलन्द रखेंगे वस ।

जनता जर्नादन को मेरा प्रणाम

DO NOT COPY

करमचन्द एवं करमचन्द के लोग इसे देखकर ह‘‘से । पर जनता में इस छोटी सी पर्ची का प्रभाव जादू की तरह हो रहा था । लोगों को यह आदमी ही सच्चा लग रहा था जो वडा वडा वादा न करके विल्कुल छोटी सी वात को कह कर अपनी पहचान हमें देना चाहता है । वा‘‘की लोग पानी की तरह पैसे वहा रहे थे, वडे बडे वैनर लगवा रहे थे जवहि संजय अपने उसी पर्चे को वेंचकर अपना चुनाव प्रचार भी कर रहा था । न कोई ताम न कोई झाम । विल्कुल सीधा, विल्कुल सादा ।

जगह जगह लोग संजय के जाने पर सीधा सादा एक मंच बनाते जिसपर उसका भाषण सुनने के लिए लोगों की भीड जमा हो जाती । माइक की व्यवस्था कहीं होती, कहीं नहीं होती । जिस तरह किसी गा‘‘व में बैठकर कोई पंडित भागवत या रामायण की कथा बा‘‘चता है उसी तरह संजय बैठ जाता और सीधी सादे वातों को कहता । किसी प्रकार का कोई जोश एवं खून खौलाने वाली वातों का कहीं कोई जिक्र नहीं होता था । वस शान्त, स्निग्ध, एकता एवं मानवता की वातें होती । अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने का एक अनोखा एवं शान्त उपाय । अन्याय के विरुद्ध लडने का एक अनोखा साहस एवं शौर्य का वीजारोपण जनता के हृदय में हो जाता था । इसी तरह एक गा‘‘व में वह भाषण दे रहा था । रचना हमेशा उसके पास बैठी होती । भाषण शुरु हुआ :-

“भाइयो एवं बुजुर्गों, माओं एवं वहनों । मैं आपलोगों के पास आपसे वोट मा‘‘गने नहीं आया हू‘‘ वल्कि आपको जगाने आया हू‘‘ ।

आप मुझे वोट में हरा दे या जीता दे इससे मुझे कोई फरक नहीं पडेगा , मैं अपना काम इसी तरह करता ही रहू‘‘गा । यह मत सोचिएगा कि मैं हार जाने के वाद भाग जाउ‘‘गा । वस इस सरकार ने हमें जो एक मौका दिया है उसका उपयोग करके ही अपनी क्रान्तिकारी शुरुआत करने की वात मैं सोच रहा हू‘‘ । मैं आपलोगों से वडे वडे वादे भी नहीं कर सकता । मैं आपलोगों में केवल अपने जमीर को पहचानने की वात करने आया हू‘‘ जिसको इस सरकार ने ही नहीं वल्कि दुनिया‘‘ के अधिकांश देशों के शाशकों ने छीन लिया है । मैं आप लोगों में केवल एक वात एकता का प्रचार करने आया हू‘‘ जिसके अभाव में आपके जमीर पर सदियों से हमला हुआ है । मैं जो धोती पहन कर ही जाने भर की वात कर रहा हू‘‘ तो वह हमारी इसी एकता का प्रतीक है । पहले हमारे बीच एकता हो जाय तो देखिये दुनिया की कौन सी ताकत हमारे अस्तित्व को दवाकर रख सकती है । मैं आपलोगों के सामने उस महापुरुष का संदेश लेकर आया हू‘‘ जो महात्मा वुद्ध, इसा, एवं राम की परम्परा को लेकर इस धरती पर अवतरित हुआ - वह हैं महात्मा गा‘‘धी । हा‘‘ मेरे भाई, मैंने दर-दर बहुत भटका पर यही पाया कि इस महापुरुष ने हमारे लिए जो रास्ता बनाया, हमारे लिए जो सोच दिया उसके अलावा मानव जाति के पास अन्य कोइ उपाय नहीं है । उसने जो कह दिया वह सत्य है । इसलिए अल्टीमेट है । मैंने स्वयं हिंसा का मार्ग अपना कर पाया कि उससे कुछ भी हासिल नहीं होता । मैं खुद

DO NOT COPY

कुछ लोगों के साथ अस्त्रों को उठाकर देखा और पाया कि यह उसी का एक बदला हुआ रुप है जो सदियों से वर्वर लोग करते आये हैं । तो सबसे वडी वात है   क्या ? तो सबसे वडी वात आप है, केवल आप , आप जनता ही हैं जिसके वगैर दुनिया‘‘ का हर आन्दोलन, हर क्रान्ति भटक गयी है, भटक जायेगी । हमारे देश में भी यही हुआ है । इसलिए मैं आपको जगाने आया हू‘‘ । आपको समेटने आया हू‘‘, आपको लेकर चलने आया हू‘‘ । अन्यथा कभी कुछ सुधार नहीं होगा । मैं आपलोगों से वोट मा‘‘गने नहीं आया हू‘‘ । यह तो मात्र एक वहाना है ।

धन्यवाद ”

धीरे धीरे सरकार अब संजय से खौप खाने लगी थी और करमचन्द की मण्डली में वहस होने लगी थी । एक दिन केवल संजय के वारे में ही करमचन्द की सभा बैठायी गयी ।

“मेरे विचार से संजय हमारा समर्थक ओमर्थक नहीं है । वह अभी तक शायद इसी दिन के लिए चुप चाप बैठा था । अब वह अपना रंग दिखलाना शुरु कर दिया है । वह शुरु से ही अग्नि सिंह का समर्थक था । मेरे विचार से यह आदमी हमारे लिए खतरा पैदा कर सकता है ।” एक ने कहा ।

“अरे, यह क्या खतरा पैदा कर सकता है ? जब हमारे लिए अग्नि सिंह खतरा पैदा नहीं कर सका तो यह क्या खतरा पैदा करेगा ? इसकी सारी वातें चुनाव जीतने के लिए हैं । जब संसद में आयेगा

DO NOT COPY

तब पता चलेगा । उठाकर संसद के वाहर फेंक दिया जायेगा । शाले धोती पहनकर संसद में प्रवेश करेगा” दूसरे ने कहा “मेरा विचार यही है कि यह उसका एक अस्थायी पैंतरा है नहीं तो फिर वह हमसे भी सम्पर्क वनाये हुए क्यों हैं ? मैं तो कहता हू‘‘ कि इस व्यक्ति को सहायता दी जाय और अपने पक्ष में मिलाकर उसका चुनाव प्रचार भी किया जाय ।” तीसरे ने कहा ।

“अरे यह तो सा‘‘प को आस्तिन में पालने जैसी वात होगी । मुझे तो ऐसा नहीं लगता । यह आदमी मुझे एक गम्भीर खतरे की तरह लग रहा है । मेरे विचार से चुनाव तो स्थगित किया जा सकता है, पर इस आदमी को पकड कर वन्द कर देना चाहिए ।” पहले व्यक्ति ने फिर कहा ।

“हा‘‘ सर, ऐसा ही करना चाहिए । लोगों पर उसकी गिरफ्तारी का कोई असर नहीं पडेगा क्योंकि अभी वह लोगों के वीच इतना प्रचार नहीं पा सका है ।” चौथे ने कहा । “वेवकूफों ,नहीं प्रचार पा सका है तो पा जायेगा ।मेरे विचार में इस आदमी के साथ नरमी से सलूक ही नहीं करना चाहिए वल्कि इस आदमी को प्रोत्साहित भी करना चाहिए । अगर वह आदमी हमारी तरफ पूरी तरह मिल गया तो इसके द्वारा हम उसी जनता को कन्ट्रोल कर सकते हैं । सारी दुनिया‘‘ में भी चुनाव की लहर फैल रही है और हम चुनावी प्रक्रिया से अपने उपर जनता का मोहर भी लगाना चाहते हैं । उधर हिन्दुस्तान में भाग गये अग्नि सिंह के लोग जो संगठित होकर हमारे

विरुद्ध आतंकवाद का खतरा पैदा कर रहे हैं, उनका भी काट हम इस व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत कर सकते हैं।" पा‘‘चवे व्यक्ति ने कहा।

"क्चा खूव। लगता है हम सब, आ वैल मुझे मारवाली भावनाओं से पीडित हो चुके हैं। अरे जब तक शक्ति से सबको कुचल नहीं दो तबतक राज्य सत्ता को चलाना नामुमकिन है। जबतक अमेरिका और चीन हमारे साथ हैं, तब तक हमें डरने की वात नहीं हैं। ऐसे ऐसे पिद्दी लोगों को हम चुटकी में मसल देंगे। उसे पकड कर जेल में वन्द कर दिया जाय। अकेला चना भाड नहीं फोड सकता।"

"तुम ठीक कहते हो, ऐसा ही होगा। हम किसी प्रकार का खतरा मोल लेना नहीं चाहते।" सवने अन्त में करमचन्द से बोला।

संजय को पकड कर जेल में बन्द कर दिया गया। जो भी सुना वह स्तब्ध रह गया। आखिर संजय को क्यों बन्द कर दिया गया ? यह तो चुनाव का समय है और सब अपने अपने चुनाव प्रचार में लगे हुए हैं। फिर उसने ऐसी कोई अपराधिक घटना एवं वातों की चर्चा तो नहीं की।" अरे जानते नहीं, सरकार कहती है कि यह आदमी राष्ट्रिय अस्तित्व को खतरा पैदा करने वाला है। यह धोती और तराई की वात करके देश को वा‘‘टना चाहता है एवं हमारे बीच साम्प्रदायिकता का बीज वोना चाहता है। भोली भाली जनता को गुमराह कर रहा है।"

"अरे तो सरकार क्या भोली भाली जनता को गुमराह करके उसकी छाती पर नहीं बैठी है ? यह सब ससुरे, सरकार की ज्यादती

है, अन्याय है । हम अपना बोट संजय को ही देंगे । जेल में वन्द है तो क्या है ? सरकार को उसे छोडना पडेगा ।"

इस तरह जनता में वातचीत हो रही थी । धिरे धिरे जनता स्वयं संजय के चुनाव प्रचार के लिए आगे आ गयी । रचना को सरकार ने नहीं पकडा था । उसने संजय के चुनाव प्रचार की जिम्मेदारी सम्भाल ली थी । लोग जेल में मिलकर संजय का हौसला बुलन्द करने लगे थे । सरकार इसके लिए कुछ कर भी नहीं सकती थी पर भीतर ही भीतर प्रशासन लोगों को डरा धमका रही थी । लोग भी बहुत भव्यता एवं जोश से दूर ही रहते थे । वस अपना काम आहिस्ते आहिस्ते करते जाने को उसने लक्ष्य बना लिया था ।

इस बीच प्रोत्साहित होकर जो काम संजय को वाद में करना था वह जेल के ही अन्दर कर डाला । उसने सोचा था कि जिस दिन चुनाव जीतू‘‘गा, उसी दिन अपना लिवास वदलकर धोती पहनू‘‘गा और लोगों के बीच मंच पर खडा होकर भाषण दू‘‘गा । परन्तु उसने वह जेल के ही अन्दर ऐलान कर दिया कि वह आज से ही अपना धोती धारण करेगा ।

"नहीं, जेल के अन्दर, तुम्हें धोती नहीं पहनने दिया जायेगा । यहा‘‘ तुम्हें कैदियों का ही कपडा पहनना होगा ।" जेलर ने संजय से कहा ।

"जेलर साहव, मैं किसी अपराध में पकड कर नहीं लाया गया हू‘‘ । मैं एक राजनैतिक वन्दी हू‘‘ । और फिर धोती मैं आपसे मा‘‘गने नहीं जाता । मैं अपने कमरे में धोती पहनू‘‘गा । आप उसे उतार कर

अपना कपडा पहना सकते है तो पहनवा दीजिएगा । ..... लेकिन एक वात याद रखियेगा । मुझे आपसे कोई दुश्मनी नहीं है ? आप एक इन्सान की तरह सोचिएगा कि क्या यह आपकी ज्यादती नहीं होगी ? आज जब कि सारा संसार स्वतन्त्रता एवं न्याय की दुहाई देता है, हमारा देश खुद राष्ट्रसंघ में रंग भेद के खिलाफ वोलता है तो क्या यहा“ ऐसा करना अनुचित नहीं होगा ?”

जेलर उस व्यक्ति का मु“ह ताकता रह गया । वह कहे भी तो क्या कहे ? उसके शब्दों में कहीं कुछ झुठ तो नहीं था । दूसरे दिन से संजय धोती पहनने लगा । जेलर ने सरकार को खवर भेजी, पर सरकार को इस छोटी सी वात पर अभी फुर्सत नहीं थी । वह चुनाव में व्यस्त होकर अपने लोगों को जीताने की धुन में थी । फिर भी एक वार उसने अपने राजनीतिक गुरु चीन और अमेरिका से इस सम्बन्ध में राय ले लेना चाही । चीन तो संजय को विल्कुल खतम ही कर देने के पक्ष में था, पर अमेरिका इस व्यक्ति को जिन्दा रखना चाहता था, यह राज समझ में नहीं आता था । उसने संजय के साथ कुछ भी बुरा सलूक करने से सरकार को मना कर दिया । वस जेल में पडा रहने दो हो गया ।

चुनाव धीरे धीरे करीव आ रहा था । सरकार का खुफिया विभाग खबर भेज रहा था कि चुनाव में संजय का कोई बोलवाला नहीं हैं । वह वेकार इस चुनाव में खडा है, सभी हवा सरकारी पक्ष की ओर है । सरकार निश्चिन्त रहे । अमेरिकी खुफिया विभाग को सबकुछ पता था फिर भी वह चुप थी । उपर से उसे किसी प्रकार

का निर्देश था । हा“लाकि भारत सरकार इस सम्बन्ध में विशेष रुची ले रही थी फिर भी पता नहीं क्यों अमेरिका उसके खिलाफ नहीं जा रहा था । इसका कारण शायद यह था कि अमेरिकी सरकार अपनी जनता से खौप खाती है या फिर चीन और हिन्दूस्तान दोनों को अपने से समान दुरी पर ही रखना चाहती है । न चीन ही उसका गाढा दोस्त हो सकता था, न भारत ही । इसी बीच वासिंगटन पोस्ट का रिपोर्टर एवं वासिंगटन पोस्ट का रिर्पोटर जेल में आकर संजय से अन्तरवार्ता लेकर सारे संसार में तहलका मचा दिया । उसने रातों रात नेपाल की तानाशाही सरकार को वेनकाव कर दिया :

वासिंगटन पोस्ट : आपको सरकार ने जेल में क्यों वन्द कर रखा है ?

संजय : आप वोलों अफ्रिकी सरकार नेलसन मंडेला को २० वर्षो से जेल में क्यों वन्द कर रखा है अथवा महात्मा गा“धी को अंग्रेजी हुकुमत क्यों वन्द कर देती थी ?

वा पो- फिर भी आप पर कोई आरोप ?कहते हैं आप पहले अग्नि सिंह के आतंकवादी गुट में शामिल थे ?”

संजय : हा“ मुझपर आरोप है । वही आरोप जो नेलसन मंडेला के उपर है, वही आरोप जो महात्मा गा“धी के उपर थे । मेरे उपर मानवता को उपर उठाने का आरोप है । मेरे उपर अपनी जनता को जगाने का आरोप है । मेरे उपर धोती पहनने का आरोप है । जहा“ तक अग्नि सिंह के आतंकवादी गुट मे शामिल होने का आरोप है तो वह तो मैं था और यह जो सरकार को चला रहे हैं, जिसने हमें

पकड कर वन्द कर दिया है , वे खुद उसी पार्टी के लोग हैं तो फिर उन सबको इस जेल में ही होना चाहिए ।

वा.पो. : तो क्या आप अग्नि सिंह अथवा इसी तरह के किसी आतंकावादी पार्टी का विरोध करते हैं ?

संजय : नहीं, मैं इस तरह का कोई विरोध नहीं करता । परन्तु यह मैं मानता हू“ कि इस तरह की पार्टियां ज्यादा कारगर नहीं हो सकती । अपने उदेश्य की प्राप्ति के लिए अगर कोई सशस्त्र क्रान्ति का रास्ता अख्तियार करता है तो मैं उसका विरोध नहीं करता वल्कि सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू“ कि वह इस प्रकार की छोटी क्रान्ति से मानवता का इतना व्यापक उदेश्य प्राप्त नहीं कर सकता । अन्यथा मैं गा“धी और सुभाष दोनों को एक साथ समर्थन करता हू“ । क्या आप नहीं करते ? क्या आज आप वता सकते हैं कि सुभाष वोस गलत थे ?

वासिंगटन पोस्ट का रिपोर्टर कुछ भी उतर नहीं दे सका । वात विल्कुल संच थी । वह अवाक संजय की ओर देखता रह गया था । दूसरे दिन इस अन्तरवार्ता ने वासिंगटन पोष्ट के द्वारा सारे संसार में तहलका मचा दिया था ।

वी.वी.सी. ने भी अन्तरवार्ता लिया जो इस प्रकार था :

वी.वी.सी. : आखिर आप इस तरह से करना क्या चाहते है ?

DO NOT COPY

संजय : मैं वस अपनी कौम जो सो चुकी हैं, उसको जगाना चाहता हू“ ।

वी.वी.सीः पर महात्मा गा“धी ने तो चुनाव में खुद कभी भाग नहीं लिया था ?

संजय : जी मैं महात्मा गा“धी नहीं , महात्मा गा“धी का एक शार्गिद हू“ । मैंने चुनाव को एक वहाना बनाया है ।

बी.वी.सी का रिपोर्टर झेंप गया

वी.वी.सी : पर चुनाव जीतकर आप क्या करेंगे ?

संजय : मैं महात्मा गा“धी के भेष में अपने देश की संसद में जाउ“गा और देखूंगा कि ये तानाशाह लोग जो दिनरात भारत की यात्रा करते समय महात्मा गा“धी की सराहना करते हैं और उनकी समाधि पर फूल चढा आते हैं, वे हमारे साथ क्या करते हैं ?

वी.वी.सी. - पर इससे क्या होगा ? मान लिया जाय कि वे कुछ भी न करें । मान लिया जाय कि वे आपको मार दे ?”

संजय : दोनों ही हालतों में एक जवरदस्त क्रान्ति का जन्म होगा वल्कि यह कहिए कि वह क्रान्ति जन्म ले चुकी है । अगर वे लोग मुझे छोड देंगे तो इस क्रान्ति का नायक मैं वनू“गा, और अगर मार दिया तो फिर इस क्रान्ति के लिए कोई दूसरा आ जायेगा । दोनों ही हालतों में इस सरकार की खैर नहीं क्योंकि अब जनता सडक पर

DO NOT COPY

आनेवाली है । मेरा मुख्य काम संसद में जाना भर नहीं है, वल्कि जनता के वीच रहना है ।

वी.वी.सी. - अभी आपने महात्मा गा‘‘धी एवं सुभाष दोनों को एक साथ समर्थन कर दिया । परन्तु सुभाष को तो अंग्रेजों को सौंप देने का समझौता जवाहरलाल नेहरु ने भी कर दिया था क्योंकि वे युद्धवन्दी थे ।

संजय - गलत, महात्मा गा‘‘धी वास्तव में जवाहर लाल नेहरु को समझ नहीं सके । उन्होने उनकी “विक्टरी आ‘‘फ इन्डिया” को पढकर उनके वारे में गलत धारणा वना लिया । परन्तु जवाहर लाल नेहरु ने खुद अपने द्वारा लिखे गये विक्वटरी आ‘‘प इन्डिया को भूला दिया । उन्होंने अगर अपने “विक्टरी आ‘‘फ इन्डिया” की तरह के इन्डिया का निर्माण किया होता तो वह वहुत कुछ महात्मा गांधी के सपनें के अनुरुप होता । परन्तु अफसोस वे यूरोपिय सम्भता की चकाचौं‘‘ध मे इनते खो गये कि सारा देश दासता की कडियों में और अधिक मजबूती से जकड गया । महात्मा गा‘‘धी का सारा देश दासता की कडियों में और अधिक मजबूती से जकड गया । महात्मा गा‘‘धी का सपना विल्कुल चकनाचूर हो गया । महात्मा गा‘‘धी ने जिन अन्य लोगों को समझा था वे महात्मा गा‘‘धी को छोडकर चले गये । वे उग्रवादी हो गये । सुभाष को सौंपने का समझौता अगर अंगरेज महात्मा गा‘‘धी के साथ करते तो महात्मा गा‘‘धी कदापि इसके लिए तैयार नहीं होते क्योंकि सुभाष युद्धवन्दी थे ही नहीं । वे

तो हिटलर से मिल कर केवल अपने भारत को आजाद भर करना चाहते थे और उन्होंने केवल यही काम किया था । कहीं कोई प्रमाण नही कि सुभाष की आजाद हिन्द फौज किसी देश पर और देश की जनतां पर जुर्म ढाया हो । आज भी हिन्दूस्तान में ऐसे लोग भरे पडे हैं जिनका कहना है कि अंग्रेजों के विरुद्ध हिटलर ने जो काम किया वह अन्य किसी ने नहीं किया समूचे विश्व से अंग्रेजों को भगा देने का श्रेय केवल हिटलर को हैं । फिर भी सुभाष ने उस आततायी हिटलर को उसके अत्याचारों में कोई साथ नहीं दिया । फिर भी अंग्रेज सुभाष को मा‘‘गने और जवाहर लाल उनको सौ‘‘पने का कोई अधिकार नहीं रखते । सारे हिन्दुस्तान में सुभाष की उतनी ही पूजा होती है जितनी महात्मा गा‘‘धी की । इस वात को महात्मा गा‘‘धी उस वक्त भी जानते थे, वस वे उनके रास्ते पर चलकर अपने रास्ते को छोडना नहीं चाहते थे । दोनों के रास्ते अपनी अपनी जगह पर ठीक थे ।

वी.वी.सी. -   अभी अभी आपने जवाहर लाल नेहरु की कार्यप्रणाली एवं शासन प्रणाली की आलोचना की और यह कहा कि वे यूरोपियन सभ्यता की चकाचौंध में खो गये थे । अगर आप उस जगह पर रहते या अभी नेपाल में हों तो आप क्या करते और क्या करेंगे ?

संजय : हा‘‘ इसमें कोई शक नहीं कि जवाहर लाल नेहरु ने पूरे देश को भटका दिया । इस तरह का इतिहास न हिन्दूस्तान में कभी रहा है न रहेगा । यह पहली वार हुआ कि सवका कान पकडकर रास्ता दिखलाने वाले हिन्दुस्तान का कान पकड कर कोई और चला रहे हैं ।

DO NOT COPY

इसका इतिहास सदा से निराला एवं अपूर्व रहा है । यहा‘‘ पर हमेशा उस चीज का प्रयोग सबसे पहले होता रहा है जो संसार में कहीं भी नहीं हुआ । अगर मैं उस जगह पर होता तो सबसे पहले शिक्षा का भारतीयकरण करता । जिस तरह चीन और रुस में अंग्रेजी के बगैर ही सभी शिक्षायें दी जाती हैं, मैं भी वही करता । आज अंग्रेजों एवं भारतीयों को निकालने की अलग अलग प्रक्रिया हिन्दूस्तान में जारी है । विभिन्न वोर्डिगों से निकले लोग अंग्रेज एवं विभिन्न अन्य स्कूलों से निकले लोग अधकचरे भारतीय वनकर निकल रहे हैं । असली भारतीय अभी भी गा‘‘वों में उपेक्षित पडा हुआ है एवं अपने दुखों के आ‘‘सू पीते हुए एवं महात्मा गा‘‘धी को याद करते हुए यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति का पाठ कर रहा है । वोर्डिंग से निकले अंग्रेज सत्ता पर बैठते हैं और अपने दोनों हाथों से देश को लूट रहें हैं । अधकचरे भारतीय लोग देश विदेश में न खिडरिच न गौरैया की चाल को प्रदर्शित करते हैं । दूसरा काम मैं यह करता कि इतने वडे वडे राक्षसों की तरह की फैकटरियों को इस हिन्दुस्तान में नहीं वनाता । इतने राक्षसी फैटकरियों की जरुरत मानवता के लिए न कभी थी, न कभी है । यह पूरी मानव सभ्यता को भावनाओं, प्रेम एवं आदर्शसों से दूर ले जा रहा है जिनसे हिन्दूस्तान का हमेशा से लगाव रहा है । मेरी समझ से ऐसा करके पहली वार अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से हिन्दूस्तान कट गया है जिसका वह हमेशा से उद्घोष करता रहा है । किसानों एवं मजदूरों के लिए ही सबकुछ करना

हिन्दूस्तान का धर्म हैं । इन्ही दोनों के वल पर हिन्दुस्तान सोने की चिडिया कहा जाता था ।

वी.वी.सी. - पर इसको तो लोग सभ्यता से पिछे लौटना कहते हैं । जवकि दुनिया“ की अन्य जगहों पर द्रुत गति से सभ्यता भाग रही हो । जब दुनिया“ के और लोग बहादुरी के रेकर्ड वना रहे हों, लडाई के फौज तैयार कर रहे हों वहा“ किसी देश को उनके अपने ही रास्ते पर रखना खतरनाक हो सकता हैं । देश फिर से गुलाम हो जा सकता हैं क्योंकि वह दूसरे देशों के साथ लडाई में हार जायेगा ।

संजय : कितने भोले एवं वेवकूफ लोग हो तुम लोग ? कितनी उल्टी वातें करते हो ? अरे सभ्यता कहा“ भागी जा रही है जरा सोंचों ? इतनी द्रुत गति से सभ्यता कहा“ भागी जा रही है ? अब मैं एक सवाल तुम्ही से करता हू“ बोलो :-

वी.वी.सी. का पत्रकार झेंप गया । संजय ने आगे कहा "अरे सभ्यता इस तरह से अपने विनाश की ओर द्रुत गति से भागी जा रही है जहा“ क्षण भर में नष्ट हो जायेगी । ये वेवकूफ लोग जो महात्मा गा“धी को पीछे लौटने की वात करते हैं वे कहा“ पर जाकर गिरेंगे कोई ठिकाना नहीं । अगर संसार ने महात्मा गा“धी की वात को नहीं माना तो एक दिन इस धरती से वायुमण्डल तक समाप्त हो जायेगा और किसी दिन किसी ग्रह से आदमी आकर इसकी खोज करेंगे तो पायेंगे कि यह हमारे चा“द की तरह बेकार है । इस पर मानवता का विकाश नहीं हो सकता है, यह हमारे रहने के

लायक नहीं है आदि, आदि । जहा“ तक स्वतन्त्रता और गुलामी की वात है तो वरखुदार यह जान लो कि यह महात्मा गा“धी की लहर थी जिसनें १९६२ की लडाई में चीन की गुलामी से भारत को वचाया था । स्वतन्त्रता और एकता की जिस लहर को पैदा किया था महात्मा गा“धी ने उसे देख कर माओत्सेदु“ग भी दंग रह गया था । जवाहर लाल नेहरु और अन्य लोगों के लाइन पर कुछ भी दिन देश नहीं चला कि खुद यहा“ के लोग अलग हो रहे हैं । अरे भाई जिस देश की जनता एक हो, उसके अन्दर की आत्मा एक हो उसे कोई देश कैसे गुलाम बना सकता है ? यह उल्टी वात तुम लोग कैसे सोंच लेते हो ? जवाहर लाल जिन्ना एवं पटेल जैसे संकीर्ण लोगों ने उसी समय हिन्दुस्तान के टुकडे कर दिये अन्यथा गा“धी के भारत के वारे में तुम भोले पत्रकार क्या जानों ? यें संकीर्ण और दकियानूस लोग अपने को शिवाजी एवं महाराणा प्रताप की पंक्ति में रखते हैं, अपने ही एक मुसलमान भाई को वरदास्त नहीं करते हैं । मुसलमान लोग जिन्ना वनते हैं, औरंगजेव वनते हैं और औरंगजेव के द्वारा दिवारों में चुनवाये गये कृत्य को शान के साथ बयान करते हैं । तब वे क्या जाने कि गा“धी का भारत क्या था ? ..... खैर छोडो जाओ तुम । मेरा मन खट्टा कर दिया तुमने । तुम्हारे जैसी उल्टी खोपडियों वाले लोग पता नहीं इस दुनिया“ को कहा“ ले जायेंगे ।

वी.वी.सी. के पत्रकार की सीटी पीटी गुम हो गयी । वात तो विल्कुल ठीक है । दूसरे ही दिन वासिंगटन पोष्ट एवं वी.वी.सी.

के द्वारा सारे संसार ने संजय को पहचाना । गा‘‘धी का एक इतना वडा फौलोवर नेपाल के सीखचों में वन्द है । उसका नाम गा‘‘धी, नेलसन मंडेला के वाद सवकी जुवान पर छा गया । अब और पत्रकार भी उसके पास आने लगे । इधर रचना ने जनता में प्रचार का काम संभाला था । जेल में लोगों का ता‘‘ता लगा रहता । अब जाकर सरकार को पता चला कि संजय को छोडकर उसने कितनी वडी भूल की थी । परन्तु अब क्या हो सकता था ? अब तो विभिन्न देशों से उसे छोड देने का प्रस्ताव आने लगा । पर सरकार ने सवकी अवहेलना करके उसे छोडा नहीं ।

नामांकन का दिन आया । संजय जेल के अन्दर से ही अपना नामांकन कराया । सरकार कोई धा‘‘धली नहीं कर सकती थी । अब बहुत से लोग संजय की ओर से चौकस हो गये थे । हार कर सरकार ने मैदान छोड दिया । संजय भारी बहुमत से जीत गया । लोगों में खुशियों की लहर दौड गयी । सारे तराईवासियों एवं कुचले लोगों का एक मसीहा आ गया । सरकार के पास संजय को छेड देने के अलावा कोई उपाय नहीं था । भारी फूल मालाओं से लदा हआ एक विशाल जन सभा में संजय ने एक छोटा सा भाषण दिया :-

“मेरे दोस्तों, आपने मुझे इतना उपर उठाया, इतने भारी बहुमत से विजयी बनाया इसके लिए मैं आप सबको हृदय से धन्यवाद देता हू‘‘ । इसके एवज में मुझे क्या देना है, यह मैं अच्छी तरह जानता हू‘‘ । मैंने तो उस फकीर का ही कपडा धारण कर

लिया है जिसका मैं पुजारी रहा हू“ । महात्मा गा“धी का वस केवल एक धोती । किसी ने एक लाठी लाकर उसके काथों में थमा दिया । संजय ने आगे बोलना शुरु किया “वस मैं इसी भेष में अपना शपथ-ग्रहण करु“गा । शपथ ग्रहण भी मैं अपना ही करु“गा । इस सरकार की जो सपथ है वही सपथ खाने के लिए इस चुनाव को नहीं जीता है मैंने । मैं सिर्फ जनता के लिये जिम्मेदार हु“ और जो कुछ करु“गा वह सिर्फ जनता के लिए I केवल जनता के प्रति मेरी जिम्मेदारी होगी । मैं और कोई दूसरा शपथ नहीं खाउ“गा मेरे भाइयों, बोलो जय मातृभूमि ।”

“जय मातृभूमि ।” सवने इस अद्‌भूत व्यक्तित्व को देखा और इस छोटे से भाषण को अपने दिलों में बैठाकर दातों तले अंगुली दवा ली । उसने देख लिया था कि उनके सपनों का मसीहा आ गया है । सरकार ने डर कर शपथ ग्रहण ही नहीं कराया । उसे वैसे ही संसद में जाने की इजाजत है, शपथ ग्रहण करने की कोई जरुरत नहीं । संजय ने सारे देश के दौरे का फिर प्रोग्राम बनाकर संसद शुरु होने का इन्तजार करने लगा ।

..................................o....................................

DO NOT COPY

११

मैं इस संसद में इसलिए हाजिर नहीं हुआ हू“ कि मैं सत्ता का भोग करु“ वल्कि संसद के द्वारा इस निकम्मी सरकार को यह चेतावनी दे दू“ कि अब उसके दिन लद गये हैं । मैं संसद की ओर से अपनी हैसियत का इस्तेमाल करते हुए उन लोगों की स्वतन्त्रता एवं आजादी के लिए इस सरकार से कुछ कहने आया हू“ जिन लोगों ने इस देश की आधी जनसंख्या के रुप में रहते हुए एवं अपनी ९० प्रतिशत आय आपको देते हुए भी उपेक्षित नहीं वल्कि गुलाम हैं । यह जनता हमारे देश के तराईवासी हैं । हमने इस देश की आजादी को अपने क“धे पर वन्दूक उठाकर जिनके लिए लडा, उनके लिए सेनाओं में जगह नहीं, उनके लिए प्रशासनों में जगह नहीं, उनके लिए राजनीति में जगह नहीं तो फिर वे आपको अपने ९० प्रतिशत आपको नहीं देंगे । अब वे आपसे क“धे से क“धे मिलाकर नहीं चलेंगे । फिर भी मैं चाहता हू कि वे आप से कंधे से कंधा मिलाकर ही चले, मैं चाहता हू“ कि वे इस देश को नहीं तोडे । इसलिए मैं इस सरकार से दरखास्त करना चाहता हूं कि वह तराईवासियों को इसी देश में रखते हुए उसे उसका हिस्सा दे दे । उनकी संस्कृति आप पहाडियों से भिन्न है । वे इसी देश में रहते हए भी अपने अलग राज्य को स्वीकार कर लेंगे अन्यथा वे अपना अलग देश बनाने पर उतारु हो जायेंगे । यह पूर्वाचल, पश्चिमाञ्चल अब इस देश में नहीं चलेगा । पहले इस देश को उत्तरांचल और

DO NOT COPY

दक्षिणांचल में बा“टो जैसा कि अग्नि सिंह ने किया था परन्त जिसके वाद इस सरकार ने इसे फिर से पूर्ववत कर दिया । मैं इस दक्षिणांचल के लिए आन्दोलन करु“गा । अगर नहीं माने तो जानते हो, जब तुम लोग दूसरे देश में जाकर गोरखालैण्ड के लिए आन्दोलन कर सकते हो तो हम इसी देश में तराईलैण्ड का आन्दोलन क्यों नहीं कर सकते ?”

संसद में तहलका मच गया । मंच पर खडा होकर गा“धी की तरह धोती लपेटे, हाथ में लाठी लिए इस देश को वा“टने की वात बोल गया । संजय की ख्याति से लोग का“पते थे । किसी को हिम्मत नहीं होती थी कि उसके विरुद्ध वोलें पर उस दिन पहाडी लोग विरोध का झण्डा लेकर खडे हो गये । सभी पहाडी लोग संजय को बुरा भला कहने लगे । एक तो यह हिन्दी में बोलता हैं, दूसरा धोती पहनता हैं , हमने वर्दास्त किया, अब तो यह हमारे देश को वा“टने की वात करता है । अजीव वात है, यह कैसा गा“धी का फौलोवर है ? इसे निकालकर संसद से वाहर फेक देना चाहिए । यह खतरनाक व्यक्ति है । हम पहले ही कहते थे चुनाव नहीं होगा, अब करे सरकार की क्या करती है आदि आदि । जो मदेशी लोग जीतकर गये थे, वे खुश थे । उनके अन्दर एक स्फूर्ति का उदय हुआ था, एक साहस का उदय हुआ था । पर एक दो चमचे विरोध भी कर रहे थे । उनको मंत्री पद मिलने की आशा थी । सदन में इतना हंगामा हुआ कि उस दिन और कोई काम नहीं हो सका । दो चार कट्टर पहाडी

DO NOT COPY

आगे आये और संजय को उठाकर सचमुच सदन से वाहर फेंक दिया । अध्यक्ष ने तुरत इस शीतकालिन संसद से उसे पूरी तरह निलंवित कर दिया । संजय अपनी लाठी टेकते हुए काठमाण्डू की सडकों से, पुतली सडक पर जा रहा था, पैदल । वहुत से लोग एक अजूवे की तरह उसे देख रहे थे । पर वह अजूवा नहीं था, यह वही चाहता था । उसका पहला कदम पूरा हो चुका था ।

दूसरे दिन पूरे संसार में यह खबर आग की तरह फैल गयी “नेपाल के गा‘‘धी को सदन से निष्काशित” । अब संजय सीधे अपने गा‘‘व आया, अपने लोगों से मिला, रचना से मिला और निर्देश दिया ।

दूसरे दिन से हजारों की भीड पूरव पश्चिम मार्ग पर चली जा रही थी । सभी लोग चुप, सभी लोग खामोश, सभी लोग निरस्त्र, सभी लोग नंगे । सबके सब गा‘‘धी के पोशाक में ,मानो यहा‘‘ एक नहीं हजारों गा‘‘धी ने अवतार ले लिया हो । औरतें सफेद साडिया‘‘ पहनी थी । कई तख्तिया‘‘, कितने वैनर “हमारा मधेश अलग करो”, “हम इसी देश में रहना चाहते हैं”, “हम अपना हक नहीं छोड सकते” । लगता था हजारों मील की दाण्डी यात्रा के लिए एक वार फिर महात्मा गा‘‘धी निकल गये हों । सबके आगे संजय एवं उसके पीछे रचना थी । तय था कि मेची से लेकर महाकाली तक की यात्रा हम ऐसे ही करेंगे ।

“पर अगर बीच में ही तुम गिरफ्तार कर लिए गये तो ?”

DO NOT COPY

“तो क्या हुआ, यह जूलूस ऐसे ही निकलता रहेगा। हम कोई गलती नहीं कर रहे हैं। गिरफ्तार होने का डर होता तो क्या हम उतरते इस मैदान में ? इसी दिन का इन्तजार करने के लिए मैं तुमसे कह रहा था रचना। यह दिन अब आ गया है। अब ये लोग हमें एवं हमारे तराईवासियों को गुलाम बनाकर नहीं रख सकते। उनकी मुक्ति का समय आ गया है।”

पहले दिन का पडाव शान्तिपूर्वक गुजर गया। इधर तराईवासियों के जूलूस में कल का प्रोग्राम वनाया जा रहा था। आगे बढकर कहा“ ठहरा जाय, इसके वारे में सोचा जा रहा था। अगर हमारे उपर हमला बोला जाय तो हमें क्या करना चाहिए, यह सोचा जा रहा था। संजय के पकडे जाने पर दूसरी पंक्ति में से कौन आगे आयेगा, इसके बारे में चुनाव हो रहा था । उधर सरकार के खास लोगों में भी इसके दमन के वारे में आवश्यक बैठक किया जा रहा था। पहले दिन ही पत्रकारों के हजूम के हजूम आकर इस विद्रोह का समाचार सारी दुनिया“ को फैला चुके थे, फैला रहे थे। सारा तराई ही नहीं वल्कि उनके साथ सारा संसार भी जाग उठा था। वे लोग समझ गये थे कि नेपाल की सरकार जो संयुक्तराष्ट्र संघ में रंगभेद के खिलाफ बोलते थकती नहीं वही अपने देश में एक काले वर्ग की छाती के उपर बोथा सरकार की तरह की दमन और भेदभाव किस तरह करती है। सरकार को कुछ सूझ नहीं रहा था।

DO NOT COPY

“पर अब हमें वर्दास्त करने की कोई सीमा नहीं है । उस संजय के बच्चे को मार देना चाहिए अथवा गिरफ्तार कर लेना ही चाहिए ।” एक उग्र पहाडी ने कहा ।

“पर कैसे मार देना चाहिए ? तुम चीन सरकार के प्रभाव में आकर कह रहे हो । उधर अमेरिकी सरकार, भारत सरकार, यहा‘‘ तक कि रुस सरकार भी उन्हें मदद कर रही हैं ।

“रुस और भारत सरकार की वात छोडो पर ये अमेरिकी गद्दार, कल तक जो हमारी मदद करते आ रहे थे , वे अब क्यों मुकर गये है ?

“अरे वे क्यों नहीं मुकरेंगे ? उनको प्रजातन्त्र का एक तगडा आदमी संजय के रुप में मिल गया है जो चीन के कम्यूनिष्ट को रोकेगा । उन्हें अब हमलोगों से क्या मतलब ?”

“नहीं मतलव तो हमें भी उनसे अब कोई मतलव नहीं । हमें एक खडयन्त्र करना होगा । सरकार पुलिस के द्वारा नहीं, खडयन्त्रों के द्वारा संजय को परास्त करेगी ।

तय हुआ कि दो आदमियों को ठीक किया जाय जो संजय को मारने का वीडा उठायेंगे । एक मधेशी और दूसरा पहाडी । इसके लिए दोनों को मु‘‘ह मा‘‘गा पैसा दिया जाय । दोनों रिवाल्वर लेकर संजय को मारने के लिए चले । उधर दूसरे दिन की यात्रा शुरु हो गयी थी । सरकार कुछ भी करे हमारे जूलूस के लोग कुछ भी नहीं करेंगे । हम अपनी आत्मा की शक्तिः को लेकर यहा‘‘ आये हैं, शस्त्रों की शक्ति नहीं । पर सरकार ने सचमुच कुछ भी नहीं किया । कही कोई पुलिस गिरफ्तार वगैरह करने नहीं आयी जैसा कि रात

उनलोगों को पता चला था । आगे दो व्यक्ति एक पहाडी और एक मधेशी । दोनों ने जूलूस में शामिल होने की इच्छा जाहिर की । किसी को भी इस जूलूस में शामिल होने की मनाही नहीं थी परन्तु रचना ने उस पहाडी युवक को पहचान लिया ।

"इस आदमी को मैंने दरवार में देखा था संजय । इस आदमी पर मुझे संदेह हो रहा है ।"

क्यों ?"

यह आदमी अच्छा नहीं है । जब रोज मेरे साथ वलात्कार किया जाता तो यह आदमी हमारा पहरेदारी करता था और चलते समय हमारे साथ व्यंग्य करने से यह भी नहीं चुकता था ।"

"फिर यह यहा" कैसे ?"

"जब दरवार की पराजय हुई होगी तब यह आदमी अपना पैंतरा बदल दिया होगा । यह इनलोगों से मिल गया होगा । अब यह कोई खडयन्त्र करने आया हो सकता है । तुम सावधान रहना ।"

इसके पहले कि रचना इसकी तहकीकात करने के लिए किसी से कहे मदेशी युवक आकर संजय के चरणों में गिरकर फूट-फूट कर रोने लगा । वह क्षमा याचना करते हुए संजय के चरणों में अपना रिवाल्वर रख दिया । इतनी बडी भीड एवं जूलूस को देखकर उसका अंतस जाग गया था । उसने फूट-फूट कर रोते हुए अपना अपराध स्वीकार कर लिया । सभी लोग भौंचक होकर देख ही रहे थे कि आवाज आयी

ठा''य ! ठा''य !! ठा''य !!!

उस पहाडी ने इस समर्पण की घटना को देखकर खुद गोली दाग दिया था । गोली संजय के पैर में लगी और वह कराह उठा । रचना ने दौडकर उसे सम्भाल लिया । कई लोगों ने उस पहाडी को पकड लिया और वही पर मार डाला । संजय ने उसकी जान को वक्सा नहीं । सरकार यह सुनकर स्तब्ध रह गयी । गा‘‘धी का यह फौलोवर गा‘‘धी की तरह वक्सने वाला नहीं हैं । सभी मदेशियों ने मिलकर एक पहाडी को मार डाला था और सरकार देखती रह गयी थी । आखिर तय हुआ कि अब संजय को गिरफ्तार करके जेल में डाल ही देना चाहिए । और ऐसा ही हुआ । वह गिरफ्तार हो गया । वस क्या था, सारे तराई के लोग सडकों पर आ गये । सारी पुलिस, सारे सैनिक अपनी वर्वरता से हार गये । आखिर वह कितनों को मारे ? सारे के सारे लोग हथियार लेकर जहा‘‘ चाहती वही हमला बोल देते, मरते और मारते । सभी पुलिस थाने लूट लिए गये । सभी अफिस, सभी कार्यालय जला दिये गये । संचार व्यवस्था काट दी गयी । हार कर सरकार ने इस तवाही को रोकने के लिए जेल में संजय से अपील की । संजय ने इस अपील को यह कह कर ठुकरा दिया कि :-

“सरकार को यह अच्छी तरह पता है कि मैं हिंसा को राजनीति में अछूत नहीं मानता वशर्ते कि वह जनता के द्वारा हो और पवित्र उदेश्य के लिए हो । मैं उसी समय इसको रोकने की कोशिश करु‘‘गा जब कि यह एक साम्प्रदायिक लडाई का रुप ले अन्यथा इस अन्यायी सरकार के विरुद्ध कोई भी कदम अब वे लोग उठाते हैं तो

मैं अब इसका विरोध नहीं करु‘‘गा । अब ये लोग ऐसा करने में सक्षम हैं । सरकार यह कैसे सोच लेती है कि मुझे जेल में भी रखे और हमीं से इसको शान्त करने की भी अपील करें ? ऐसा भी तो हो सकता है कि अगर मुझे जेल से रिहा कर दिया जाय तो ये दंगे अपने आप ठंढे हो जा‘‘य ? लोग खुद यह खबर सुनकर शान्त हो जा‘‘य ?”

और सरकार को हारकर यही करना पडा । संजय के छोडने पर कम से कम दंगे कम होने के आसार समझ में आ रही थी । एक वार जेल में मार देने का विचार भी किया गया था परन्तु तुरत शुभचिन्तकों के द्वारा ऐसा नहीं करने का सुझाव दिया गया था । ऐसा करके फायदा के बजाय नुकसान अधिक है । अतः झख मार कर सरकार ने संजय को छोडने का निर्णय लिया था ।

परन्तु छोडने पर सरकार को पता चला कि यह छोडना भी दुश्वार हो गया । संजय ने आन्दोलन को और तेज करने की वात बोली । सारा तराई पहाड से कट गया । सरकार के पास इसके सिवा कोई चारा नहीं रह गया कि अब संजय को बुलाकर वातचीत किया जाय । पर मध्यस्थता किसकी होगी ?

“किसी की नहीं ।” संजय से पूछे जाने पर उसने कहा “हमें किसी की भी मध्यस्थता स्वीकार नहीं और हम अपनी मा‘‘ग से तनिक भी पीछे नहीं हटेंगे । अगर सरकार इस देश को चलाना चाहती हैं, अगर सरकार हमें भी इस देश का नागरिक मानती हैं तो केवल तराई को पहाड से अलग कर देना होगा । हम अपने भाग्य का निर्माण खुद

DO NOT COPY

करेंगे और इसी देश में रहेंगे अन्यथा अब हमें आपकी कोई जरुरत भी नहीं हैं । हम अपनी सरकार, अपनी सेना, अपनी पुलिस, अपना सब कुछ अलग वनाने जा रहे हैं ।

झख मारकर सरकार के इस देश की सार्वभौमिकता के लिए संजय की उन वातों को मान लेना पडा जो कहीं से भी अनुचित नहीं थी । तराई पहाड से अलग हो गया जहा“ पर तराई के लोग अपने भाग्य का निर्माण करेंगे । एक ही देश नेपाल के अन्दर चार राज्य हुए - दो पहाड में, एवं दो तराई में । काठमाण्डू और वीरगंज का रास्ता वीचों बीच पडता था । इस तरह पहाड की राजधानी गोरखा एवं डडेल धुरा तथा तराई की राजधानी जनकपुर एवं नेपालगंज वनाया गया ।। सम्पूर्ण देश की राजधानी काठमाण्डू को ही रखा गया । हर्ष बहादुर गुरुंग एवं परचम अधिकारी को पहाडों के मुख्यमंत्री एवं संजय तथा रघुवीर को तराई के मुख्य मंत्री वनाये गये । राष्ट्रपति करम चन्द ही था, पर अब उसकी गद्‌दी डवा“डोल हो गयी थी । उसके खुफिया लोगों ने संजय का पहला कदम पूरा होने के वाद उसके दूसरे कदम के वारे में वताने लगे थे । दूसरे कदम के बारे में सुनकर करम चन्द के होश उड गये । तो इतना आगे बढ गया है संजय ? कभी कभी वह संजय का अनुयायी हो जाने का भी विचार करता, पर उसकी गद्‌दी, उसका अहंकार, उसकी भोग लिप्सा उसे ऐसा नहीं करने दे रही थी । उसके अगल वगल के लोग अपने स्वार्थो के लिए उस पर छाये रहते थे । परन्तु करमचन्द

ने संजय की वात मानकर अपने देश को वचा लिया था। आने वाला इतिहास करम चन्द को माफ कर ही देगा।

चारों स्टेट-पहाड और तराई में फिर से सौहार्द का वातावरण वन गया क्योंकि संजय के मन में खोट थी ही नहीं। उसे तो पहाडी लोग एवं तराईयन लोग दोनों समान रुप से प्रिय थे। रचना उसका दाहिना हाथ थी। समय समय पर हर्ष गुरुंग परचम, रघुवीर एवं संजय मिलते और वे करम चन्द से मिलकर भी राष्ट्र की समस्याओं को दूर करते। धीरे धीरे संजय पहाड के लोगों में भी प्रिय होने लगा। हर्ष गुरुंग, संजय की तुलना में छोटा पडता था। ये दोनों मिलकर करम चन्द के उपर पूर्ण प्रजातन्त्र देने के लिए दवाव डालने लगे। सिर्फ चुनाव में ही छूट दे देने से काम नहीं चलेगा। प्रेस की आजादी एवं सम्पूर्ण मानवाधिकार के घोषणा पत्र में उल्लेखित सभी अधिकारों को लागू करना पडेगा। करमचन्द सब सुनता एवं इन लोगों को आश्वासन देता था, पर खुद मजबूर था। उत्तर की आ“खें उसे अपने इशारे पर नचा रही थी। तराई के अन्न एवं पहाडों के फल अब चारों ओर समान रुप से वितरण हो रहे थे। सभी लोग खुश हो रहे थे। पानी के द्वारा चालित विजली को पाकर यह एक वहुत वडा विजली मार्केट भी वनने जा रहा था। इसकी प्रगति को देखकर अब उत्तरवाले खौफ खाने लगे। क्या पता, यह दूसरा वियतनाम हो जाय तो भी चना चववा देगा।

अब जाकर सभी चीज की वनावट, सभी चीज की संरचना ठीक हुई थी। तराई के लोगों से देश में तराई रेजीमेन्ट और

गोरखाओं से गोरखा रेजिमेन्ट वना था । ये विभिन्न प्रकार के रणभीम गुल्म तो रणशेर गुल्म कुछ भी नहीं, वस तराई में तराई रेजिमेन्ट और पहाड पर गोरखा रेजीमेन्ट । तराई के सारे कार्य तराईवालों के द्वारा तराई के हक में एवं पहाड के सारे क्रिया कलाप पहाड वालों के हक में और दोनों को मिलाकर पूरे देश के हक में काम हो रहा था । वितरण एवं आय की प्रणाली का सामंजस्य पूरी तरह ठीक हो गया था ।

“रचना, तुम क्या सोच रही हो ?” एक वगिया में घूमते हुए संजय ने रचना से पूछा । वगिया में संजय की पहली पत्नी एवं उसके सभी बच्चे भी मौजूद थे । अतीत की यादों में खो गयी रचना और संजय अकेले में एक वाग के एक कोने में निकल गये थे । संजय का वही पोशाक, अब भी वही लाठी, वही धोती, नंगा, अब तो यह उसके जीवन का अंग वन गया था । पतसिया वच्चों के साथ खेल रही थी ।

“मैं, मैं यही सोच रही हू“ कि अब तुम्हारा दूसरा कदम कब उठेगा ? इस देश की संरचना जो तुमने किया वह सारी दुनिया“ में एक मिशाल के रुप में याद किया जायेगा । पर तुम्हारा दूसरा कदम ... ।”

“नहीं रचना, इस देश की इस संरचना में तुम्हारा भी उतना ही हाथ है । तुम न होती तो मैं यह काम कर सकने में असमर्थ होता । सच पूछो तो रचना मैंने तुम्हारी प्रेरणा से यह काम करता रहा हू“ । यह देखकर कि पहाड की औरत होते हुए भी तुमने मेरा कितना साथ दिया है, मैं आत्मविभोर हो जाता हू“, सच्चाई का साथ देना कोई

तुमसे सीखे । तुम मेरी प्रेरणा, तुम मेरी सहचर हो । तुम मेरी अद्धांगनी , तुम मेरा साथी तुम मेरा दोस्त, तुम मेरा सब कुछ हो जिसके वल पर मेरा यह उदेश्य सफल हुआ है । अब दूसरे कदम के वारे में हमने जो सोचा था , उसकी आवश्यकता नहीं होगी ।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि हमने दूसरे कदम के रुप में जो करमचन्द के खिलाफ में उठाने की वात की थी, वह तब, जब वह नहीं मानता । लेकिन जिस देश की जनता जाग जाती है, जिस देश की जनता एकता के सूत्र में ब"ध जाती है वहा" हमारे दूसरे कदम की जरुरत नहीं होती । अब जब कि इस देश के सारे पहाडी एवं तराइयन लोग मिलकर एकता के सुत्र में ब"ध गये हैं, करमचन्द पस्त हो गया है । हमारी सलाह के अनुसार अब वह जल्दी संसदीय व्यवस्था लागू कर पूर्ण प्रजातन्त्र यो ही देने जा रहा है । अब आगामी चुनाव में करमचन्द चाहे तो खुद प्रधान मंत्री का उम्मेदवार हो सकता है । जनता उसे स्वीकार कर लेगी अन्यथा उसको खुद जनता गद्दी से उतारेगी । अब वह इस चीज को पूरी तरह समझ चुका है । परन्तु उसके साथ के कुछ पुराने दरवारी नहीं मान रहे हैं । परन्तु वे खुकुरी दल की तरह कुछ भी नहीं कर सकेंगे । यह समय अब बहुत आगे निकल चुका है । हमारे पुराने साथी होने के कारण करमचन्द ने इस वात को समझ लिया है और अब वह हमारे साथ आने के लिए तैयार है ।"

DO NOT COPY

“तो क्या अब मैं समझू कि आगामी चुनाव के वाद इस देश का मालिक तुम होगे ?”

“नहीं रचना, ऐसा मत कहो । हम देश के मालिक नहीं हैं, हम देश के सेवक हैं ? अब हम यह मालिक और सेवक का खेल भी छोडने जा रहे हैं ।”

“क्या मतलब ?”

“मतलव यह कि अब मैं राजनीति से दूर हो जाउ‘‘गा । जहा‘‘ की जनता जाग गयी है वहा‘‘ पर हमारी कोई जरुरत नहीं । जनता को जगा देने का काम मेरा था वह मैंने कर दिया । मेरा उदेश्य सफल हुआ । सत्ता की भूख न मुझे पहले कभी थी और न अब है और न ऐसे भूख वाले लोगों से जनता जागती है । अब मेरा कोई काम नहीं है । मैं अब अध्यात्म साधाना करु‘‘गा । मेरे सारे देश के बच्चे अब अपने पथ पर अग्रसर होते रहे । मैं जब तक इस देश में रहू‘‘गा, तवतक जरुरत पडने पर उनके पास चला आउ‘‘गा । जहा‘‘ मैं यह देखू‘‘गा कि हमारे लोग अपने पथ से भटक रहे हैं, मैं तुरत उसका रास्ता रोकने के लिए हाजिर हो जाउ‘‘गा ।”

“तो तुम्हारा मतलव यह है कि अब तुम सन्यासी वनोगे ?”

“हा‘‘ रचना, सन्यासी वनू‘‘गा और इस सन्यास साधना में भी तुम मेरे साथ रहेगी । अब हमारे बच्चे बडे हो चुके हैं, आगामी चुनाव तक वे और परिपक्व हो जायेंगे । फिर हमारा काम ही क्या है ? हमें वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम को ग्रहण करना ही चाहिए ।”

"पर आजकल जबकि सभी जंगलों का सफाया हो गया है, साहव किस जंगल की ओर कूच करेंगे ? रचना ने थोडा मजाक किया जबकि वह उसके निर्णय एवं इस महानता से भीतर ही भीतर गदगद् हो रही थी ।

"कहीं नहीं , किसी भी जंगल में हम नहीं जायेंगे रचना । हम यही रहेंगे और इस दुनिया की खोज खबर लेंगे । और तो और अब मैं इस अवधि में अपने वृहत्र कार्य को पूरा करेंगे । हम यहा‘‘ से उसी जगह चले जायेंगे , जहा सबसे पहले हमारा प्यार जन्मा था । वहीं से हम अपने वृहत्तर कार्य का संदेश देंगे ।"

"मैं कुछ समझी नहीं ?"

"तुम समझोगी भी नहीं क्योंकि अपने इस महत्तम विचार को तुमसे कभी नहीं वताया क्योंकि अभी तक आदमी इतना संकीर्ण है कि हमारी इस वात को देशभक्ति की झूठी एवं गलत हवाओं से वर्दास्त नहीं करते ।"

"मैं कुछ समझी नहीं, खुलासा करो संजय ।"

"लेकिन अब तुम्हें समझना होगा । मैं अपनी अध्यात्म साधना करने के लिए वही पर जाउ‘‘गा जहा‘‘ पर भगवान बुद्ध ने वोधिवृक्ष सें अपना पहला ज्ञान प्राप्त किया था । हमारा प्रेम वही से शुरु हुआ था रचना । वही से भगवान बुद्ध का ज्ञान व‘‘टना शुरु हुआ और धीरे धीरे भारत , श्रीलंका , चीन , जापान,, केरिया, वियतनाम आदि तमाम देशों को एक सूत्र में बा‘‘ध दिया । समय का तकाजा अब आ गया है कि एकता का यह संदेश फिर से प्रवाहित किया जाय । पर,

DO NOT COPY

धार्मिक रुप से नहीं , राजनैतिक रुप से । इन सारे देशों की सीमायें अब मिटा दी जाय“ , अब इसका समय आ गया है । ये सभी मिलकर अब एक देश हो जा“य, एक व्यवस्था के नीचे आयें, इसका समय आ गया है । यह संकीर्ण देशभक्ति एवं एक दुसरे से एक दूसरे का खतरा अब मिटा दिया जाय, इसका समय आ गया है । यही भगवान बुद्ध का आज का संदेश है । यही मेरा वृहतर और महत्तम अधिकार है रचना जिसे मैंने आज तक तुमसे भी नहीं कहा था । अब हम इसी के लिए काम करेंगे । वोलो तुम मेरा साथ दोगी ?”

रचना एक टक संजय को निहारती हुई दंग हुई जा रही थी । इतने वडे महान व्यक्ति का, इतने महत्तम विचार वाले पुरुष का सानिध्य उसने पाया है, यह सोचकर वह निहाल हुई जा रही थी । वह अचम्भित होकर इस महाविचारक को क्या जवाव दे यही सोच रही थी । फिर वह धीरे से बैठी और आ“खों में आ“सू भरे हुए उसके चरणों में लोट गयी ।

स्रजय ने उसे उपर उठाया और अपनी वाहों का सहारा वनाये हुए चल दिया ।

चुनाव आया । संजय ने उसमें भाग नहीं लिया । करमचन्द ने वहीं किया जो संजय ने कहा । लोगों ने करम चन्द को ही चुना । अब सब कुछ वदल चुका था । देश, उसमें रहने वाले लोग एवं करम चन्द सवका हृदय परिवर्तन हो चुका था । देवत्व के इस शीखर पर करमचन्द को स्वीकार करना क्या मायने रखता है ? वह तो एक भटका हुआ राही था जो शाम को घर आ चुका था ।

जिस समय पूर्ण प्रजातन्त्र के प्रतिनीधि के रुप में करमचन्द शपथ ले रहा था संजय ने अपना घर छोड दिया। उस फकीर के पीछे पीछे रचना चली जा रही थी । आज वुद्ध अकेला नहीं था । उसके साथ यशोधरा भी जा रही थी और राम की तरह उसे पहु‘‘चाने वाले अयोध्यावासी भी । संजय ने सीमा पर जाकर सभी लोगों को वापस लौटा दिया ।

दूसरे दिन उस वोधिवृक्ष के पास लोगों ने देखा, एक छोटा सा आश्रम वन गया है जहा‘‘ पर एक जोडा मनुष्य अपनी साधना में रत थे अपने ध्यान में मग्न थे ।

....

२०४५....६.....२२

१९८८ वा २०४५ आषाढ से प्रारम्भ कर असोज तक चार महिने लगे ।

** इति ** संरचना

Copyright @ 2018 by Dr Shiva Shanker Yadava

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or used in any manner

without permission of the copyright owner except for the use of quotations in a book review.